

हिंदू निर्वचन "स्नेहसूति"

pdf e-book



IMAGINED WITH AI



By
स्नेहराज

विश्व शांति, विश्व एकता और विश्व रक्षा के लिए

स्नेहराज फाउंडेशन

आयोजित करता है

सनातन धर्म परिचय यज्ञम्

(हैन्दव निर्वचन यात्रा)

(इसके आग के रूप में, पुस्तक-1 (संस्करण-1.86.1) विश्व मानविकता को समर्पित है)

स्नेहसमृति

PDF e-Book

(हे हिन्दू जनपद , सृष्टि में सबसे महान्, ये लीजिये आपका पहचान)

सनातन धर्म का अध्ययन (बुनियादी)

(“हिंदू निर्वचन ”)

विषय वस्तु संहिताकरण

दौ.एस.स्नेहराज

Pdf e-Book-1.86.1

Rs.143.00

विषय-सूची

पेज 3 - विषय-सूची

पेज 8 - परिचय

भाग-1

प्रश्न-1) सनातन या हिंदू धर्म को "मानव को परिपूर्ण बनाने वाला धर्म" क्यों कहा जाता है?

प्रश्न-2) मानव जन्म का अंतिम लक्ष्य स्वर्ग या मोक्ष क्या है?

प्रश्न-3) नास्तिकता, द्वैतवाद, विशिष्टाद्वैतवाद, अद्वैतवाद इनमें से हिंदुओं के ईश्वर की अवधारणा क्या है?

प्रश्न-4) देव मनुष्य और तेंतीस करोड़ देवता...आइए जानते हैं..

प्रश्न-5) क्या हिंदू धर्म एक आस्था है?

प्रश्न-6) क्या हिंदू धर्म एक मत है?

प्रश्न-7) क्या हिंदू धर्म एक भौगोलिक पहचान नहीं है?

प्रश्न-8) हिंदू की परिभाषा क्या है?

प्रश्न-9) "भारत की आध्यात्मिक विरासत" क्या है?

प्रश्न-10 भारतीय आध्यात्मिक विरासत या हिंदू धर्म के सिद्धांत क्या हैं?

प्रश्न-11) सनातन धर्म या हिंदू धर्म की परिभाषा क्या है? हिंदू धर्म को अन्य किन नामों से जाना जाता है?

प्रश्न-12) सनातन या हिंदुओं की मूल ग्रन्थ कौन सी हैं?

प्रश्न-13) कितने वेद हैं? आइए हिंदू दर्शन की मूल बातें जानें:

प्रश्न-14) हिंदू इतिहास पर एक नज़र

प्रश्न-15) हिंदू धर्म को विश्व दर्शन बनाने की मांग का क्या कारण है?

प्रश्न-16) मैंने सुना है कि हिंदू समाज होना चाहिए। क्या यहां हिंदू समाज नहीं है?

भाग-2

प्रश्न-17) माथे पर धारण करने वाले चन्दन, भस्म , तिलक .. आइए देखें इसके तरीके और अर्थ?

- प्रश्न-18) भक्तगण माथे पर कर्पूर ज्योति क्यों लगाते हैं?
- प्रश्न-19) हिंदुओं द्वारा एक-दूसरे का अभिवादन करते समय नमस्कार, नमस्ते और प्रणाम कहने का क्या अर्थ है?
- प्रश्न-20) पूजा के दौरान नारियल फोड़े जाते हैं। इसकी अवधारणा क्या है?
- प्रश्न-21) हिंदू कमरबंध (कटि-सूत्र) क्यों बांधते हैं?
- प्रश्न-22) हिंदू अपने नाम में श्री, श्रीमान और श्रीमती क्यों जोड़ते हैं?
- प्रश्न-23) क्या मूर्तिपूजा परब्रह्म पूजा के समान है?
- प्रश्न-24) हिंदुओं की साधना पद्धतियाँ क्या हैं?
- प्रश्न-25) हिंदुओं की पूजा का मूल और पूर्ण क्रम क्या है?
- प्रश्न-26) आप मंदिरों में होने वाले अनुष्ठानों, तीर्थस्थलों पर पूजा, नाम जप और होम को किस तरह देखते हैं?
- प्रश्न-27) क्या आपने सुना है कि पूजा एक गलत प्रथा है?
- प्रश्न-28) हिंदू सुबह के एक खास क्षण को ब्रह्म मुहूर्त क्यों कहते हैं?
- प्रश्न-29) कुछ मंदिरों की दीवारों पर कामुकता की छवि क्यों देखी जा सकती है?
- प्रश्न-30) हिंदू मंदिर की परिक्रमा क्यों करते हैं?
- प्रश्न-31) हिंदुओं का सामाजिक केंद्र कौन सा है? इसके क्या कार्य हैं?
- प्रश्न-32) मंदिर और शरीर के बीच क्या संबंध है?
- प्रश्न-33) आपने क्यों सुना है कि 'ओम' केवल हिंदुओं के लिए ही नहीं बल्कि पूरी मानवता के लिए है?
- प्रश्न-34) क्या ब्रह्मांड में औंकार ध्वनि मौजूद है?
- प्रश्न-35) औंकार की उत्पत्ति कैसे हुई?
- प्रश्न-36) औंकार को ईश्वर का प्रवेशद्वार कहने का क्या कारण है?
- प्रश्न-37) ॐ को ब्रह्मांड का बीज कहने का क्या कारण है?
- प्रश्न-38) मंत्रों में सबसे पहले औंकार का प्रयोग क्यों किया जाता है?

- प्रश्न-39) आँ या ओ३म् को संस्कृत में “ॐ” लिखा जाता है, जो सही है?
- प्रश्न-40) शिवलिंग संकल्प क्या है? यह कैसे विकसित हुआ?
- प्रश्न-41) क्या शिवलिंग का स्वरूप भौतिक रूप से सार्वभौमिक ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करता है?
- प्रश्न-42) ऋषिगण शिव मंदिरों में शिवलिंग प्रतिष्ठा को प्रोत्साहित क्यों करते हैं?
- प्रश्न-43) त्रिमूर्ति अवधारणा का वैज्ञानिक विश्लेषण:
- प्रश्न-44) षोडस संस्कृतियाँ (संस्कार):
- प्रश्न-45) चार पुरुषार्थ, चार आश्रम, चार वर्णः
- प्रश्न-46) क्या हिंदू धर्म या सनातन धर्म में जाति व्यवस्था है? जाति व्यवस्था किसकी देन है?
- प्रश्न-47) पाँच महायज्ञ कौन-कौन से हैं?
- प्रश्न-48) प्रथम पूजा यानी हर शुरुआत में भगवान गणेश की पूजा क्यों की जाती है?
- प्रश्न-49) प्रस्थान त्रय क्या है?
- प्रश्न-50) इष्टदेवता पूजा अनुष्ठान चरण दर चरणः
- प्रश्न-51) ध्यान का अभ्यास कैसे करें...?
- प्रश्न-52) मंत्र दीक्षा क्या है?
- प्रश्न-53) हिंदू महाकाव्यों में हम अलौकिक प्राणियों को देखते हैं, क्या ये सभी फैटम, स्पाइडरमैन, हैरी पॉटर आदि जैसी काल्पनिक कहानियाँ हैं?
- प्रश्न-54) यह सृष्टि कैसे बनी?
- प्रश्न-55) आइए दशा अवतार के बारे में जानें?
- प्रश्न-56) प्रार्थना श्लोक जो हर हिंदू को जानना चाहिए:
- प्रश्न-57) आगम, निगम और तंत्र का ज्ञानः
- प्रश्न-58) तंत्र में पंच मकारों का रहस्य क्या है?
- प्रश्न-59) ग्रहण के दौरान मंदिर क्यों बंद रहते हैं?
- प्रश्न-60) पैर छूकर नमस्कार किसे कहा जाता है?

प्रश्न-61) क्या संकट के समय साधक को भगवान्/गुरु से सहायता मिल सकती है?

प्रश्न-62) हिंदू धर्म अध्ययन की योजना कैसी है?

प्रश्न-63) ब्रह्मचर्य क्या है?

प्रश्न-64) देवी मंदिरों में नींबू के दीपक का रहस्य क्या है?

प्रश्न-65) क्या आप हमें रक्षा बंधन उत्सव के बारे में बता सकते हैं?

प्रश्न-66) अवनि अविटम (श्रावण पूर्णिमा) क्या है?

प्रश्न-67) ओणम उत्सव की चरित्र क्या है?

प्रश्न-68) ओणम का रक्षा बंधन से क्या संबंध है?

प्रश्न-69) समाट महाबली का मध्य अमेरिका में मैक्सिको माया सभ्यता से क्या संबंध है?

प्रश्न-70) जब समाट महाबली ने राज्य किया था, तब केरल नहीं था, फिर समाट महाबली का आगमन केरल का उत्सव कैसे बन गया?

प्रश्न-71) महान व्यक्तित्व (वी.आई.पी.), क्या उनका प्रभाव समाज को आकार देता है?

प्रश्न-72) नेति-नेति सिद्धांत क्या है?

प्रश्न-73) क्या भूमि देवी वायरल बुखार से पीड़ित हैं? क्या इसका कोई इलाज है? डॉक्टर कौन है?

प्रश्न-74) शंकराचार्य ने शास्त्रार्थ में बौद्ध धर्म को कैसे हराया?

प्रश्न-75) होली कैसे मनाई जानी चाहिए?

प्रश्न-76) हिंदू दुनिया के लोगों से क्या अपेक्षा करते हैं?

प्रश्न-77) क्रिया योग क्या है?

प्रश्न-78) हिंदुओं के दुश्मन कौन हैं?

प्रश्न-79) प्रकृति द्वारा हिंदुओं पर क्या जिम्मेदारी डाली गई है?

प्रश्न-80) आदिपराशक्ति को माता नारायण, देवी नारायण, लक्ष्मी नारायण, भद्रे नारायण क्यों कहा जाता है?

प्रश्न-81) क्या आप हमें वेदों की उत्पत्ति के बारे में बता सकते हैं?

प्रश्न-82) क्या हिंदुओं के लिए मांस खाना वर्जित है? क्या हिंदुओं के लिए विदेशी कपड़े वर्जित हैं?

प्रश्न-83) हिंदू धर्मशास्त्र के अनुसार सात माताएँ कौन हैं?

प्रश्न-84) भगवान् कृष्ण का विराट रूप (विराट रूप) क्या दर्शाता है?

प्रश्न-85) 'समाधि में बैठना' और 'समाधि में रखा जाना' किसे कहते हैं?

प्रश्न-86) आने वाला युग परिवर्तन, युग धर्म, स्वर्ण युग क्या है?

प्रश्न-87) **जारी रहेगा.....**

(यह प्रकाशन (पुस्तक-1, संस्करण 1.86.1) निरंतर संशोधनों और अद्यतनों के अधीन है। कृपया सदस्य

लॉगिन के माध्यम से हमारी वेबसाइट के माध्यम से नवीनतम संस्करण तक पहुंचें)

परिचय

मानवता आज अपने सबसे बुरे दौर से गुज़र रही है। सबसे पहले, मानव आवास खुद ही खतरे में है। अगले 10 सालों में, ऐसा लगता है कि माँ पृथ्वी को हमें सहारा देने की क्षमता नहीं रहेगी, एसिड रेन, रेडिएशन और रासायनिक उत्सर्जन, क्लोरीन, फ्लोरीन और कार्बन उत्सर्जन, और प्रकृति के दुर्लभ संसाधन खतरनाक रूप से कम होते जा रहे हैं। जलवायु में भयानक परिवर्तन हो रहे हैं। सूर्य से निकलने वाली गर्म लहरों और गर्म गैसों ने जलवायु को बाधित कर दिया है। ग्लोबल वार्मिंग और ग्रीनहाउस गैसों से होने वाले परिवर्तनों में धुवीय बर्फ की पिघलना, समुद्र का जल स्तर बढ़ना, तूफान, भूकंप, वायु और जल प्रदूषण, ओजोन परत का क्षरण और भूमि क्षरण शामिल हैं। पारिस्थितिक जानलेवा अव्यवहारिक होता जा रहा है।

दूसरा, मानव समाज का पतन हो रहा है। हम ऐसे युग में जी रहे हैं, जहाँ सत्य नहीं कहा जा सकता। सच कहें तो, सोचने पर भी जीवन को खतरे में डालने वाली परिस्थितियाँ हैं। हिंसा, अन्याय, झूठ, भ्रष्टाचार, भीख माँगना, हिंसा, शोषण, बलात्कार, कब्जा, स्वार्थ, असंतोष, बीमारी, भूख, आत्महत्या, शरणार्थी जीवन, भयावह मूल्य वृद्धि, बिगड़ती सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन शैली, राजनीतिक गुलामी, सरकारी अधिकारियों का अहंकार, बेहिसाब कराधान, उग्रवाद, राजद्रोह, काला धन आदि बुरी शक्तियों के झांडे तले राज करते हैं। मनुष्य में अच्छाई खत्म हो रही है। सभी भोग के लिए वैसी आसुरी का यह विचार मजबूत हो रहा है। दिल के रिश्ते टूट रहे हैं। हमें मानवता को बचाने की जरूरत है, जो विलुप्त होने का सामना कर रही है। उसके लिए, सत्य, प्रेम, शांति और समृद्धि की एक ऐसी व्यवस्था स्थापित करनी होगी जो वर्तमान व्यवस्था को बदल देए। उसके लिए, पहली बार, मनुष्य को पूरी तरह से मानव बनना होगा। "पूर्ण मानव" क्या है?

एककोशिकीय जीव के रूप में जीवन ने जल में अपनी जीवन यात्रा शुरू की, जल में रहने वाले जीवों, पौधों, उभयचरों और बहुकोशिकीय रूपों में विकसित होकर आज हम जिस मानव रूप को देखते हैं, वह पशु रूपों में प्रवेश करने के बाद, आज, यद्यपि जीवन ने मानव रूप धारण कर लिया है, यह पशु-

मनुष्य ही बना हुआ है। क्या हमें इस पशु अवस्था से ऊपर नहीं उठना चाहिए? मानवता की ओर!, क्या हमें मनुष्य नहीं होना चाहिए, क्या हमें मनुष्यों की तरह नहीं रहना चाहिए? इसके लिए हमें मानवता को जानना होगा, यह पशुता से किस प्रकार भिन्न है वो भी जानना होगा, हमें मानवता को जानना होगा।

अगर आप यह जानना चाहते हैं, तो आपको हिंदू धर्म को जानना होगा, यही एकमात्र रास्ता है। इस धरती पर केवल हिंदू धर्म ही मानव जाति को पशु अवस्था से मानवता की ओर ऊपर उठाता है। इसलिए हमें हिंदू धर्म को समझकर मानवता की ओर बढ़ना होगा। इस प्रकार, वास्तविक मनुष्य के रूप में, हमें इस धरती पर सत्य, भाईचारे, एकता, अखंडता, स्वतंत्रता, प्रेम, समृद्धि, शांति और सद्भाव की मानवता की धर्मधर्वजा को गरुड़ पथ पर लहराना होगा।

जहाँ सर्वत्र आध्यात्मिक सौन्दर्य भरा हो, किसी भी चीज का भय न हो, जहाँ सभी लोगों का उद्देश्य सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक तथा ईश्वर स्वरूप बनना हो। झूठ, छल, गरीबी, भूख, रोग, लाचारी से मुक्त, सभी प्रकार के भय से मुक्त, सर्वत्र भोजन, स्वास्थ्य, फल, फूल, शुद्ध जल, शुद्ध वायु, निर्भरता, प्रचुर मात्रा में उपलब्ध, प्रेम, विश्वास, शील, सत्य, समानता, दया से परिपूर्ण, प्रकृति हो। प्रकृति के अर्जित संसाधनों का सदैव मानव समाज के विकास के लिए उपयोग करना तथा यह विश्वास करना कि सभी का उत्थान ही व्यक्ति का उत्थान है। जहाँ हमें उत्तम मानवों से भरा हुआ, प्रेममय-विश्वासयोग्य दिव्य प्रकाश से भरा हुआ, आनंद से भरा हुआ, सर्वसुखद तथा समृद्ध विकास मिले, इन सबके साथ हमें सीमाहीन महान सामाज्य या सच्चा स्वर्ण युग स्थापित करना है।

इस पुस्तक की सामग्री को विभिन्न स्रोतों से संकलित किया गया है, जिसमें श्रद्धेय ऋषि-मुनियों और ऑनलाइन संसाधन शामिल हैं। सावधानीपूर्वक सत्यापन और समीक्षा के बाद, मैं इसे आपके समक्ष प्रतिक्रिया, आलोचना और परिशोधन के लिए प्रस्तुत करता हूँ। कठोर पुनर्परीक्षण के बाद, यह पांडुलिपि अनुमोदन के लिए सनातन विश्व आचार्य सभा को प्रस्तुत की जाएगी।

सनातन विश्व आचार्य सभा से सर्वसम्मति से अनुमोदन मिलने पर, इस संहिताकरण को औपचारिक रूप से पुनर्जीवित सनातन धर्म के लिए निर्णायक नैतिक संदर्भ मार्गदर्शिका के रूप में मान्यता दी जाएगी, जो उभरती हुई नई विश्व व्यवस्था के साथ संरेखित होगी।

ईश्वर सभी व्यक्तियों को सत्य और न्याय की खोज में मार्गदर्शन करें। अच्छाई फले-फूले, और प्रत्येक व्यक्ति के प्रेमपूर्ण प्रयासों से सत्य की विजय हो।
चलो शुरू करें....

कुथुपरम्बा (केरल)

वी.एस.स्नेहराज.

श्वेतवराह कल्पम, वैवस्वत मन्वंतरम् -7/14,

28/71 कलियुग-वर्ष 5125,

कुंबम 28 (मलयालम महीना)

(2024, 12 मार्च)

स्नेहस्मृति**हिंदू धर्म का अध्ययन (बुनियादी)**

प्रश्न-1) सनातन या हिंदू धर्म को "मानव को परिपूर्ण बनाने वाला धर्म" क्यों कहा जाता है?

उत्तर :- अच्छा सवाल है, जानवर भी बोलते हैं, संवाद करते हैं, काम करते हैं, खाते हैं, आराम करते हैं, मलत्याग करते हैं, खेलते हैं, संतानोत्पत्ति करते हैं, ऐसे जीवन जीने के बाद एक दिन उनकी मृत्यु हो जाती है। जो मनुष्य सोचता है कि यह क्रिया ही जीवन है और केवल भौतिक वस्तुओं में लिप्त रहता है, खाता है, पीता है, खेलता है, लेटता है, शौच करता है और केवल पशु जैसी मृत्यु मरता है, उसे मानव पशु कहते हैं। इसके परे जब कोई सोचता है, मैं कौन हूँ? जब यह विचार जागृत होता है, उसी क्षण, मानव पशु पूर्ण रूप से मानव बन जाता है। मैं यह शरीर नहीं हूँ, क्योंकि जब मृत्यु होती है, तो शरीर अभी भी यहाँ होता है, लेकिन इसे मेरी लाश कहा जाता है। तो वह "मैं" कहाँ है जो इस लाश में था ? वह शरीर से बाहर कहाँ चला गया? वह कहाँ से आया? वह इस शरीर में क्यों और कैसे आया? वह अब इस शरीर को क्यों छोड़ गया? जिस क्षण ये विचार तरंगें, जो जानवरों के लिए अन्य हैं, मस्तिष्क में उठती हैं, उसी क्षण मानव पशु विकसित होते हैं और पूरी तरह से मानव बन जाते हैं। यदि आप स्वर्ग के भौतिक सुखों के लक्ष्य के साथ जीते हैं, तो आप मनुष्य नहीं बनेंगे। पशु की शारीरिक चेतना से मानवता की आत्मा चेतना तक के उत्थान के साथ, हिंदू धर्म सत्य के साधकों को पशुता से पूर्ण मानवता, आध्यात्मिकता और वहाँ से देवत्व तक बढ़ाता है।

अपने भीतर के पशु के विपरीत - वैज्ञानिक जांच के हिस्से के रूप में, मैं कौन हूँ ? मेरी स्थायी स्थिति क्या है ? मैं इसे देखना चाहता हूँ, मैं इसे महसूस करना चाहता हूँ, वह क्षण जब सत्य की खोज करने की इच्छा प्रबल हो जाती है। . . वह क्षण. . . वे पूरी तरह से मनुष्य बन जाते हैं। यहीं से मानव जन्म का उद्देश्य शुरू होता है। यहीं से शिक्षा शुरू होती है। सनातन हिंदू धर्म शास्त्र उस मनुष्य को शिक्षा देकर पशु अवस्था से जगाता है और उसे अपनी स्थिति से परिचित कराने के लिए सभी विज्ञानों का विकास करता है। इसीलिए हिंदू धर्म को वह धर्म कहा जाता है जो मनुष्य को पूर्ण मनुष्य बनाता है।

(पी.एम. श्रीनिवासन मेमोरियल, स्नेहराज फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित)

प्रश्न-2) मानव जन्म का अंतिम लक्ष्य स्वर्ग या मोक्ष क्या है?

उत्तर "जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी" यह वास्तव में श्री रामचंद्रन ने श्रीलंका में कहा था। माता और मातृभूमि स्वर्ग से बेहतर हैं। यदि स्वर्ग से बेहतर कुछ है, तो स्वर्ग कभी अंतिम लक्ष्य नहीं है? स्वर्ग क्या है? स्वर्ग (भ.गी.2/43-44 और 9/20-21) एक दिव्य दुनिया है। वहाँ भी जन्म और मृत्यु है। जो लोग स्वर्ग जाने का इरादा रखते हैं, उनका लक्ष्य क्या है? यह सिर्फ मौज-मस्ती है। वहाँ अप्सराएँ हैं, गंधर्व हैं, संगीत है, नृत्य है, सुरापानम है... यह सिर्फ एक पंच सितारा कामालय है। पैसे के बजाय, आपको वहाँ पुण्य लेना चाहिए। यदि आप अपना पुण्य समाप्त करते हैं, तो आपको वहाँ से निकाल दिया जाएगा। फिर से आपको उसी धरती पर आना होगा और बार-बार वही दुख सहना होगा।

जीवन की आंतरिक धड़कन हमेशा स्वयं को सभी गुलामी, निर्भरता, सभी बंधनों, शोषणों और पापों से मुक्त करने, यह जानने की है कि हम क्या हैं, पूर्णता प्राप्त करने, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापी बनने, अमरता प्राप्त करने, शाश्वत शांति प्राप्त करने की है।

इसका मार्ग पूर्णता प्राप्त करना है। मैं कौन हूँ की खोज में प्रयास करते हुए? आत्म-साक्षात्कार के लिए साधना करो। इस प्रकार, वह जो मूल रूप से था, वही बनकर और उसमें विलीन होकर, वह उसे पूर्ण करता है। इसलिए वह मूल आत्मा बन जाओ, उसमें विलीन हो जाओ... यही मोक्ष है।

अब आप सोचिए कि क्या स्वर्ग या मोक्ष, कौन मानव जीवन का लक्ष्य होना चाहिए। जबकि स्वर्ग का लक्ष्य व्यक्ति को मात्र भोगी बनाता है, मोक्ष का लक्ष्य आपको हजारों स्वर्ग बनाने में सक्षम भगवान बनाता है। इसलिए यदि मोक्ष आपका लक्ष्य है, तो हिंदू धर्म को जानें, इसे इसके पूर्ण रूप में समझें, एक पूर्ण मानव बनें।

(पी.एम. श्रीनिवासन मेमोरियल, स्नेहराज फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित)

प्रश्न-3) नास्तिकता, द्वैतवाद, विशिष्टाद्वैतवाद, अद्वैतवाद इनमें से हिंदुओं के ईश्वर की अवधारणा क्या है?

उत्तर: निम्नलिखित सिद्धांत जिनका उल्लेख किया जा रहा है, वे मानव की ईश्वर की अवधारणा में तब तक परिवर्तन हैं जब तक कि वे पशु मानव स्थिति से पूर्णता तक नहीं पहुंच जाते।

1. नास्तिकता (चार्वाक सिद्धांत),
2. द्वैत,
3. विशिष्टाद्वैतम्
4. फिर "अद्वैत" दर्शन है, जो पूर्ण है और ईश्वर की हिंदू अवधारणा है।

सबसे पहले आइये **नास्तिकता** (चार्वाक दर्शन) पर नजर डालते हैं। (भ.गी.16/4-20) यह दर्शन है कि इस संसार को चलाने वाला कोई ईश्वर नहीं है, तथा इस संसार का कोई आधार नहीं है, तथा यह केवल एक प्रक्रिया है जो केवल कामवासना के कारण आगे बढ़ रही है।

इस प्रकृति पर एक नज़र डालें। यह कितने व्यवस्थित ढंग से बनाई, स्थित और संचालित की जाती है। कीड़े-मकौड़े कीड़ों को जन्म देते हैं, पक्षी पक्षियों को जन्म देते हैं, गायें गायों को जन्म देती हैं, मनुष्य मनुष्य को जन्म देते हैं। फूलों में शहद है, साँपों में ज़हर है, रंग-बिरंगे सूँड हैं, रात और दिन, सूरज, बारिश, गर्मी, समुद्र और बादल, कितने अद्भुत हैं! पौधे जो जीवित प्राणियों द्वारा फेंकी गई जहरीली हवा को पकड़ते हैं और जीवित प्राणियों के लिए जीवनदायी हवा बनाते हैं, यह वायु शोधन प्रक्रिया कितनी महान है। गुरुत्वाकर्षण, ग्रहों की कक्षा, अंगों का जन्म और विकास, कितना अद्भुत है। सृष्टि में सब कुछ स्वयं के नियम का पालन करता है। यह कहना कितना बचकाना है कि यह अनुशासित रूप से निर्मित और नियंत्रित प्रकृति बिना किसी नियामक के अस्तित्व में आई और मौजूद है। हिंदू धर्म इस निरीश्वर दर्शन को अस्वीकार करता है।

अब **द्वैतम्**, इसे हिंदू धर्म द्वारा अद्वैत के पहले के चरण के रूप में देखा जाता है। पशु अवस्था से जागने वाला जीवन यह महसूस करता है कि कोई शक्ति इस पूरे को नियंत्रित कर रही है और उस शक्ति की इच्छा ही इस दुनिया में चल रही है, और ईश्वर की शक्ति से डरता है। और मानता है कि यह खुद से और पूरे से अलग है। इस प्रकार यह निष्कर्ष निकलता है कि सृजन और निर्माता दो अलग-अलग पहलू हैं। यही द्वैतम् है। जबकि पश्चिमी लोग अक्सर ईश्वर को स्वर्ग में सिंहासन पर बैठे एक निर्माता

के रूप में देखते हैं, जो सभी निर्माणों का संचालन करता है, मानवता का परीक्षण करता है, और साथ ही उन्हें गुमराह करने के लिए शैतान और बुरी ताकतों का निर्माण करता है। यह अवधारणा ईश्वर को एक भयभीत, दंड देने वाले, असहिष्णु, प्रतिशोधी और क्रूर देवता के रूप में चित्रित करती है, जो भय फैलाने वाले आस्तिकवाद को बढ़ावा देता है। यह दृष्टिकोण मनुष्यों को एक अधीनस्थ भूमिका में रखता है, जो स्वर्ग या नरक के अंतिम निर्णय के अधीन है।

कृत्रिम धार्मिक हठधर्मिता में निहित यह तर्क यह मानता है कि केवल एक विशेष धर्म ही इस सृष्टिकर्ता को प्रसन्न कर सकता है। हालाँकि, ऐसी धारणा केवल वैज्ञानिक जांच, ज्ञान और तर्कसंगत विचार के अभाव में ही पनप सकती है।

जब मनुष्य भी इस धरती पर स्वतंत्रता, समानता और साझेदारी की मांग करता है, तब इस आस्तिकता में एक स्वामी जो हमेशा अपनी रचना को गुलाम बनाने और भ्यानक क्रूरता से दंडित करने की इच्छा रखता है। यह एक भ्रम है जो सहज प्रवृत्ति के विरुद्ध है। यह जानवरों के समूह के बराबर है। भेड़ियों के झुंड और हाथियों के झुंड ऐसे ही चलते हैं। इन समूहों में एक स्वामी होता है और बाकी सभी गुलाम होते हैं। अगर मालिक को अच्छा लगे तो गुलाम को खुशी, नहीं तो नरक। इस मामले में भी यही सिद्धांत है। अवैज्ञानिक, अप्राकृतिक, अनैतिक और बचकानी आस्तिकता जिसमें दो विरोधी ताकतें, निर्माता और रचना, गुलाम और मालिक, इस ब्रह्मांड में लगातार मौजूद हैं।

अब तीसरा है **विशिष्टाद्वैत**, इसे भी हिंदू धर्म अद्वैत की ओर पहला कदम मानता है। इसका तर्क है कि समष्टि ईश्वर का शरीर है, और उस शरीर के अंग या सदस्य जीव और प्रकृति हैं। (ईश्वर की बाहरी दुनिया के भीतर, सृष्टि/प्रकृति नामक एक छोटी सी दुनिया है) अंगों के बिना शरीर का अस्तित्व नहीं हो सकता। इसी तरह, शरीर के बिना अंगों का अस्तित्व नहीं है। इस प्रकार, यह एक तर्क है जो घोषणा करता है कि जो उस एक का हिस्सा है, वह भी वही है।

अब, भेदभेद या द्वैताद्वैतम् यह मानता है कि प्रकृति (पदार्थ) और चेतना दो अलग-अलग सत्ताएँ हैं, फिर भी साथ ही यह तर्क देता है कि ये दोनों एक उच्चतर, परम वास्तविकता की अभिव्यक्तियाँ हैं। यह दर्शन स्पष्ट द्वैत (भेद) को परम एकता (अभेद) या अद्वैत (अद्वैत) के साथ जोड़ता है। सनातन

धर्म इस दृष्टिकोण को अद्वैत (अद्वैतवाद) की ओर एक कदम के रूप में देखता है क्योंकि दो अलग-अलग सत्ताएँ अविभाजित सत्य को अस्पष्ट कर सकती हैं, और परम सत्य से अलग होने की धारणा आध्यात्मिक अभ्यास (साधना) के माध्यम से मोक्ष (मुक्ति) प्राप्त करने में एक सूक्ष्म बाधा हो सकती है। "अंत में, अद्वैत दर्शन एक परिपूर्ण दर्शन है जो बहुत साधना और ज्ञान के फलस्वरूप उभरा है। यहाँ दो नहीं, केवल एक है। वैज्ञानिक, तर्कसंगत, धार्मिक, सनातन - ईश्वर की हिंदू अवधारणा। प्रजानं ब्रह्म (ऋग्वेद), अहम् ब्रह्मास्मि (यजुर्वेद), तत्त्वमसि (सामवेद), अयमात्मा ब्रह्म (अथर्वेद), ईशावासमिदं सर्वं (उपनिषद), सर्वं खल्विदं ब्रह्म (उपनिषद)। सामूहिक रूप से सभी प्राणी एक मूल आत्मा के रूपांतरण हैं, जो हर चीज में दिव्य शक्ति को देखता है। और जो वैज्ञानिक सिद्धांत का समर्थन करता है कि ऊर्जा को बनाया या नष्ट नहीं किया जा सकता है। एक ऊर्जा को दूसरी ऊर्जा में रूपांतरित किया जा सकता है और ब्रह्मांड का कुल ऊर्जा मूल्य हमेशा स्थिर रहता है। यह आस्तिकता इस वैज्ञानिक सत्य पर आधारित है कि ब्रह्मांड की सभी विभिन्न चीजें एक ऊर्जा से ही अभिव्यक्तियाँ और परिवर्तन हैं। ईश्वर ब्रह्मांड में व्याप्त है। वह हर जगह है। यहाँ ईश्वर के अलावा कुछ भी मौजूद नहीं है। यहाँ सब कुछ ईश्वर है। ईश्वर के अलावा कुछ भी नहीं है। खंभे और जंग में, स्वयं और ब्रह्मांड में, सृष्टि और बाढ़ में, केवल ईश्वर ही। ईश्वर निर्माता है और ईश्वर ही रचना है। एक उदाहरण देने के लिए, यहाँ ईश्वर एक नर्तक की तरह है। और एक चित्रकार की तरह नहीं। यदि चित्र खींचा जाता है, तो चित्र और चित्रकार अलग-अलग निर्माता होते हैं, जबकि नृत्य में नर्तक और नृत्य पूरक होते हैं। नर्तक के बिना, नृत्य नहीं होता। यदि नृत्य नहीं है, तो नर्तक भी नहीं है। नर्तक में नर्तक है, और नृत्य में नर्तक है।

भगवान स्वयं सृष्टि में रूपांतरित हो जाते हैं। सृष्टि की प्रत्येक गति भगवान की ही गति है। यद्यपि प्रत्येक व्यक्ति भगवान का ही स्वरूप है, फिर भी वह अपने स्वभाव भाव से अपने भीतर निवास करने वाले सत्य भगवान को नहीं पहचान पाता। जब घोर साधना के द्वारा आत्म-भाव को उस एक के पास लाया जाता है जो सबको मार्गदर्शित करता है, जो सबमें निवास करता है (भ.गी.18/61) तथा जो अविभाजित है (भ.गी.13/17), तब आत्म-साक्षात्कार-ईश्वर-साक्षात्कार-ज्ञान उत्पन्न होता है। कैवल्यम या मोक्ष की अवस्था वह अवस्था है जिसमें व्यक्ति स्वयं को भगवान के रूप में प्रकाशित करता है, इस

सत्य को अनुभव करता है कि सब कुछ भगवान है, तथा सब कुछ अखंड आत्मा की अभिव्यक्ति है।

आप और मैं सभी भगवान हैं। यहाँ ऐसा कुछ भी नहीं है जो भगवान न हो।

अहं ब्रह्मास्मि - "मैं भगवान हूँ",

तो थथ्वमसि - "यह आप हैं"।

इस प्रकार "ईशा वसामिदं सर्वम्"।

यह हिंदू धर्म की ईश्वर अवधारणा है। अंत में, अन्य आस्तिकता में केवल एक ईश्वर (एकल ईश्वर) है।

लेकिन हिंदू आस्तिकता में, केवल ईश्वर है। ऐसा कुछ भी नहीं है जो ईश्वर न हो (सब कुछ ईश्वर है)।

(पी.एम. श्रीनिवासन मेमोरियल, स्नेहराज फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित)

प्रश्न-4) देव मनुष्य और तैंतीस करोड़ देवता...आइए जानते हैं..

उत्तर: हमने सबसे पहले मानव पशु की अवधारणा देखी। वहाँ से हमने यह भी देखा कि पूर्ण मानव कैसे बनें। इसका अगला चरण मानव देव होने की स्थिति है। जब कोई व्यक्ति साधना के माध्यम से ईश्वर-साक्षात्कार और आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करता है, तो वह व्यक्ति (पुरुष/महिला) दिव्यता से परिपूर्ण होता है। इस प्रकार वह महिला या वह पुरुष दिव्य गुणों से चमकता है। वह पुरुष (महिला/पुरुष) जो दिव्यता से परिपूर्ण होता है, उसे आम लोग "मानव भगवान" कहते हैं। विद्वानों द्वारा अवतार भी कहा जाता है। जब हम किसी को इस तरह से मानव भगवान के रूप में स्वीकार करते हैं, तो यह इस बात की स्वीकृति है कि हम भी एक दिन भगवान बन सकते हैं। यह हमें जीवन में हमारे उद्देश्य की याद दिलाता है। इस कदम से हम मानव पशु से अनंत संभावनाओं की ओर उठ जाते हैं। यह पूर्णता का प्रकाश है। यह दिव्यता की साधना बन जाती है।

इसे गणित की सहायता से परखा जा सकता है। आपने सुना होगा कि हिंदुओं में तैंतीस करोड़ देवता हैं। तो इसका मतलब यह है कि इसे गलत समझा गया है। संस्कृत में कोडी (करोड़ नहीं) शब्द का अर्थ भी हिस्सा, भाग, प्रतिशत होता है। सामान्य रूप से मनुष्यों में तैंतीस प्रतिशत देवत्व, तैंतीस प्रतिशत मानवता और तैंतीस प्रतिशत पशुता होती है। जिन लोगों में देवत्व होता है, उन्हें हम अवतार कहते हैं और आम लोगों को हम मानव देवता कहते हैं। पशुवत प्रकृति वाले लोगों को हम असुर, राक्षस

या नर-जानवर कहते हैं। फिर जो लोग मानवता से भरे हुए हैं, उन्हें हम महात्मा और पूर्ण-मानव कहते हैं। अगर कोई अपनी देवत्व को तीस प्रतिशत से अधिक बढ़ा सके, तो वह मानव देवता हो सकता है, अवतार जैसा कि आम लोग कहते हैं।

वैदिक देवताओं के समूह में, तीस प्राथमिक देवताओं को मान्यता दी गई है, जिनमें शामिल हैं:

- 11 रुद्र (शिव की शक्तिशाली ऊर्जा के अवतार)
- 12 आदित्य (सौर देवता और प्रकाश के देवता)
- 8 वसु (प्राकृतिक शक्तियाँ और तात्त्विक देवता)
- 2 अश्विनी कुमार (स्वास्थ्य और चिकित्सा के जुड़वां देवता)

ये तीस देवता वैदिक ब्रह्मांड विज्ञान में ब्रह्मांड और मानव अनुभव के विभिन्न पहलुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं।"

(पी.एम.श्रीनिवासन मेमोरियल, स्नेहराज फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित)

प्रश्न-5) क्या हिंदू धर्म एक आस्था है?

उत्तर : नहीं, हिंदू सत्य का साधक है। हर हिंदू खुद भगवान बनने के लिए जीता है। आस्था मूर्खतापूर्ण और अंधी है। यह केवल तर्क और बुद्धि के विज्ञान के अभाव में ही अस्तित्व में है और इसे थोपा जा सकता है। स्वाभिमानी हिंदू जो स्वतंत्रता की मां की लोरी गाकर बड़े हुए हैं, वे कभी भी केवल आस्तिक नहीं हो सकते। क्योंकि आस्था के लिए दासता की आवश्यकता होती है। आस्था जरूरी नहीं कि सच हो, यह सिर्फ एक विश्वास है। उदाहरण के लिए, आइए पृथ्वी के बारे में पश्चिमी लोगों के संदर्भ को देखें, "यह अवैज्ञानिक विश्वास है कि पृथ्वी बिस्तर की तरह सपाट है, कि पहाड़ लकीरों द्वारा स्थिर हैं, और यह कि पृथ्वी सौरमंडल का केंद्र है, और सूर्य पृथ्वी के चारों ओर घूमता है।" इसके विपरीत, कोपरनिकस और गैलीलियो जैसे खगोलविदों को यह सच बताने के लिए क्रूर उत्पीड़न का सामना करना पड़ा कि सूर्य सौरमंडल का केंद्र है और पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है। ब्रूनो को 1600 के दशक में बेरहमी से जलाकर मार दिया गया था। अंततः पश्चिम को अपनी मान्यताएं बदलनी पड़ीं और सत्य को स्वीकार करना पड़ा। पश्चिमी लोग यह मानने पर जोर देते हैं कि सर्प शैतान है। सच क्या है? इसके बारे में

सोचें, सर्प को शैतान इसलिए कहा जाता है क्योंकि उसे निषिद्ध फल खाने के लिए प्रोत्साहित किया गया था। खैर, आइए घटनाक्रम पर एक नज़र डालें। वे दो लोग निषिद्ध फल खाने से पहले कैसे जीवित रहे? जानवरों की तरह, उनके पास कोई आत्म-जागरूकता नहीं है, कोई सम्मान नहीं है, कोई शर्म नहीं है, वे भूख लगने पर खाते हैं, वे नींद आने पर सोते हैं, इसलिए जिस सर्प ने उन्हें जान का फल खाने के लिए मजबूर किया, वह उन्हें पशुता से मानवता की ओर उठा रहा था। आत्म-जागरूकता थी। शर्म महसूस हुई, गुलामी से मुक्त हुए, अपने भीतर निहित देवत्व को जाना, सृजन करने की क्षमता, देवत्व को जाना और इस प्रकार अपने भीतर सर्वोच्च चेतना को महसूस करने में मदद की, क्या इस को कुंडलिनी शक्ति के रूप में, आदिगुरु के रूप में सर्प की पूजा नहीं करनी चाहिए? क्या आप हर चीज का तिरस्कार करना चाहते हैं? इस तरह से विश्वास थोपा जाता है। कबि कबि यह सच नहीं हो सकता है।

लेकिन सत्य हमेशा सत्य ही रहेगा। हिंदुओं ने अपने दर्शन को विज्ञान के रूप में विकसित किया है। उनके लिए दर्शन ही वैज्ञानिक सत्य है। हिंदू धर्म अवलोकन और प्रयोग से प्राप्त अनुभवजन्य सत्य है। इसलिए सनातन हिंदू धर्म को पढ़ाने की कोई आवश्यकता नहीं है। यह एक वैज्ञानिक अध्ययन है जिसमें वे सभी लोग जिन्हें इसकी आवश्यकता है, जो इसे चाहते हैं और व्यावहारिक परीक्षणों से गुजरते हैं, वे स्वयं के लिए उस महान सत्य को खोज सकते हैं जैसा कि उनके पूर्वजों ने अनुभव किया था।

लेकिन, जहाँ तक विश्वास की बात है, तो विश्वास सिखाना बहुत ज़रूरी है। क्योंकि कुछ व्यक्तिगत राय है, यह सच नहीं है। हो सकता है कि यह सिर्फ कल्पना हो। इस अवैज्ञानिक विश्वास को प्रचारित करने की ज़रूरत है क्योंकि कोई खुद अनुभव नहीं कर सकता, इसलिए जब प्रचार किया जाता है, तभी दूसरे को यह पता चलता है। अन्यथा, वह विश्वास गायब हो जाएगा। अगर किसी का अनुभव, अगर हर कोई उन व्यावहारिक प्रयोगों से गुज़रते हुए वही अनुभव कर सकता है, तो उस वैज्ञानिक धर्म के बारे में बात करने की कोई ज़रूरत नहीं है। यह हमेशा उन सभी के भीतर और प्रकृति में है जिन्हें इसकी ज़रूरत है वे इसे खुद खोज सकते हैं। यह कभी नहीं जाता। इसलिए जो हिंदू जान के लिए व्यावहारिक प्रयोगों का सहारा लेते हैं, उन्हें आश्वस्त होने की ज़रूरत नहीं है। वे सत्य के खोजी हैं। विश्वास से पूर्णता प्राप्त नहीं की जा सकती।

सनातन धर्म पूर्णता प्राप्त करने के लिए जीता है। इसका मार्ग जांच, प्रयोग, विश्लेषण, आलोचना, परिप्रेक्ष्य और दृष्टि है। यह कोई ऐसा धर्म नहीं है जो अपनी बुद्धि की गिरवी करता हो।
(पी.एम.श्रीनिवासन मेमोरियल, स्नेहराज फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित)

प्रश्न-6) क्या हिंदू धर्म एक मत है?

उत्तर : नहीं...नहीं! हिंदू धर्म एक वैज्ञानिक जीवन योजना है। यह एक संस्कृति है। यह प्रागैतिहासिक काल से पीढ़ी दर पीढ़ी हाथ बदलने की प्रक्रिया रही है, ब्रह्मांड के ज्ञान को वैज्ञानिक सत्यों में समेकित करती रही है। चूंकि ये शाश्वत सत्य हैं, इसलिए हिंदू धर्म को सनातन धर्म कहा जाता है। लेकिन हिंदू धर्म कोई मत नहीं है। मत क्या है? मत का मतलब है "राय"। जीवन का एक पैटर्न जिसमें कोई व्यक्ति किसी राय को संहिताबद्ध करता है, उस पर पूरी तरह से विश्वास करता है, और उस राय के अनुसार जीवन जीता है। हो सकता है कि किसी दिन वह राय गलत साबित हो जाए, फिर...?
अब क्या हिंदू धर्म एक धर्म है, आइए मतों की विशेषताओं के साथ इसका तुलनात्मक अध्ययन करें।

एक, "मत निर्विवाद विश्वास की मांग करता है"

तो फिर हिंदू धर्म में विश्वास का कोई स्थान नहीं है। हिंदू आस्तिक नहीं बल्कि सत्य के खोजी हैं। इसे समझने के लिए भगवद गीता के एक श्लोक पर नज़र डालते हैं...
"अब तक मैंने तुम्हें सबसे गुप्त ज्ञान समझाया है। तुम्हें उसका विश्लेषण करना चाहिए और फिर उसे स्वीकार करना चाहिए या नहीं, यह तुम पर छोड़ दिया गया है, तुम जो चाहो करो" (भ.गी.18/63)
क्या यही मत का तरीका है?!

दूसरा, "मत एक ही उपदेशक, एक ही धार्मिक पुस्तक और एक ही पूजा पद्धति थोपता है"

हिंदू धर्म में आचार्य, महात्मा, ऋषि, योगी और आत्मसाक्षात्कार प्राप्त व्यक्ति की निरंतर, सनातन परंपरा है। यह कभी नहीं रुकती। (भ.गी.4/7,8,34) समय की आवश्यकता के अनुसार महान आत्माएँ आती रहेंगी। इस प्रकार प्रत्येक सत्यदर्शी, आचार्य द्वारा लिखित पुस्तकें हिंदुओं के लिए धार्मिक पुस्तकें हैं। इसलिए असंख्य उपदेशक और इतनी सारी धार्मिक पुस्तकें। सभी शास्त्रों में एक ही विषय है। आत्मसाक्षात्कार, सिद्धि, मोक्ष।

अब इस पर विचार करें। क्या सभी के लिए एक मत एक सही अवधारणा है? क्योंकि हर किसी के अपने विचार हैं। उनका अपना चरित्र, व्यवहार और प्राथमिकताएँ हैं। हम में से प्रत्येक का चरित्र और आदतें अलग-अलग हैं, जैसे कि हमारी हाथ की रेखाएँ और पुतली बिना मेल खाए अलग-अलग हैं। एक बात! यह मत क्यों है? मत पूर्णता का मार्ग है। यहीं पर हिंदू दूसरों से अलग हैं। जहाँ दूसरे लोग मत को रुढ़िवादी और प्रतिक्रियावादी रवैये के साथ जबरन थोपते हैं, बिना उन्हें इसके सत्य का अध्ययन, चिंतन, विश्लेषण और तुलना करने की अनुमति दिए, वहीं हिंदू कहता है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी प्रकृति के अनुसार पूर्णता के लिए अपना रास्ता बनाना चाहिए। खुद एक देवदूत बनने के लिए।

अब पूजा पद्धति की बात करें तो, सनातन या हिंदू एक ही ईश्वर की पूजा कई रूपों में, कई नामों से, कभी-कभी बिना आकार के, अपनी विशेषताओं के अनुसार, अपनी इच्छाओं के अनुसार, अपनी ज़रूरतों के अनुसार, अपनी कल्पनाओं के अनुसार, अपनी भावनाओं के अनुसार करते हैं। दूसरों की ऐसी पूजा पद्धतियों का सम्मान करते हुए। इसे समझने के लिए, आइए भगवद गीता के कुछ श्लोकों पर नज़र डालें।

"लोग जिस प्रकार मेरी शरण में आते हैं, मैं भी उसी प्रकार उन्हें अर्पण करता हूँ। हे पृथगुन! सभी लोग जाने-अनजाने मेरे मार्ग का अनुसरण करते हैं" (4/11)।

"जो लोग अपनी इच्छाओं से बुद्धि रखते हैं, अपने नियमों का पालन करते हैं और स्वभाव से संयमी होते हैं, वे भगवान की अन्य धारणाओं की पूजा करते हैं" (7/20)।

"मैं वह हूँ जो किसी भी भक्त को, जो ध्यानपूर्वक भगवान की किसी भी अवधारणा की पूजा करना चाहता है, अविचल ध्यान देता हूँ" (7/21)।

"वे भक्त भगवान की उस अवधारणा की सावधानीपूर्वक पूजा करते हैं। लेकिन इससे उन्हें मेरे द्वारा दिए जाने वाले संबंधित आशीर्वद प्राप्त होते हैं" (7/22)।

इसलिए, हिंदू अपने चरित्र, इच्छा, आदतों और विचारों के अनुसार अपनी पसंद के अनुसार पूजा कर सकते हैं। वे जानते हैं कि यह केवल सर्वोच्च सत्ता ही है जो पूजा स्वीकार करती है और जिस भी तरीके

से वे पूजा करते हैं, आशीर्वाद देती है। क्या हिंदू धर्म मत का मार्ग है? जो व्यक्ति को अपने व्यक्तित्व के अनुरूप शिक्षक, धार्मिक पुस्तक और पूजा पद्धति चुनने की स्वतंत्रता देता है। उत्तर है नहीं।

तीसरा, “मत विश्वासियों को जन्मजात पापी - गुलाम बताकर भय पैदा करता है”।

हिंदू धर्म तत्त्वमसि, अहंब्रहमास्मि, ईशावासमिदं सर्वम् जैसे वैदिक मंत्रों का जाप करके निर्भयता पैदा करता है और अमृतस्यपुत्र, अमर केसरी, शक्ति स्वरूपिणी, ईश्वर प्रतिरूपा, परशुदधात्मा, स्नेहस्वरूपा, आत्मस्वरूपी आदि जैसे संबोधनों के साथ भगवान की समानता तक ऊपर उठाता है, ईश्वरत्व तक पहुंचता है। क्या मत का यही तरीका है? नहीं, चलिए हम सोचते हैं कि फिलहाल इतना ही काफी है कि हिंदू धर्म कोई मत नहीं है। अगर नहीं, तो आप सुनते ही रहेंगे, बोलते बोलते ये कबि नहीं रुकेगा।
(पी.एम.श्रीनिवासन मेमोरियल, स्नेहराज फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित)

प्रश्न-7) क्या हिंदू धर्म एक भौगोलिक पहचान नहीं है?

उत्तर : यह कल तक की बात है, आज से हिंदू धर्म को परिभाषित करते समय भूमि शास्त्र और दर्शन शास्त्र पर विचार करना पर्याप्त है। लगभग 2,500 साल पहले, भारतीयों को यूनानी विजेता सिकंदर सहित विदेशियों द्वारा हिंदू कहा जाता था, अर्थात् सिंधु नदी के तट के आसपास रहने वाले लोग। उस समय, भूगोल की दृष्टि से हिंदुओं का मतलब भारतीय था। इसलिए आज, भौगोलिक दृष्टि से, भारत में रहने वाले सभी लोगों को हिंदू नहीं कहा जा सकता है। विदेशी धार्मिक प्रचारकों के प्रभाव के कारण, “हिंदू?” अच्छी संख्या में लोग विदेशी धर्मों में चले गए हैं। हालाँकि यह सच है कि वे सिंधु नदी और भारतीय संस्कृति से संबंधित हैं, लेकिन ये लोग जो चले गए हैं वे दूसरे लोगों द्वारा उन्हें हिंदू कहलाना पसंद नहीं करते, क्योंकि उनका नया अपनाया गया दर्शन हिंदू दर्शन से अलग है। वे गैर हिंदू के रूप में जाना जाना पसंद करते हैं।

भौगोलिक दृष्टि से भी देखें तो प्रत्येक भूमि की अपनी विशेषताएँ/पहचान है। शायद किसी भूमि विशेष को व्यक्ति मानकर कहा जाए तो कहा जा सकता है कि उस भूमि विशेष का अपना व्यक्तित्व/पहचान है। यदि ऐसा है तो भारत की पहचान क्या है? अतः यदि आप इस भूमि के साहित्य, कला, विज्ञान,

त्यौहार, उत्सव, रीति-रिवाज और संस्कृतियों का विश्लेषण करें या उनसे गुजरें तो आप आसानी से भारत की पहचान का पता लगा सकते हैं। जो लोग इस प्रकार से गुजरेंगे वे अवश्य पहचान लेंगे कि यह एक योगी/योगिनी बनने वाले व्यक्ति या साधक की पहचान है। अतः हिन्दू धर्म को परिभाषित करते समय केवल भूगोल ही नहीं बल्कि दर्शन पर भी विचार करना आवश्यक है। क्योंकि प्रत्येक भूमि की अपनी प्रकृति और दर्शन है। हिन्दुओं का भी अपनी मिट्टी से जुड़ा एक निश्चित दर्शन है, जो निश्चित रूप से विशेष और वैज्ञानिक प्रकृति का है और गैर-हिन्दुओं के दर्शन से भिन्न है। (पी.एम.श्रीनिवासन मेमोरियल, स्नेहराज फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित)

प्रश्न-8) हिंदू की परिभाषा क्या है?

उत्तर: सबसे पहले हमें यह समझना होगा कि हमें हिंदू की परिभाषा क्यों सीखनी चाहिए। ऐसा इसलिए है क्योंकि हिंदू नहीं जानता कि हिंदू के पैरों के नीचे की ज़मीन खिसक रही है। दुर्भाग्य से, हिंदुओं के ईर्द-गिर्द ऐसे लोग हैं, जिन्हें उनके धर्म ने अलग तरीके से पूजा करने वालों का धर्म परिवर्तन, उत्पीड़न या नुकसान पहुँचाना सिखाया है। दूसरी ओर, विदेशी नास्तिक हिंदुओं की संस्कृति को कलंकित करके हिंदुओं को शैतान बनाने की पूरी कोशिश कर रहे हैं, जो मानते हैं कि आस्तिकता/आध्यात्मिकता एक सम्मोहनकारी अफीम है। यह पृथ्वी और मानवता के अस्तित्व के लिए भी खतरा है। धरती पर मानवता को बचाने के लिए हिंदुओं को हिंदू धर्म सीखने की ज़रूरत है। इसकी शुरुआत हिंदू परिभाषा सीखने से होती है।

हिंदू की परिभाषा जानने से पहले हमें कुछ बुनियादी परिभाषाएँ सीखनी होंगी। वे हैं..

- 1) **अधर्म:** अधर्म वह कार्य है, जिसका उद्देश्य प्रज्ञा (ज्ञान) को संकुचित करना, दुःख देना, बाँधना, प्रताड़ित करना और शोषण करना है।
- 2) **धर्म:** धर्म वह क्रिया है जो प्रज्ञा (ज्ञान) को विकसित करती है, आनंद देती है, और मोक्ष के लिए अभिप्रेत है।
- 3) **मोक्ष:** मोक्ष सभी प्रकार के बंधनों से, सभी प्रकार की गुलामी से, सभी प्रकार की निर्भरता से और सभी प्रकार के दुखों और शोषण से मुक्त होने की स्थिति है।

4) **ईश्वर:** सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापी महाआत्मा जो अपनी अनंत बुद्धि, शक्ति, क्रिया और सृष्टि, सभी जीवित और निर्जीव चीजों के रूप में प्रकट और विकसित हो रही है।

अब आइये हिन्दू / हैन्दव / सनातनी की परिभाषा पर आते हैं..

5) **हैन्दव / हिन्दू / सनातनी :**

"वह व्यक्ति जो अपने अंदर और सभी में ईश्वर को देखता है, जो भारतीय मिट्टी का वारिस है, भारतीय आध्यात्मिक विरासत का वंशज है, उसे हिंदू / हैन्दव / सनातनी कहा जाता है"

अथवा विस्तार से ...

"जो लोग भारत को धर्म की भूमि, पुण्य की भूमि और पितृ भूमि या मातृ भूमि या आध्यात्मिक मार्गदर्शन की गुरु भूमि मानते हैं, वे जानते हैं कि एक चैतन्य है जो पूरी सृष्टि को नियंत्रित करती है, जिसे इस जीवन में या अगले जीवन में, आध्यात्मिक प्रथाओं (साधना) के माध्यम से या कुल देवता की कृपा से या गुरु की कृपा से, मोक्ष के लिए, वो चैतन्य को अपने ही भीतर साक्षात्कार किया जा सकता है, अर्थात्" आत्मानो मोक्षार्थम्, जगत् हितायच " अपने आत्मा का मोक्ष के साथ, दुनिया के कल्याण के लिए जिस व्यक्ति के पास ज़रूरी ज्ञान, अंदरूनी प्रेरणा और अभ्यास होती है, उसे हिंदू (हिन्दव) / सनातनी कहा जाता है।

अथवा

इसे हल्के से कहें तो

"वह व्यक्ति जो अपने अंदर और सभी में ईश्वर को देखता है, जो भारतीय मिट्टी का वारिस है, भारतीय आध्यात्मिक विरासत का वंशज है, उसे हिंदू / हैन्दव / सनातनी कहा जाता है"

इस हिंदू परिभाषा का सार यह है कि संपूर्ण हिंदू साहित्य, वेद, उपनिषद, उपवेद, पुराण, दर्शन, महाकाव्य, आगम और स्मृतियाँ इसी एक विचार पर आधारित हैं। इसी तरह, यह गोत्र प्रणाली से लेकर कावु, थर्याम (भूत-कोल), क्षेत्र, वैदिक, हठ, तंत्र, योगिक ध्यान संप्रदाय और शैव, वैष्णव, शाकतेय,

गणपत्य, सौर, कुमार संप्रदाय तक सभी प्रणालियों की मूल अवधारणा भी है। अब यह उन सभी पूर्ण मनुष्यों की परिभाषा बन जानी चाहिए, जो पशुता से जागृत हैं।

(पी.एम.श्रीनिवासन मेमोरियल, स्नेहराज फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित)

प्रश्न-9) "भारत की आध्यात्मिक विरासत" क्या है?

उत्तर: भारत की आध्यात्मिक विरासत को बताने के लिए हमें वेद, उपनिषद, वेदांग, उपवेद, पुराण, दर्शन, महाकाव्य, आगम और स्मृतियों से गुजरना होगा। इसके लिए लाखों पन्नों की किताबें चाहिए होंगी। क्योंकि इन सबके पीछे भारत या हिंदू आध्यात्मिक विरासत की अवधारणा है। तो आइए देखें कि अगर भारत की आध्यात्मिक विरासत की आंतरिक भावना को संदेश में बदल दिया जाए तो कैसा रहेगा। "जो मुझमें नहीं है, वह ब्रह्मांड में भी नहीं है, जो ब्रह्मांड में नहीं है, वह मुझमें भी नहीं है, जो मुझमें है, वह ब्रह्मांड में भी है, और जो ब्रह्मांड में नहीं है, वह मुझमें भी नहीं है। इसलिए ब्रह्मांड की सभी गहराइयों और पेचीदगियों को समझने का सबसे आसान तरीका है खुद में गहराई से उत्तरना। योग ही इसका तरीका है। यह भक्ति योग, कर्म योग, ज्ञान योग, राज योग या इनमें से कोई भी संयोजन हो सकता है।"

अब अगर हम इसे एक शब्द में कहें तो वह है "**योग**", परमात्मा से मिलन।

योग हिन्दुओं/सनातनियों की 1) सम्पूर्ण जीवन योजना 2) सम्पूर्ण साधना योजना 3) सम्पूर्ण स्वास्थ्य योजना है।

(पी.एम.श्रीनिवासन मेमोरियल, स्नेहराज फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित)

प्रश्न-10 भारतीय आध्यात्मिक विरासत या हिंदू धर्म के सिद्धांत क्या हैं?

उत्तर: हिंदू धर्म के मूल सिद्धांत...

1) **भारत की धरती के लिए मातृ अवधारणा -**

// उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम् / वर्षं तद् भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः //

समुद्र के उत्तर में और हिमालय के दक्षिण में जो देश है उसे भारत कहते हैं तथा उसकी संतानों (नागरिकों) को भारती कहते हैं। - विष्णु पुराण २.३.१

समुद्र के उत्तर और हिमालय के दक्षिण का देश भारत कहलाता है और उसकी संतानों (नागरिकों) को भारती कहा जाता है। -विष्णु पुराण-2.3.1

इस प्रकार, प्रत्येक आबादी का प्रत्येक भूमि के साथ एक विशेष संबंध होता है, जो उनका पालना है।

इसलिए जैसा कि ब्रह्मवैवर्त पुराण (1 .26 .66) में कहा गया है "गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती नर्मदे सिंधु कावेरी..." इन सभी मातृ नदियों की गोदा। इस प्रकार, आ सेतु -हिमाचल, हिमालय से लेकर महान हिंदू महासागर तक का दिव्य भूमि क्षेत्र हिंदुओं के लिए मातृभूमि, पितृभूमि, पुण्यभूमि, धर्मभूमि और गुरुभूमि है। वे उस विशाल भूमि की पूजा भारतमाता की अवधारणा के साथ करते हैं।

2) आत्मा-केंद्रित जीवन शैली:-

सत्य यह है कि आत्मा, शरीर नहीं, शरीर केवल पाँच तत्वों से बना एक यंत्र है, तथा शरीर में एक आत्मा है जो इस शरीर में निवास करती है और इसे संचालित करती है (भ.गी.18/61)। यह समझना कि यह प्रकृति केवल अपने ज्ञान, शक्ति, क्रिया और भाव की अभिव्यक्ति के लिए एक स्थान है, यह जानना कि यदि आत्मा नहीं है तो शव को किसी श्रृंगार, विज्ञान, साहित्य, राजनीति, कला की आवश्यकता नहीं है। हिंदुओं की जीवन शैली ऐसी आत्मा के इर्द-गिर्द केंद्रित है और इसकी प्राप्ति के लिए बनाई गई है।

3) पुनर्जन्म का सिद्धांतः-

इस प्रकार शरीर में आत्मा इस शरीर का उपयोग करने में असमर्थ होकर इस शरीर को छोड़कर दूसरे नए शरीर में प्रवेश करती है। आत्मा सङ्करण को बदलने की तरह नए शरीर के साथ अगले जन्म में प्रवेश करती है (भ.गी.2/13,22)। इस तरह, आत्मा अपने पूर्ण बोध तक जन्मों की यात्रा जारी रखती है। आज हम यूट्यूब और गूगल या एआई मेट पर पुनर्जन्म के हजारों उदाहरण पा सकते हैं।

4) आत्म-साक्षात्कार साधना:-

हिंदू मानते हैं कि ऐसी आत्मा का साक्षात्कार संभव है, और वे वैज्ञानिक साधना पद्धति को बढ़ावा देते हैं जो उन्हें विरासत में मिली है। साधना में कर्म योग, भक्ति योग, ज्ञान योग, राज योग और इनके मिश्रित तरीके शामिल हैं।

5) मोक्ष ज्ञानम् (मोक्ष ज्ञान) :-

अथक साधना के माध्यम से, व्यक्ति इस जीवन में या अगले जीवन में, आत्मा को सर्वव्यापी सार के रूप में महसूस करता है जो सभी अस्तित्व का आधार है। यह गहन समझ बताती है कि आत्मा एकीकृत, अविभाजित वास्तविकता है जो विविध ब्रह्मांड के रूप में प्रकट होती है (भगवद गीता 13.17)। इसके अलावा, व्यक्ति यह पहचानता है कि भगवान, परमात्मा, परमेश्वर, परब्रह्म, ईश्वर, देवता और भूत सभी एक ही परम वास्तविकता की अभिव्यक्तियाँ हैं (भगवद गीता 13.31)।

इस मुक्तिदायी ज्ञान को मोक्ष ज्ञान के नाम से जाना जाता है। जैसे-जैसे साधक (आध्यात्मिक साधक) पूर्ण ज्ञान प्राप्त करता है, परम सत्य का अनुभवजन्य साक्षी बनता है, उसे सर्वज्ञता, सर्वशक्तिमानता और सर्वव्यापकता प्राप्त होती है। अंततः, यह ज्ञान साधक को पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त करने की ओर ले जाता है।

ऐसे हजारों लोग हैं जिन्होंने मोक्ष ज्ञान प्राप्त किया है, जिनमें से कुछ का उल्लेख करें, भगवान शिव, देवी पार्वती, श्री गणपति, श्री षण्मुखन, सप्तर्षि, भगवान अगस्त्य, अठारह सिद्ध, श्री हनुमान, श्री कृष्ण, श्री अद्यप्पन, श्री बाबाजी, श्री शंकराचार्य, श्री प्रभाकर सिद्ध योगी, बिल्वमंगल स्वामी, कुरुरम्मा, रामकृष्ण परमहंस, श्री रमण महर्षि, महाराज नीम करोली बाबा, श्री स्वामी शिवानंद परमहंस, श्री सर्वज्ञ, श्री मले महादेश्वर, श्री अल्लम प्रभु, अक्का महादेवी, चेन्ना बसवन्ना, श्री बसवेश्वर, श्री जानेश्वर, रेवना सिद्धैया, श्री राघवेंद्र स्वामी, संता तुलसीदास, संता तुकारामा, श्री कनक दास, श्री पुरंदर दास, श्री चन्द्रशेखर सरस्वती, श्री नारायण गुरु, श्री चट्टंबी स्वामी, श्री नीलकंठ गुरुपादर, श्री अलाथुर शिवयोगी स्वामी, स्वामी नित्यानंद (कान्हांगद), श्री अद्या गुरु, स्वामी शिवानंद परमहंस (वडकरा), श्री वैकुंड स्वामी, योगिनी अम्मा, श्री सत्य साईं बाबा, श्री सत्यानंद सरस्वती, माता अमृतानंदमयी, श्री मृत्यंजय स्वामी, श्री धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री आपको और कितने की आवश्यकता है? लाखों की संख्या में अनुभूतियाँ दी जा सकती हैं।

यह पारलौकिक ज्ञान है। इसे व्यावहारिक ज्ञान के साथ भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए। इसे समझाने के लिए आइए हम गुरु द्वारा साधक की परीक्षा लेने की एक घटना का वर्णन करते हैं। एक बार श्री राम ने

साधक श्री हनुमान से एक प्रश्न पूछा। आपमें और मुझमें क्या अंतर है? तुरंत श्री हनुमान ने उत्तर दिया, "प्रभो, यदि आपने शरीर के आधार पर पूछा है, तो आप मेरे स्वामी हैं और मैं आपका विनम्र सेवक हूँ।" शायद आप बुद्धि के आधार पर पूछ रहे हैं, आप मेरे गुरु हैं और मैं आपका विनम्र शिष्य हूँ। अन्यथा, यदि आप आत्मा के आधार पर पूछते हैं, तो मुझमें और आपमें कोई अंतर नहीं है, आप जो हैं, मैं हूँ - और आप वही हैं जो मैं हूँ।" आइए हम यह मान लें कि हमने आध्यात्मिक और दार्शनिक ज्ञान के बीच के अंतर को समझा लिया है।

6) अनेकता में एकता और समानता:-

इस प्रकार अखंड आत्मा (भ.गी.13/31) के आधार पर, यह जानते हुए कि सभी विविधताएं आत्मा की ही विभिन्न अभिव्यक्तियाँ हैं, हिंदू आत्मा को सभी चीजों में एकता के आधार के रूप में देखते हैं। उस एकता के आधार पर, हिंदू सामूहिक रूप से हर चीज में समानता देखते हैं।

7) गुरु या कुल देवता परंपरा:-

इस बात को समझाने के लिए आइए भगवद्गीता के तीन श्लोकों पर नज़र डालें।

"जो बुद्धिमान सत्य को देख चुके हैं, वे तुम्हें ज्ञान सिखाएँगे। इसे प्रार्थना, प्रश्न और सेवा से समझो।"
(भ.गी.4/34)

"मैं सज्जनों की रक्षा करने, दुष्टों का विनाश करने और धर्म की पुनर्स्थापना करने के लिए युग-युग में अवतार लेता रहता हूँ।" (भ.गी.4/8)

"हे भारत! जब-जब धर्म कमज़ोर होता है और अधर्म बढ़ता है, तब-तब मैं महापुरुषों की रचना करता हूँ।"
(भ.गी.4/7)

इस वचन के अनुसार, हिंदू धर्म उन लोगों का मार्ग है, जिन्हें जीवन-पद्धति के दर्शन के लिए प्रत्येक युग में आवश्यकतानुसार गुरु, आचार्य, धर्म बोधक, अनुभवी, सत्यदर्शी और महात्मा मिलते रहते हैं।

ये हिंदू धर्म के सात लक्षण/मूल सिद्धांत हैं।

(पी.एम.श्रीनिवासन मेमोरियल, स्नेहराज फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित)

प्रश्न-11) सनातन धर्म या हिंदू धर्म की परिभाषा क्या है? हिंदू धर्म को अन्य किन नामों से जाना जाता है?

उत्तर:

"पशु स्वभाव के साथ जन्मे प्रत्येक मनुष्य को उसके व्यक्तित्व के सम्पूर्ण विकास हेतु षोडश संस्कारों, पंच महायज्ञों एवं चतुर्विधि पुरुषार्थ के माध्यम से पूर्ण मानव बनाया जाता है और वहाँ से मोक्ष या देवत्व के महान् लक्ष्य तक पहुँचाया जाता है, "आत्मनो मोक्षार्थं, जगत् हितायच" - अपनी आत्मा के मोक्ष के अतिरिक्त, जगत् के हितार्थ कहीं त्यागों के माध्यम से , साधना, तपस्या, ऋषियों-गुरुओं- एवं कुलदेवताओं की परम्परा से हिन्दुओं ने जो धर्म शास्त्र अर्जित/प्राप्त किया है,
उसे सनातन या हिन्दू धर्म कहते हैं।

भारतीयों ने हमेशा अपने धर्म को सनातन धर्म , वैदिक धर्म , आर्य धर्म और मानव धर्म कहा है। बाद में, हिंदू धर्म शब्द भारतीयों के बीच भी आम इस्तेमाल में आने लगा।

(पी.एम.श्रीनिवासन मेमोरियल, स्नेहराज फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित)

प्रश्न-12) सनातन या हिंदुओं की मूल ग्रन्थ कौन सी हैं?

उत्तर : सनातन धर्म का मूल ग्रन्थ "वेद" है। एक ही वेद है जो ज्ञान का संपूर्ण सारांश है। महर्षि कृष्णद्वैपायन ने एक वेद को विषयों के आधार पर चार भागों में विभाजित किया ताकि उसे पढ़ाना और सीखना आसान हो सके। इस प्रकार वेदों को विभाजित करके ऋषि को वेद व्यास नाम मिला। इसी कारण वेदों को चार कहा जाता है। वे हैं ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद।

(पी.एम.श्रीनिवासन मेमोरियल, स्नेहराज फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित)

प्रश्न-13) कितने वेद हैं ? आइए हिंदू दर्शन की मूल बातें जानें:

उत्तर : इस प्रश्न का उत्तर हमारे 'हिंदू धर्म का अध्ययन (आचार्य)' अनुभाग का विषय भी है। वहाँ, इन विषयों का विस्तार से अध्ययन किया जाना चाहिए।

वेद (संस्कृतः वेदः) शब्द संस्कृत मूल 'विद्' से निकला है, जिसका अर्थ है 'जानना।' अपनी व्युत्पत्ति के अनुसार, वेद प्राचीन भारत के पवित्र ज्ञान के भंडार का प्रतीक हैं। ये पूजनीय ग्रंथ गहन अंतर्दृष्टि को समाहित करते हैं , इन में हम देखेंगे :

- प्रकृति (देवता स्वरूप)

- आत्मा (भूत स्वरूप)
- पुरुष (ईश्वर स्वरूप)
- सर्वोच्च आत्मा (परब्रह्म स्वरूप)

वेदों की उल्लेखनीय विशेषताओं में शामिल हैं:

- कालातीत और लेखकहीन
- शाश्वत और अनंत माना जाता है
- अपौरुषेयः के रूप में नामित, जिसका अर्थ है मानव मन या हाथों द्वारा प्रकट नहीं किया गया

परंपरा के अनुसार, वेदों को प्राचीन ऋषियों को ध्यान की गहन अवस्था में दिव्य रूप से प्रकट किया गया था, जो आध्यात्मिक विकास और आत्म-खोज के लिए कालातीत ज्ञान प्रदान करते हैं।" उनके उच्चारण को मंत्र कहा जाता था। मंत्र किसी अंतर्ज्ञान का परिणाम नहीं थे, बल्कि दिव्य दृष्टि (मंत्र दृष्टि) का परिणाम थे, जिसे मंत्र-दृष्टि कहा जाता है। उनके आंतरिक और बाहरी अर्थ मूल रूप से उन लोगों को जात थे, जिन्हें वे प्रकट हुए थे। इसलिए, कोई भी उन्हें तर्क या बुद्धि के आधार पर चुनौती नहीं दे सकता। वेदों से परे कोई अंतिम अधिकार नहीं है।

(परम्परागत तरीके के अनुसार यहाँ यह कहा गया है मगर वेदों की उत्पत्ति के विषय पर इस पुस्तक में बाद में, विशेष रूप से प्रश्न 81 में विशद रूप से चर्चा की गयी है।)

माना जाता है कि द्वापरयुग के अंत तक वेदों की शक्ति क्षीण होने लगी थी, क्योंकि मनुष्य की आयु कम, शक्ति कम और बुद्धि कम होने लगी थी। ब्रह्मा, रुद्र और अन्य देवताओं के कहने पर भगवान् विष्णु ने धर्म की रक्षा के लिए ऋषि पराशर और सत्यवती (कृष्ण द्वैपायन) के पुत्र के रूप में अवतार लिया।

ज्ञान का संपूर्ण सारांश केवल एक वेद है। महर्षि कृष्णद्वैपायन ने शिक्षण और सीखने में आसानी के लिए विषयों के आधार पर एक वेद को चार भागों में विभाजित किया। इस प्रकार ऋषि को वेद व्यास नाम मिला क्योंकि उन्होंने वेद को चार भागों में विभाजित किया था। यही कारण है कि वेदों को चार कहा जाता है। वे हैं ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद।

"प्रत्येक वेद में चार अलग-अलग खंड होते हैं:

1. **संहिता:** इसमें काव्यात्मक रूप में भजन और छंद (श्लोक) शामिल हैं (वेद का मुख्य भाग)।
 2. **ब्राह्मण:** गद्य खंड जो अनुष्ठानों, समारोहों और दार्शनिक चर्चाओं पर विस्तार से बताते हैं।
 3. **आरण्यक (कर्म कांड):** आध्यात्मिक विकास के लिए अनुष्ठानों, प्रथाओं और ध्यान पर ध्यान केंद्रित करता है, जिसमें क्रिया, कर्म और उपासना शामिल हैं।
 4. **उपनिषद (ज्ञान कांड):** आध्यात्मिक ज्ञान के वैज्ञानिक विश्लेषण और सिद्धांतों की खोज करता है, जिसे वेदांत के रूप में भी जाना जाता है।
- संक्षेप में, आरण्यक प्रक्रियात्मक पहलुओं पर मार्गदर्शन प्रदान करते हैं, जबकि उपनिषद आध्यात्मिक सत्य की गहन, दार्शनिक समझ पर प्रकाश डालते हैं।"

वेद (श्रुति)

1. **ऋग्वेद:** मानव इतिहास में पहली सामाजिक शिक्षा प्रणाली वेद व्यास महर्षि द्वारा शुरू की गई थी। वेद व्यास महर्षि ने ऋग्वेद पढ़ाने के लिए पैल महर्षि के नेतृत्व में ऋग्वेद शाखा (शाखा का अर्थ है विद्यालय) की शुरुआत की। ऋग्वेद के अध्ययन में इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र, वाणिज्य, अर्थशास्त्र आदि का वर्णन शामिल है।
ऋग्वेद को 10 मंडलों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक मंडल कई सूक्तों में विभाजित है। प्रत्येक सूक्त में कई मंत्र या ऋक होते हैं। शौनक की अनुवाकानुक्रमणी प्रणाली के अनुसार
 - (1) 10552 ऋकों को 1028 सूक्तों में व्यवस्थित किया गया है और
 - (2) 1028 सूक्तों को 10 मंडलों में व्यवस्थित किया गया है।ऋग्वेद में पाए जाने वाले महत्वपूर्ण **दार्शनिक सूक्तों** में शामिल हैं

नासदीय सूक्त - 10.129

पुरुष सूक्त - 10.10

हिरण्यगर्भ सूक्त - 1.121

वाक सूक्त (वाक सूक्तम) - 10.125

अस्य-वामिया सूक्त - 1.164 ॥

श्राद्ध सूक्त - 10.151॥

ऋग्वेद में पाए जाने वाले प्रमुख **अनुष्ठान सूक्तों** में शामिल हैं

सज्जान सूक्त - 10.191

दानस्तुति सूक्त - 10.107 एवं 117

अक्ष सूक्त - 10.34

विवाह सूक्त - 10.85

ऋग्वेद में पाए जाने वाले प्रमुख **कथा छंदों** में शामिल हैं..

विष्णु सूक्त - 1.154

सोम सूर्य विवाह सूक्त - 10.85

श्यावास्व सूक्त - 5.61

मण्डूक सूक्त - 7.103

इन्द्र वृत्र युद्ध सूक्त - 1.80, 2.12

ऋग्वेद में पाए जाने वाले महत्वपूर्ण **संवाद सूक्तों** में शामिल हैं...

पुरुरवा-उर्वशी संवाद-10.95

यम-यमी संवाद - 10.10

सरमा -पानी संवादा -10.108

विश्वामित्र-नाड़ी संवाद-3.33

इंद्र-मरुत संवाद - 1.165

अगस्त्य - लोपामुद्रा संवाद - 1.179

वसिष्ठ-सुदास संवाद-7.83

इंद्र-इंद्राणी-वृशकापि संवाद - 10.86

2. यजुर्वेद : वेद व्यास महर्षि ने यजुर्वेद पढ़ाने के लिए महर्षि वैशम्पाय के नेतृत्व में यजुर्वेद शाखा (शाखा का अर्थ है विद्यालय) शुरू की। इसकी दो मुख्य शाखाएँ हैं अर्थात् **शुक्ल यजुर्वेद** (सूर्यदेव द्वारा ऋषि याज्ञवल्क्य को सिखाया गया)। **कृष्ण यजुर्वेद** (वेद व्यास महर्षि द्वारा महर्षि वैशम्पायनन को सिखाया गया)। यहां विभिन्न यज्ञों से संबंधित मंत्रों का संग्रह है। यजुर्वेद का अध्ययन शस्त्र विद्या, देव पूजा, उपासना प्रक्रिया, वास्तुकला, इंजीनियरिंग आदि से संबंधित है।
कण्वम प्रणाली के अनुसार शुक्ल यजुर्वेद को (1) 2086 ऋक् (2) 328 अनुवाक् और (3) 40 मंडलों में व्यवस्थित किया गया है।

कृष्ण यजुर्वेद की संहिताएँ अब उपलब्ध हैं। वे तैथिरिया और मैत्रायानी हैं।

तैतिरीय संहिता

यह कृष्ण यजुर्वेद शाखा का प्रतिनिधित्व करता है। इसका खुलासा ऋषि वैसंबायनन के शिष्य ऋषि थिथिरी के माध्यम से हुआ था। इसमें 7 कांड, 44 प्रपाठक, 631 अनुवाक और 2198 कांडिका शामिल हैं।

मैत्रायणी संहिता

इसमें 4 कांड, 54 प्रपाठक और 3144 मंत्र हैं।

3. सामवेद: ऋषि व्यास ने सामवेद की शिक्षा देने के लिए ऋषि जैमिनी के नेतृत्व में सामवेद शाखा (शाखा का अर्थ है स्कूल) शुरू किया। सामवेद संगीत, नृत्य, कला और संस्कृति आदि के लिए है। सामवेद चार वेदों में सबसे छोटा है। इसका ऋग्वेद से गहरा संबंध है। यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि सामवेद की संहिता में ऋग्वेद संहिता के कई मंत्र शामिल हैं। ये मंत्र मुख्य रूप से ऋग्वेद के आठवें और नौवें मंडल से लिए गए हैं। सामवेद को केवल अनुष्ठान के लिए संकलित किया गया था। तो सामवेद उदगात्र पुजारी के लिए है जो यज्ञिका समारोह में साम का जाप करता है। इसके मंत्रों को संगीत समास या गीत कहा जाता है। जैमिनी के अनुसार - संगीत को साम कहा जाता है।

सामवेद के दो मुख्य भाग हैं:

(1) पूर्वार्चिका - पूर्वार्चिका में 6 अध्यायों में 640 मंत्र हैं।

(2) उत्तरार्चिका - इसमें 21 अध्याय (या 9 प्रपाठक) हैं और मंत्रों की संख्या 1225 है।

पूर्वार्चिका (640) और उत्तरार्चिका (1225) में मंत्रों की कुल संख्या 1875 है। इनमें से 1771 मंत्र ऋग्वेद से हैं, इसलिए सामवेद में केवल 104 मंत्र बताए जाते हैं।

सामवेद में सात स्वर हैं। नारदीय शिक्षा, पाणिनीय शिक्षा और याजवल्क्य शिक्षा के अनुसार, ये स्वर तीन मूल स्वरों - उदात्, अनुदात् और स्वरित से विकसित हुए हैं।

सामवेद का त्रिसप्तक। यह गायक की आवाज़ को दर्शाता है।

मंदा (निम्न) - निम्न

मध्य (मध्य) - मध्यम

तीव्र (उच्च) - उच्च

परंपरागत रूप से वेदों को 'वेद त्रय' कहा जाता है क्योंकि उनमें तीन प्रकार के मंत्र होते हैं - 1) पद्य रूप में ऋकाएँ, 2) गद्य रूप में मंत्र और 3) संगीतमय मंत्रों के लिए निर्धारित मंत्र।

4. अर्थर्ववेद : ऋषि वेद व्यास ने अर्थर्ववेद की शिक्षा देने के लिए ऋषि सुमंत के नेतृत्व में अर्थर्ववेद शाखा (शाखा का अर्थ है विद्यालय) की शुरुआत की। अर्थर्ववेद आध्यात्मिकता, धन, शाश्वत शुद्धता और मोक्ष के मार्ग की कुंजी है। जीवन एक सतत संघर्ष है। अर्थर्ववेद जीवन की लड़ाई जीतने के तरीके बताता है। अर्थर्ववेद युद्ध और शांति का वेद है। इसमें शरीर में शांति से रहने के लिए विभिन्न प्रकार की औषधियों का वर्णन है। इसमें परिवार में शांति कैसे बनाए रखें, इसके लिए भी दिव्य नुस्खे हैं। राष्ट्र में होने वाले कार्यों और राष्ट्र में शांति कैसे रह सकती है, इसका वर्णन है। यदि कोई राज्य की शांति को भंग करना चाहता है, तो उसका प्रतिरोध कैसे करें, दुश्मनों के हमलों से खुद को कैसे बचाएं और उनकी शरारतों को कैसे खत्म करें, इसका वर्णन अर्थर्ववेद में किया गया है। अर्थर्ववेद में विभिन्न वैज्ञानिक और तकनीकी विषयों से संबंधित ज्ञान शामिल है, जिनमें शामिल हैं:

- भौतिकी- रसायन विज्ञान- जीवन विज्ञान (जीव विज्ञान)- चिकित्सा विज्ञान (चिकित्सा, आयुर्वेद)- गणित
- वास्तुकला- इंजीनियरिंग- धातु विज्ञान- रक्षा और सैन्य विज्ञान- परमाणु ऊर्जा- रोबोटिक्स।

शौनक शाखा में अर्थर्ववेद के 20 कांडों में 730 सूक्त और लगभग 5987 मंत्र हैं।

प्रत्येक वेद में चार खंड होते हैं।

1. **संहिताएँ** - संहिताएँ श्लोक रूप और पद्य रूप में होती हैं।
2. **ब्राह्मण** - गद्य रूप में और जिसमें विषय को विस्तृत रूप से बताया जाता है, उसे ब्राह्मण कहा जाता है।
3. **आरण्यकम्** - आरण्यकम् कर्म कांड क्रिया या कर्म या उपासना या अनुष्ठान प्रक्रियाओं के विश्लेषण का हिस्सा हैं।
4. **उपनिषद् (वेदांतम्)** - ज्ञान कांडम्- आध्यात्मिक ज्ञान के सिद्धांत का वैज्ञानिक रूप से विश्लेषण करना भी उपनिषद् (वेदांतम्) कहलाता है।

उपनिषद् (श्रुति)

कहा जाता है कि लगभग 2000 ग्रंथ थे, जिनमें से 108 अब उपलब्ध हैं। इनमें से 10 सबसे महत्वपूर्ण हैं, जिन्हें शंकराचार्य जी ने दशोपनिषद् कहा है।

1. ईशावास्यम्,
2. कटम्,
3. केनम्,
4. प्रश्नम्,
5. मुण्डकम्,
6. मांडुक्यम्,
7. तैथिरियम्,
8. ऐतरेयम्,
9. चंदोक्यम्,
10. बृहदारण्यकम्

वेदांत/उपनिषद् प्रणाली को पांच उप-संप्रदायों (सिद्धांतों) में विभाजित किया गया है:

- **अद्वैत सिद्धांत** - यह श्री आदि शंकराचार्य द्वारा रचित है। सिद्धांत यह है कि आत्मा और ब्रह्म में कोई अंतर नहीं है। ब्रह्म सत्यम् जगत् मिथ्या इस सिद्धांत का संदेश है।
- **विशिष्टाद्वैत सिद्धांत** - श्री रामानुजाचार्य का विशिष्टाद्वैत, आत्मा ब्रह्म का एक हिस्सा है और इसलिए समान है, लेकिन समान नहीं है।
- **द्वैत सिद्धांत** - श्री मध्वाचार्य का द्वैत। जीवात्मा ब्रह्म से पूरी तरह अलग है।
- **द्वैताद्वैत का सिद्धांत-** द्वैताद्वैत / भेदाभेद सिद्धांत- इसके शिक्षक भास्कर, निम्बार्क और चैतन्य हैं। ब्रह्म जगत् से अलग है और व्यक्तिगत आत्मा (भेदम्) से भी। लेकिन फिर अलग (अभेदम्) नहीं है। भेदाभेद का सिद्धांत मानता है कि परम वास्तविकता न तो पूर्ण एकता है और न ही पूर्ण अनेकता, जैसा कि उपनिषदों में सिखाया गया है, बल्कि दोनों के आवश्यक संश्लेषण से संबंधित एक तीसरा पदार्थ है।
- **शुद्धाद्वैत सिद्धांत** - श्री वल्लभाचार्य का शुद्धाद्वैतम्। जीवात्मा और ब्रह्म, चिंगारी और आग की तरह हैं, जगत् वास्तविक है, जीवात्मा माया के कारण अज्ञान (अविद्या) से घिरी हुई है। यहां सिद्धांत यह है कि यदि इस बादल को हटा लिया जाए, तो आत्मा स्वयं सत्य का एहसास कर लेगी। वैदिक अध्ययन को सुगम और पूर्ण बनाने के लिए छह वेदांग हैं,

वेदांग:- वेदांग वैदिक मंत्रों की रचना का हिस्सा हैं। इन्हें जाने और अध्ययन किए बिना वेदों को समझना असंभव है। वे हैं...

1. **शिक्षा** - ध्वन्यात्मकता - वैदिक मंत्रों का उच्चारण (भाव)
2. **कल्प** - अनुष्ठान - यज्ञ, याग, उपासना, अनुष्ठानों में प्रत्येक वैदिक मंत्र के लिए अपनाई जाने वाली क्रिया, विधि, विधान
3. **व्याकरण** - व्याकरण - मंत्रों की संरचना, शब्दों का निर्माण और मूल अर्थ जानना।
4. **निरुक्त** - व्युत्पत्ति - शब्द का इतिहास, वैदिक संदर्भ के अनुसार शब्दों का अर्थ।
5. **ज्योतिष** - खगोल विज्ञान - स्थान-समय, मुहूर्त, नक्षत्र, तिथि, पक्ष, महीना, ऋतु, अयन, संवत्सर और युग जहाँ विशिष्ट मंत्रों का उपयोग किया जाना चाहिए। यज्ञ और याग करने के लिए उपयुक्त समय और स्थान का ज्ञान।

6. छंद - माप - वेद छंदों में बंधे हैं। छंद अपने सही उच्चारण के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वेद ध्वनि या उनके उच्चारण के तरीके पर बहुत निर्भर करते हैं। यह मंत्रों के मात्रात्मक रूपों और गुणों को निर्धारित करने का विज्ञान है।

प्रत्येक वेद के **उपवेद** हैं, **उपवेद** वेदों के पूरक हैं और वैदिक शिक्षाओं के सांस्कृतिक और सामाजिक क्षेत्र के लिए अधिक विशिष्ट व्यावहारिक दिशा-निर्देश देते हैं। **उपवेदों** को वेदों का हिस्सा माना जाता है..वे हैं..

1. अर्थशास्त्र (ऋग्वेद) - अर्थशास्त्र शब्द का अर्थ आर्थिक मामलों के विज्ञान के साथ-साथ शासन का विज्ञान भी है। अर्थशास्त्र राज्य प्रशासन, नागरिक विज्ञान, आर्थिक नीति और सैन्य रणनीति की रणनीति पर एक प्राचीन संस्कृत ग्रंथ है। अर्थशास्त्र 15 अध्यायों में 195 शीर्षकों से बना है; हालाँकि, चूँकि कुछ दस्तावेजों में कई उप-शीर्षक हैं, इसमें शामिल विषयों की संख्या दो सौ के करीब है। राज्य शिल्प, कूटनीति, जासूसी, युद्ध, शांति, आपराधिक न्याय, अपराध विज्ञान, सिविल-आपराधिक प्रक्रिया, शीर्षक के नाम से ही यह स्पष्ट हो जाता है कि कौटिल्य ने सामाजिक-सांस्कृतिक शिष्टाचार, विवाह, संपत्ति के अधिकार, व्यापार और वाणिज्यिक संबंध, प्रशासन का विभाजन, सामान्य आचार संहिता आदि जैसे किसी भी तत्व को इस प्रामाणिक कार्य से बाहर नहीं रखा है। यह अर्थशास्त्र प्राचीन आचार्यों द्वारा भूमि अधिग्रहण और प्रबंधन पर आधारित रचित लगभग सभी अर्थशास्त्रों का संकलन है।

2. धनुर्वेद (यजुर्वेद) - यह उपवेद नागरिक और सैन्य रक्षा, युद्ध और राजनीति की व्याख्या करता है। प्राचीन काल में विजय दिलाने के लिए प्रसिद्ध युद्ध कला अब अस्पष्ट हो गई है और दुर्भाग्य से इसे धनुष और बाण की कला के रूप में संदर्भित किया जाता है। संहिताओं और ब्राह्मणों से लेकर, इस विज्ञान, अष्टमी, वज्र, शतग्नि, नागस्त्र, वरुणास्त्र, अग्नियास्त्र और ब्रह्मास्त्र जैसे युद्ध हथियारों के उपयोग की शर्तें और निर्माण की विधियाँ उल्लेखित हैं। इससे वैदिक काल में भी उनके उपयोग का प्रमाण मिलता है। बाद में रामायण और महाभारत इस विज्ञान और कला पर अच्छी रोशनी डालते हैं, खासकर युद्धों के वर्णन में। जैसा कि श्रुतियों, स्मृतियों और पुराणों में उल्लेख किया गया है, यह विज्ञान ब्रह्मा से उत्पन्न हुआ है। ऋग्वेद सूक्त (9.112) में इंद्र, वरुण, अग्नि और रुद्र की स्तुति के अलावा धनुष और बाण की कला (बाणों को पीसना और उनसे पत्थर तराशना) का वर्णन किया गया है।

धनुर्वेद के सबसे पुराने ग्रंथ उपलब्ध नहीं हैं, लेकिन कुछ जात ग्रंथ धनुर्विधि, द्रौण विद्या, कोदंड मंडनम और धनुर्वेद संहिता हैं।

3. गंधर्ववेद (सामवेद) - गंधर्ववेद सामवेद से निकला संगीत का विज्ञान है। राणायनी से लेकर जैमिनी तक 13 ऋषियों ने भारतवर्ष में गंधर्व विद्या दी है, जिसे बाद में महर्षि जैमिनी और उनके शिष्यों ने विकसित किया। यह प्राचीन वेद गणविद्या का मूल था जो शास्त्रीय संगीत परंपरा के रूप में फैला, जैसा कि नारद शिक्षा से स्पष्ट है। यमलाष्टक तंत्र में गंधर्ववेद (36,000 श्लोकों से युक्त) का पाठ वर्णित है, लेकिन यह अब उपलब्ध नहीं है। गंधर्ववेद को आज सभी 64 कलाओं के एक भाग के रूप में पढ़ाया जाता है।

4. आयुर्वेद- (ऋग्वेद और अर्थर्ववेद)- आयुर्वेद का संबंध दीर्घायु के रहस्य और रोगों को ठीक करने वाली औषधियों से है। किसी भी विज्ञान के दो भाग होते हैं- सिद्धांत (सैद्धांतिक पहलू) और मूल नियम। फिर कर्म भाग (व्यावहारिक अनुप्रयोग) उन नियमों के व्यावहारिक उपयोग को परिभाषित करता है। आयुर्वेद के अध्ययन में रोगों को ठीक करने में सिद्धांत और व्यवहार दोनों शामिल हैं। आयुर्वेद के प्रवर्तक धन्वंतरि को माना जाता है, जो समुद्र मंथन के दौरान एक खजाने के रूप में उत्पन्न हुए थे। उनके अलावा, अन्य महत्वपूर्ण नाम ऐतरेय, कश्यप, हरित, अग्निवेश और श्वेदमुनि के हैं। वर्तमान में आयुर्वेद के तीन मुख्य ग्रंथ हैं: चरक संहिता, सुश्रुत संहिता और अष्टांग हृदय। इन तीनों ग्रंथों को सामूहिक रूप से बृहत्-त्रय कहा जाता है। पतंजलि ने भी आयुर्वेद पर पुस्तकें लिखी हैं।

5. स्थापत्य वेद (अर्थर्ववेद)- अर्थशास्त्र के बजाय, कुछ विद्वान शिल्पवेद या स्थापत्यवेद को उपवेद मानते हैं। यह वास्तुकला और विभिन्न कलाओं से संबंधित है। मूर्तिकला मूल रूप से जल निकायों (ताङ्का), विश्राम स्थलों (आराम), मंदिरों (आलयम) आदि सहित वास्तुशिल्प स्थलों से जुड़ी थी। इसे आमतौर पर वास्तु कहा जाता है, यह स्वस्थ पृथकी और स्थानिक ऊर्जा लाने के लिए संरचनाओं के उचित डिजाइन को दर्शाता है।

इसके बाद **पुराण** आते हैं। यहाँ वेदों के विषयों को ऐतिहासिक रूप से रूपांतरित करके कहानियों के रूप में प्रस्तुत किया गया है। कुल अठारह पुराण और इतने ही उप-पुराण हैं।

पुराण अष्टादश पुराण

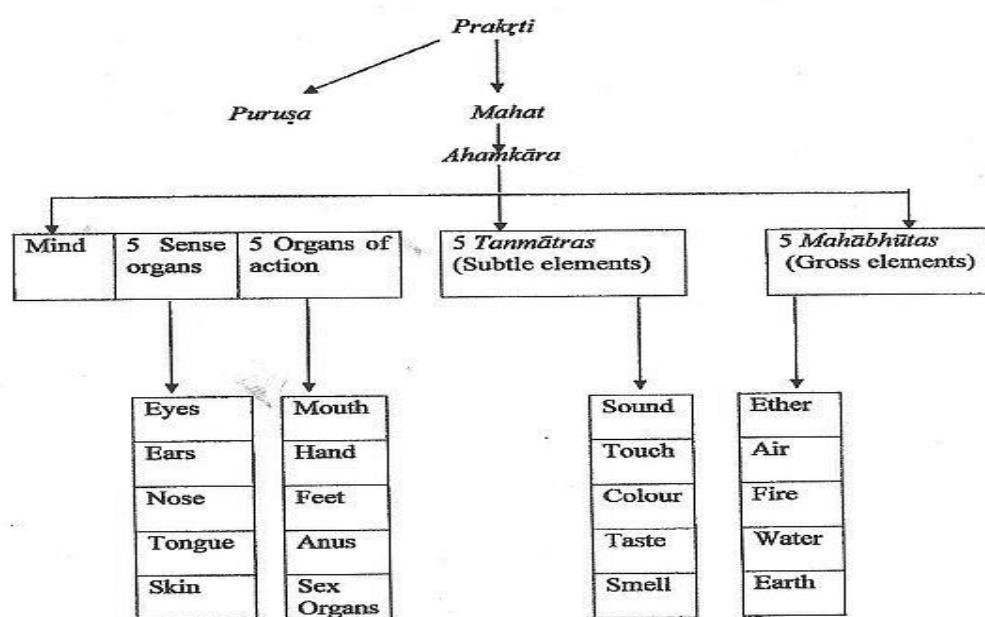
1. ब्रह्म पुराण
2. विष्णु पुराण
3. शिव पुराण
4. भागवत पुराण
5. पद्म पुराण
6. नारद पुराण
7. मार्कण्डेय पुराण
8. अग्नि पुराण
9. भविष्यपुराणम्
10. लिंग पुराण
11. वराह पुराण
12. स्कंदपुराण
13. वामन पुराण
14. कूर्म पुराण
15. मत्स्यपुराणम्
16. गरुड़ पुराण
17. ब्रह्माण्ड पुराण
18. ब्रह्मवैवर्तकपुराणम्

अब **दर्शन**, ये संख्या में छह हैं। इसलिए इन्हें **षट्दर्शन** कहा जाता है। यह भी कहा जा सकता है कि ये वास्तव में आध्यात्मिक, भौतिक और आदिम तीन प्रकार के दर्द को खत्म करने के साधन खोजने के उपकरण हैं, ताकि जीवन और मोक्ष की सच्चाई या स्वतंत्रता तक पहुंचा जा सके। इनमें से दो, योग और मीमांसा, व्यावहारिक स्तर की साधना, क्रियाएं हैं, जो कर्मकांड के साथ अंतिम सत्य की ओर ले जाती हैं।

अन्य चार हैं सांख्य, न्याय, वैशेषिक और वेदांत। ये बुद्धि और तर्क, तर्क, चर्चा, उपदेशों, कारण-और-प्रभाव स्पष्टीकरण और ज्ञान के आधार पर चीजों का विश्लेषण और आलोचना करके सत्य तक पहुंचने के तरीके हैं। उनके शिक्षकों ने पहले से ही इनके बारे में कुछ निष्कर्ष निकाले हैं। हम उनकी अंतर्दृष्टि का विस्तार कर सकते हैं, उन्हें परिष्कृत कर सकते हैं या उनकी सटीकता को सत्यापित कर सकते हैं।

षडदर्शन

1. सांख्य दर्शनम - कपिल मुनि - कपिल मुनि ने प्राचीन सांख्य दर्शनम को औपचारिक रूप दिया और व्यवस्थित किया, जिससे यह विद्वानों और छात्रों के लिए एक सुसंगत ढांचा बन गया। सांख्य शब्द का अर्थ है संख्या। यह भौतिकी के आधुनिक विज्ञान को संदर्भित करता है। यहाँ प्रकृति की वस्तुओं को चार भागों में विभाजित किया गया है, ठोस, तरल, गैस और प्लाज्मा। इसके अलावा, सांख्य दर्शन में, वस्तुओं को 24 मूलभूत सिद्धांतों या तत्त्वों में वर्गीकृत किया गया है। सांख्य का अंतिम लक्ष्य आत्मा या स्वयं की मुक्ति प्राप्त करना है। यह मुक्ति सृष्टि के 24 मौलिक सिद्धांतों की गहन समझ प्राप्त करने और यह पहचानने के माध्यम से होती है कि वे पारलौकिक प्रक्रिया को कैसे आगे बढ़ाते हैं।



इसमें पुरुष और इन सिद्धांतों के बीच अंतर को समझना और यह समझना भी शामिल है कि पुरुष इस प्रक्रिया से अछूती और असंबद्ध रहती है। सिद्धांतों को साबित करने के लिए विभिन्न प्रकार के साक्ष्यों

का उपयोग किया जाता है। सांख्य दर्शन व्यवस्थित गणना पर आधारित है और ज्ञान प्राप्त करने के लिए छह उपदेशों में से तीन का उपयोग करता है। वे हैं..

क) **प्रत्यक्ष प्रमाणः (धारणा)** - इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त प्रत्यक्ष अनुभव या तत्काल ज्ञान।

ख) **अनुमान प्रमाणः (अनुमान)** - अप्रत्यक्ष ज्ञान या तर्क, जहां अवलोकन के आधार पर निष्कर्ष निकाला जाता है; उदाहरण के लिए, धुआं देखना और आग की उपस्थिति का अनुमान लगाना।

ग) **आप्तवचन (प्रामाणिक गवाही)** - विश्वसनीय स्रोतों से प्राप्त ज्ञान, जिसमें शामिल हैं:

- शास्त्र (वेद, उपनिषद)
- प्रबुद्ध शिक्षक (ऋषि, गुरु)
- भरोसेमंद विशेषज्ञ

2. **योगदर्शनम्-पतंजलि महर्षि** - पतंजलि महर्षि ने प्राचीन योगदर्शनम् को सीखने और सिखाने के लिए औपचारिक और व्यवस्थित किया। योग दर्शन वास्तव में सत्य की खोज करने का सबसे तेज़ साधन है। क्योंकि अन्य दर्शनों में, किसी निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए बुद्धि, इंद्रियों और मन का उपयोग करके चीजों की समीक्षा, विश्लेषण, विश्लेषण और बहस की जाती है। जिस तरह मिठास का स्वाद लेने से उसका सत्य पता चलता है, उसी तरह योग विज्ञान बौद्धिक समझ और मानसिक निर्माणों से परे पारलौकिक सत्य के लिए एक सीधा अनुभवात्मक मार्ग प्रदान करता है। यह प्रत्यक्ष अनुभूति, या 'स्वाद लेना' व्यक्ति को परम वास्तविकता का एहसास कराता है। सत्य और मोक्ष तक पहुँचने के लिए यहाँ आठ चरण दिए गए हैं। इसलिए, इस विज्ञान को अष्टांग योग भी कहा जाता है। सत्य और मोक्ष के लिए आठ चरण मार्ग।

अष्टांग योग, जिसका अर्थ है "आठ-अंग योग", सत्य और मुक्ति प्राप्त करने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करता है। इसका मूल सिद्धांत है:

चित वृत्ति निरोध "मानसिक संशोधनों का उन्मूलन सत्य को प्रकट करता है।"

आठ चरण:

1. यम (सार्वभौमिक नैतिकता)
2. नियम (व्यक्तिगत पालन)
3. आसन (आसन)
4. प्राणायाम (सांस पर नियंत्रण)
5. प्रत्याहार (इंद्रिय निरोध)
6. धारणा (एकाग्रता)
7. ध्यान (ध्यान)
8. समाधि (ईश्वर से मिलन)

इन चरणों का पालन करके और मन की तरंगों को शांत करके (चित वृत्ति निरोध), व्यक्ति को प्राप्त होता है: आंतरिक शांति, स्पष्टता, आत्म-साक्षात्कार, मुक्ति.

3. **न्यायदर्शनम - गौतम मुनि** - गौतम मुनि ने प्राचीन न्यायदर्शन को औपचारिक और व्यवस्थित किया, जिससे यह विद्वानों और छात्रों के लिए एक सुसंगत रूपरेखा बन गया। - 'न्याय' शब्द का अर्थ आम तौर पर 'सही' या 'धार्मिकता' होता है। न्याय शास्त्र सही निर्णय या सही तर्क का विज्ञान है। न्याय मुख्य रूप से बौद्धिक, विश्लेषणात्मक, तार्किक और ज्ञानमीमांसा प्रकृति का है। इसे तर्कशास्त्र या बहस का विज्ञान भी कहा जाता है। न्याय का सिद्धांत विश्लेषण की मदद से अपने तथ्यों को वैध और तार्किक तरीके से प्रस्तुत करना और अपने विचारों के खिलाफ विरोधियों की स्थिति का व्यवस्थित रूप से बचाव करना है। इस सिद्धांत का पालन आज भी हमारी अदालतों में किया जाता है।

न्याय दर्शन सत्य तक पहुँचने के लिए चार उपदेशों का उपयोग करता है। वे हैं

- 1) **प्रत्यक्ष** (इंद्रियों के माध्यम से अनुभूति)
- 2) **अनुमान** (परिकल्पना की सच्चाई को समझना)
- 3) **उपमान** (सत्य की तुलना करना और समझना)
- 4) **आप्त वचन** या शब्द (शब्द या मौखिक गवाही)। इसमें वैदिक रहस्योद्घाटन शामिल है।

न्याय दर्शन अनुमान (परिकल्पना) के आधार पर ईश्वर के अस्तित्व को स्थापित करने का प्रयास करता है। यह कहता है कि ईश्वर के नियंत्रण में मनुष्य के कर्म अद्विष्ट (भाग्य) नामक परिणाम उत्पन्न करते हैं। वे संसार की रचना, पालन और संहार के अंतिम कारण हैं। वे अद्विष्ट के कार्य की देखरेख करते हैं। वे द्वष्टि के मार्ग को नहीं बदलते, बल्कि उसकी क्रिया को सक्षम बनाते हैं। वे मानव कर्मों के फल देने वाले हैं। वे सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक और सर्वज्ञ हैं, जिसके माध्यम से वे संसार का मार्गदर्शन और नियंत्रण करते हैं। ईश्वर एक व्यक्तित्व है। सभी भौतिक वस्तुएँ मानव जीवन की भौतिक और आध्यात्मिक गतिविधियों के लिए वाहन का काम करती हैं। न्याय प्रणाली मानती है कि ईश्वर की कृपा के बिना कोई भी जीव सच्चा ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता या मोक्ष की स्थिति तक नहीं पहुँच सकता।

4. वैशेषिकदर्शनम्- कणादमुनि- वैशेषिक दर्शन के संस्थापक ऋषि कणादमुनि माने जाते हैं। इसकी विधि न्याय दर्शन की ही तरह है। अंतर यह है कि वैशेषिक दर्शन में परमाणु (परमाणु) को प्रकृति का मूल तत्व माना गया है। सृष्टि के आरंभ में प्रकृति परमाणु से विकसित होती है और प्रलय में प्रकृति परमाणु में विलीन हो जाती है। यहां यह भाव है कि यह परमाणु अविभाज्य है। दूसरा यह दर्शन सत्य तक पहुँचने के लिए केवल दो नियमों को स्वीकार करता है, पहला प्रत्यक्ष (इन्द्रियों के माध्यम से अनुभूति) और दूसरा अनुमान (परिकल्पना के सत्य को समझना)। यद्यपि वैशेषिका में ईश्वर के बारे में अधिक चर्चा नहीं की गई है, लेकिन यह दर्शन मानता है कि ईश्वर (दृश्य शक्ति) ही संसार का प्रभावी कारण है। शाश्वत परमाणु प्रकृति के भौतिक कारण हैं।

वैशेषिक विचारधारा के अनुसार, पदार्थ वह चीज है जिसे सोचा और नाम दिया जा सकता है (पदार्थ को सात भागों में विभाजित किया गया है, जिनमें से प्रथम पदार्थ (द्रव्य) के नौ प्रकार हैं)।

Padartha (categories)

1. Substance (Dravya)
2. Quality (Guna)
3. Action (Karma)
4. Generality (Samanya)
5. Particularity (Vishesa)
6. Inherence (Samavaya)
7. Non –being (Abhava)

सभी प्रत्यक्ष और नाम योग्य वस्तुएं तथा अनुभव की सभी वस्तुएं पदार्थ हैं। भौतिक वस्तुओं का ज्ञान परम कल्याण की प्राप्ति का साधन है। हम जो जगत देखते हैं और उसके प्रवचनों को पूर्ण रूप से समझकर ज्ञान और मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है। वैशेषिक कहते हैं कि सुख और दुख आत्मा, इन्द्रिय,

मन और पदार्थ के संपर्क से उत्पन्न होते हैं। सुख से इच्छा उत्पन्न होती है। एक सुख से उसी प्रकार के सुख या उसे प्राप्त करने के साधन के लिए राग या इच्छा उत्पन्न होती है। यह आगे बंधन का कारण बनती है। इच्छा (राग), द्वेष और वासना (मोह) को दोष (दोष) कहा जाता है क्योंकि ये कर्म करने वाले को इस जगत (दुःख) से बांधते हैं। आत्मज्ञान का सहज ज्ञान मिथ्या ज्ञान को नष्ट कर देता है। परिणामस्वरूप राग, द्वेष, वासना और अन्य बुराइयां गायब हो जाती हैं। तब क्रिया भी गायब हो जाती है। तब कर्म जन्म नहीं होता। उसका मोक्ष होता है।

5. पूर्व मीमांसादर्शन (मीमांसादर्शन) - जैमिनी महर्षि - ऋषि जैमिनी - ऋषि जैमिनी को मीमांसा दर्शन का संस्थापक माना जाता है। मीमांसा वेदों के अनुष्ठानिक खंड की जांच है। जैमिनी की व्याख्या की पद्धति प्रत्येक मनुष्य के तीन कर्तव्यों पर आधारित है। देवरुणं ऋषिरुणं, पितृरुणिम्। जैमिनी मोक्ष में विश्वास नहीं करते हैं। वह स्वर्ग के अस्तित्व में विश्वास करते हैं जिसे वेदों में वर्णित उपासना, अनुष्ठान, होम और यागादि क्रियाकांडम का पालन करके प्राप्त किया जा सकता है। बाद के युग के कुछ मीमांसा पंडितों का कहना है कि सभी कार्यों को भगवान या भगवान के सर्वोच्च व्यक्तित्व को अर्पित करके किया जाना चाहिए। यहां तात्पर्य सत्य की खोज करना है।

6. उत्तरमीमांसदर्शनम् (वेदांतदर्शनम्) - बादरायणमहर्षि - वेदांत शब्द दो संस्कृत शब्दों से मिलकर बना है: 'वेद' और 'अंत' जिसका अर्थ है वेदानं अंतः। या 'वेदों का अंत', वास्तव में, वेदांत का अधिकांश भाग चार वेदों के अंत में पाया जाता है। वेदांत या ज्ञान मीमांसा आध्यात्मिक ज्ञान के बारे में उपनिषदों या वेदों के दार्शनिक ज्ञान पर चर्चा करने और इसके सत्य की खोज करने का एक तरीका है। वेदांत ब्रह्म और आत्मा, ईश्वर की खोज है। शास्त्रों को ज्ञान का मुख्य विश्वसनीय स्रोत माना जाता है। उपनिषद, भगवद गीता और ब्रह्म सूत्र (जिसे प्रस्थानन्यम के नाम से जाना जाता है) को यहाँ मूल शास्त्र माना जाता है।

बादरायण के ब्रह्म सूत्रों ने उपनिषदों की सर्वसम्मत शिक्षाओं को प्रस्तुत करने और वेदान्त के माध्यम से संभावित और वास्तविक आपत्तियों के विरुद्ध उनका बचाव करने का प्रयास किया। उनके सूत्र छोटे थे और विभिन्न व्याख्याओं के अधीन थे। प्रत्येक वेदान्तिक विचार के सिद्धांतों को अपने स्वयं के प्रकाश

में समझाने के लिए विभिन्न टिप्पणियाँ लिखी गईं। उनमें से प्रत्येक ने प्रकट शास्त्रों (श्रुति) और सूत्रों के अनुरूप एक ही स्थिति को सही ठहराने की कोशिश की। प्रत्येक प्रमुख टिप्पणी (आष्ट्य) का लेखक वेदान्त के एक विशेष स्कूल का संस्थापक बन गया। हमारे पास शंकराचार्य (अद्वैत प्रणाली), रामानुजाचार्य (विशिष्टाद्वैत), मध्वाचार्य (द्वैत), और बाद के प्रतिपादकों जैसे वल्लभाचार्य (शुद्धाद्वैत), निम्बार्क, भास्कर और चैतन्य प्रभु (भेदाभेद) द्वारा समर्थित वेदान्त के विभिन्न स्कूल हैं। प्रथाओं को आत्मा और ब्रह्म के बीच के संबंध के आधार पर नाम दिया गया है।

अब **सूत्र**, इन षड्-दर्शनों को भी सूत्र कहा जाता है क्योंकि ये सूत्रों में लिखे गए हैं। इनके अलावा और भी कई **सूत्र** हैं।

सूत्रः

कल्प सूत्र,

स्मार्त सूत्र

सरौत सूत्र

धर्म सूत्र

गृह्य सूत्र

शुल्ब सूत्र

ब्रह्म सूत्र

अर्थ सूत्र

कामसूत्र

शिव सूत्र

नारद भक्ति सूत्र आदि।

अब **दो महाकाव्य हैं। वाल्मीकि रामायण और व्यास महाभारत।** तीसरा महाकाव्य, '**दिग्विजयम्**', अभी रचना की प्रक्रिया में है। भगवद्‌गीता महाभारत का एक हिस्सा है और संपूर्ण सनातन दर्शन का सबसे सूक्ष्म ज्ञान देती है।

भगवद गीता: श्रीमद्भगवद गीता महाभारत के भीष्म पर्व के अध्याय 25 से 45 तक है। 18 अध्याय, 700 श्लोक। कई गीता पुस्तकों में 701 श्लोक पाए जाते हैं। यदि हम भगवद गीता के तेरहवें अध्याय की शुरुआत में अर्जुन द्वारा पूछे गए प्रश्न के रूप में एक श्लोक को छोड़ दें तो श्लोकों की संख्या 700 है ("प्राकृतं पुरुषं चैव क्षेत्रं क्षेत्रजन्मेव च एतद्वेदितुमिच्छामि ज्ञानं ज्ञानं च केशव") जो शंकर के गीता संस्करण में शामिल नहीं है। वहाँ शंकर भाष्यम् अर्जुन के प्रश्न को छोड़कर कृष्ण के उत्तर से शुरू होता है।

महाकाव्य

1. रामायण
2. महाभारत

महाकाव्य पुराणों को पंचमवेद भी कहा जाता है।

रामायण

रामायण में सात सर्ग हैं

1. बालकाण्ड
2. अयोध्या
3. अरण्यकाण्ड
4. किञ्चिकन्धाकाण्ड
5. सुन्दरकाण्ड
6. युधा कांड
7. उथराकांड

महाभारत :-

महाभारत में 18 पर्व हैं।

1. आदिपर्वम्
2. सभा पर्व

3. अरण्य पर्व
4. विराट पर्व
5. उद्योग पर्व
6. भीष्म पर्व
7. द्रोण पर्व
8. कर्णपर्वम्
9. शल्य पर्वम्
10. सौन्धिकपर्वम्
11. स्त्रीपर्वम्
12. शांति पर्व
13. अनुशासन पर्व
14. अश्वमेधिकपर्वम्
15. आश्रमवास पर्व
16. मौसल पर्व
17. महाप्रस्थान पर्व
18. स्वर्गारोहणपर्वम्

श्रीमद्भागवत गीता

(18 अध्याय)

अध्याय 1: अर्जुन विषाद योग

अध्याय 2: सांख्य योग

अध्याय 3: कर्म योग

अध्याय 4: ज्ञान योग

अध्याय 5: कर्म संन्यास योग

अध्याय 6: ध्यान योग

अध्याय 7: विज्ञान योग

अध्याय 8: अक्षर परब्रह्म योग

अध्याय 9: राज विद्या योग

अध्याय 10: विभूति योग

अध्याय 11: विश्वरूप संदर्शन योग

अध्याय 12: भक्ति योग

अध्याय 13: क्षेत्र क्षेत्रज्ञ विभाग योग

अध्याय 14: गुण त्रय विभाग योग

अध्याय 15: पुरुषोत्तम योग

अध्याय 16: दैवासुर संपद विभाग योग

अध्याय 17: श्रद्धा त्रय विभाग योग

अध्याय 18: मोक्ष संन्यास योग

स्मृतियाँ

जो कुछ बचा है वह स्मृतियाँ हैं। स्मृतियों को हिंदू धर्मशास्त्र का एक अलग हिस्सा माना जाता है। ये भारतीयों के दैनिक प्रवचन और संस्कृति का हिस्सा हैं।

23 मुख्य जात स्मृतियाँ या धर्म शास्त्र हैं। सबसे महत्वपूर्ण मनु, याज्ञवल्क्य और पराशर के हैं। अन्य बीस विष्णु, दक्ष, संवर्त, व्यास, हरिता, शततप, वशिष्ठ, यम, आपस्तंब, गौतम, देवल, शंख, लिखिता, उशना, अत्रि, अंगिरस, काथ्यायन, ब्रह्मस्पति, शौनक और शांडिल्य हैं।

आगम या वैदिक आगम या तंत्र शास्त्रः

वेदों द्वारा दिखाए गए लक्ष्य तक पहुँचने के लिए, हमारे पूर्वज दार्शनिकों ने हमें कुछ रास्ते भी दिखाए हैं जो आगम हैं। आगम का अर्थ है उत्तरा हुआ। इन्हें वैदिक आगम भी कहा जाता है क्योंकि ये वेदों से उत्तरा हुआ हैं। एक सुंदर सादृश्य देने के लिए, यदि वेद मार्ग हैं, तो आगम घोड़े हैं, लक्ष्य तक पहुँचने के

लिए सुगम और तेज़ वाहन/उपकरण/आदेश/नियति/उपाय/रणनीतियाँ। इन्हें अभ्यास कहा जाता है। इसे तंत्र शास्त्र भी कहा जाता है क्योंकि यह तत्र ही पुरुषार्थ साधना और फिर मोक्ष की ओर ले जाता है। तंत्र पर कई ग्रंथ लिखे गए हैं, खासकर संस्कृत में लिखे गए, जिन्हें तंत्र, आगम, निगम, यामलम, दमरम जैसे विभिन्न नामों से जाना जाता है।

आगम/तंत्र शास्त्रों को आम तौर पर **तीन श्रेणियों** में विभाजित किया जाता है:-

1. शैव आगम:- शिव आगम को भगवान शिव द्वारा माता पार्वती को गुरु के रूप में दिया गया जान कहा जाता है। शैव आगम 28 हैं।

2. शाक्त आगम:- इसे आम तौर पर तंत्र शास्त्र और निगम शास्त्र के रूप में जाना जाता है। शाक्त आगम माता पार्वती द्वारा गुरु के रूप में बताया गया रहस्य है। शाक्तेय आगम 77 हैं।

3. वैष्णव आगम:- वैष्णव आगम हिंदू धार्मिक ग्रंथ हैं जो हिंदू धर्म के शास्त्रीय स्कूलों में से एक वैष्णववाद के दर्शन में विश्वास करने वालों के लिए पूजा के सैद्धांतिक और व्यावहारिक पहलुओं को कवर करते हैं। 215 वैष्णव आगम हैं। इसे संहिता और पंचरात्र के नाम से भी जाना जाता है।

इनके अलावा **सौर आगम** भगवान सूर्य की पूजा से संबंधित है। **गणपत्य आगम** भगवान गणेश की पूजा से संबंधित है। **कुमार आगम** भगवान स्कंद या भगवान षण्मुख या कुमारस्वामी की पूजा से संबंधित है। **भैरव आगम** और **यक्षभुतादि आगम** भी हैं।

ये हिंदू दर्शन की नींव हैं। महान ऋषि-समकक्ष आचार्यों द्वारा विभिन्न भाषाओं में इन मूल ग्रंथों की अवधारणाओं का विश्लेषण और व्याख्या करने वाले लाखों अन्य ग्रंथ हैं।

"हिन्दू धर्म का अध्ययन (पंडितः)" खंड के अध्ययन का विषय उपरोक्त सूची में से अपनी पसंद के किसी भी भाग का अध्ययन करना है। उदाहरण के लिए

हिंदू धर्म का अध्ययन (ऋग्वेद पंडितः)

हिंदू धर्म का अध्ययन (सामवेद पंडितः)

हिंदू धर्म का अध्ययन (भागवत पंडितः)

हिंदू धर्म का अध्ययन (दर्शन पंडितः)

हिंदू धर्म का अध्ययन (योग पंडिताः)

हिंदू धर्म का अध्ययन (ज्योतिष पंडितः)

हिंदू धर्म का अध्ययन (आयुर्वेदिक पंडिताः)

हिंदू धर्म का अध्ययन (स्थप्त्यवेदा पंडिताः)

हिंदू धर्म का अध्ययन (उपनिषद पंडिताः)

हिंदू धर्म का अध्ययन (भविष्यपुराण पंडितः)

हिंदू धर्म का अध्ययन (ब्रह्म सूत्र पंडितः)

हिंदू धर्म का अध्ययन (श्रीमद्भगवदगीता पंडिताः)

हिंदू धर्म का अध्ययन (द्वैत सिद्धांत पंडिताः)

हिंदू धर्म का अध्ययन (शैवागम पंडिताः)

हिंदू धर्म का अध्ययन (वैष्णवगामा पंडिताः) आदि।

(पी.एम.श्रीनिवासन मेमोरियल, स्नेहराज फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित)

प्रश्न-14) हिंदू इतिहास पर एक नज़र

उत्तर : हिंदू इतिहास सार्वभौमिक ब्रह्मांड का इतिहास भी है क्योंकि पूरे ब्रह्मांड में एकमात्र धर्म जो अस्तित्व में था वह हिंदू धर्म था। यदि हम इसका इतिहास बताना चाहते हैं, तो हमें 155.5 ट्रिलियन वर्ष (155.5×10^{12} वर्ष) का इतिहास बताना होगा। साथ ही, प्राचीन कालक्रम योजना, जिसे भारतीय भूल गए हैं, उसे याद रखना होगा। यह इस प्रकार है, थसरेणु, तृतीया, वेध, लव, निमिष, क्षण, काष्ठा, विनाजिका, लघु, नाजिका, मुहूर्तम, यम, तिथि या दिन, पक्ष, महीना, ऋतु, अयनम, वर्ष, देववर्ष (360 मानव वर्ष) या पितृ वर्ष, युग (कृतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग, कलियुग), महायुग (एक चतुर्भुज युग), मन्वंतर, कल्प, ब्रह्म दिवस, ब्रह्म मास, ब्रह्म वर्ष, परार्ध, परा या महाकल्प।

एक कलियुग = 432000 मानव वर्ष

एक द्वापरयुग = 864000 मानव वर्ष

एक त्रेता युग = 1296000 मानव वर्ष

एक कृत युग = 1728000 मानव वर्ष

एक महायुग = एक चतुर युग = 4320000 मानव वर्ष

एक मन्वंतरम् = 71 महायुग

एक कल्प = 14 मन्वन्तर = 1000 महायुग

ब्रह्मा दिवस = दो कल्प = 2000 महायुग

परा या एक महाकल्प = एक ब्रह्म आयुस = $(2000 \times 4320000 \times 360 \times 100) =$

311,040,000,000,000 वर्ष = 311.04 ट्रिलिन वर्ष।

यह ब्रह्मा का 51वाँ वर्ष है। हम वर्तमान ब्रह्मा के महाकल्प के दूसरे परार्ध के प्रथम ब्रह्मा वर्ष के प्रथम कल्प में रह रहे हैं। लगभग 155.5 ट्रिलिन वर्ष पूर्व वर्तमान ब्रह्मा ने सृष्टि रचना के अपने कार्य की शुरुआत की थी।

इस कल्प का नाम श्वेतवाराह कल्प है। श्वेतवाराह कल्प के छह मन्वंतर बीत चुके हैं। सातवें वैवस्वत मन्वंतर के सभी सत्ताईस महायुग बीत चुके हैं। हम अब 28वें महायुग में रह रहे हैं। कृतयुग, त्रेतायुग, द्वापर युग के बाद अब कलियुग है। इस प्रकार हम अब कल्प के सातवें वैवस्वत मन्वन्तर के 28वें कलियुग में रह रहे हैं।

वर्तमान कलियुग की शुरुआत 3102 ईसा पूर्व में हुई थी। यह 17 और 18 फरवरी की मध्य रात्रि है। या इस कलियुग (ईस्वी सन् 2024) की शुरुआत से 5125 वर्ष बीत चुके हैं। संक्षेप में हम अब श्वेतवराह कल्प के 7वें वैवस्वत मन्वंतर के 28वें कलियुग में रह रहे हैं, जो वर्तमान ब्रह्मा के 51वें वर्ष का पहला दिन है। अकेले वर्तमान श्वेतवराह कल्प का इतिहास 1960.90 मिलियन वर्षों का है। अब आइए इस मानव इतिहास पर एक नज़र डालते हैं।

प्रत्येक मन्वन्तर के अन्त में जल प्रलय होगा और तब अगले मन्वन्तर के शासक मनु नई सृष्टि का प्रारम्भ करेंगे। एक मन्वन्तर की अवधि 306.72 मिलियन वर्ष होती है। वर्तमान 7वें वैवस्वत मनु के युग को प्रारम्भ हुए 120.5331 मिलियन वर्ष हो चुके हैं। वैवस्वत मनु द्वारा प्रारम्भ की गई मानव जाति सम्पूर्ण पृथ्वी पर फैली हुई है। 57.024 मिलियन वर्ष पूर्व 15वें त्रेता युग में मांधाता चक्रवर्ती ने

गंगा नदी को चारों ओर से प्रचुरता से घेरकर भारतवर्ष में राज्य किया था। 39.744 मिलियन वर्ष पूर्व 19वें त्रेता युग में भगवान परशुराम ने कृष्ण जमदग्नि के पुत्र के रूप में अवतार लिया। इस काल में कृष्ण विश्वामित्र राजगुरु थे। श्री राम 18.144 मिलियन वर्ष पूर्व 24वें त्रेता युग में अयोध्या में अवतरित हुए। (वायु पुराण 98/72, हरिवंश पुराण 4/41, ब्रह्माण्ड महापुराण 104/11)। (ई.स. 2024 में) 5125 वर्ष पूर्व (3102 ई.पू. में) 28वें द्वापर युग के अंत में भगवान कृष्ण ने अवतार लिया और मथुरा नगरी को दिव्यता प्रदान की। भागवत (6/94,95,96) सार्वजनिक भागवत पारायण और श्री कृष्ण लीला में जन भागीदारी का साक्षी है जो कृष्ण वर्ष 30 (3072 ई.पू.), कृष्ण वर्ष 230 (2872 ई.पू.) और कृष्ण वर्ष 260 (2842 ई.पू.) में बड़े पैमाने पर हुआ था।

यह भारतीय इतिहास का सूक्ष्म अनुभव है। लेकिन पिछले 1900 मिलियन वर्षों से लेकर 3000 ईसा पूर्व तक हिंदू सभ्यताओं की निरंतर शृंखला का प्रामाणिक कालानुक्रमिक इतिहास और उसके बाद आज तक का संपूर्ण भारतीय इतिहास या हिंदू इतिहास या सनातन इतिहास सटीक तिथिवार कालानुक्रमिक क्रम के साथ यहाँ उपलब्ध है। क्या अब आपको लगता है कि भारत के वैज्ञानिक इतिहास का अध्ययन नहीं किया गया है? कि इसे स्कूलों में नहीं पढ़ाया जाता है। तो हैरान मत होइए। क्योंकि विज्ञान अभी बहुत आगे निकल आया है। आज इस इतिहास का अध्ययन कंप्यूटर सॉफ्टवेयर की मदद से किया जा सकता है। दो मिलियन वर्षों का अंतिम हिमयुग केवल दस हजार साल पहले समाप्त हुआ था। इसलिए ऐतिहासिक शोधकर्ता और शोधकर्ता 6000-8000 साल तक पहुंचते हैं। इससे आगे का इतिहास पढ़ना भी असंभव है। यदि आप भारतीय इतिहास का अध्ययन करना चाहते हैं, तो आपको उन्नत वैज्ञानिक उपकरणों की मदद से हिंदू शास्त्रों और पुराणों का अध्ययन करना होगा। अभी भी भगवान राम के अस्तित्व के साक्षी के रूप में पालका खाड़ी में राम सेतु पाया गया है और भगवान कृष्ण के अस्तित्व के साक्षी के रूप में द्वारका नगरी गुजरात समुद्र में पाई गई है।

श्री कृष्ण के बाद भारत का आधुनिक इतिहास संभवतः श्री बुद्ध से शुरू होता है। यहाँ से हम उन ऐतिहासिक चरणों पर नज़र डाल सकते हैं जिन्हें भारत का स्वर्ण युग कहा जा सकता है (साभार: श्री वी.डी. सावरकर, भारतीय इतिहास के स्वर्णिम चरण)।

हमारे यहाँ इसे स्वर्ण युग इसलिए कहा जाता है क्योंकि जब देश गुलामी से ग्रसित था, तब इसने वीरता के शिखर पर खड़े होकर दुश्मनों को परास्त किया और अपने देश को स्वतंत्र कराया तथा राजनीतिक स्वतंत्रता और शक्ति को पुनः स्थापित किया। इन कालखंडों को स्वर्ण युग इसलिए कहा जाता है क्योंकि इनमें एक पीढ़ी और उसका नेतृत्व करने वाले वीर महापुरुषों का स्वतंत्रता संग्राम समाहित होता है।

बुद्ध के बाद, 326 ईसा पूर्व (कलियुग 2766) में, सिकंदर के आक्रमण के साथ राष्ट्रीय चेतना का उदय हुआ, चाणक्य ने समाट चंद्रगुप्त को उचित दिशा दी, और सिकंदर के उत्तराधिकारी सेल्यूक्स प्रथम निकेटर को लगभग 315 ईसा पूर्व में हराया। यवन विजेता समाट मौर्य चंद्रगुप्त का 326 ईसा पूर्व से 298 ईसा पूर्व तक का काल आधुनिक इतिहास के **पहले स्वर्णिम काल** के रूप में दर्ज किया जा सकता है, जब यूनानियों को हिंदू कुश से आगे धकेल दिया गया था।

बिम्बसार, अशोक और मौर्य वंश के बाद 189 ईसा पूर्व से 149 ईसा पूर्व तक शुंग वंश के **समाट पुष्यमित्र** का काल, जिसने एशिया से यवनों का सफाया कर दिया, **दूसरा स्वर्णिम काल** माना जा सकता है।

फिर हम विक्रम संवत्सर और शालिवाहन संवत्सर का इतिहास सुनते हैं, जिसने शककुशाणों को हराया था। 330 ई. में समुद्रगुप्त के बाद। **तीसरा स्वर्ण युग** गुप्त वंश के **समाट चंद्रगुप्त विक्रमादित्य** का काल था, जो 374 ई. से 414 ई. तक चला, जिन्होंने शककुशाणों को धूल में मिला दिया।

फिर 528 ई. है, **चौथा स्वर्ण युग**, औलिकर समाट यशोधर्मन का गौरवशाली युग, जिसने हूणों को कुचल दिया, जिनसे शेष विश्व घृणा करता था।

इस अवधि के दौरान दक्षिण भारत चालुक्य समाट पुलकेशी (642 ई. तक) के हाथों में सुरक्षित था।

इसके बाद 711 ई. से मुस्लिम आक्रमणकारियों का आगमन शुरू हुआ और नागवंशी कर्कोटा सामाज्य (625 ई. -855 ई.) के समाट के साथ राजपूत राजाओं ने उन्हें 300 साल तक सिंधु नदी पार

करने से रोके रखा। और इसी के साथ ईसाई आक्रमण भी हुआ। 8वीं शताब्दी में विक्रमादित्य-II ने अरबों को खदड़ दिया।

फिर ग्यारहवीं शताब्दी आते-आते उत्तर भारत धीरे-धीरे विदेशी गुलामी का बोझ महसूस करने लगा। हालांकि यह अफसोस की बात है कि ग्यारहवीं से सत्रहवीं शताब्दी तक कोई भी ऐसी शक्ति नहीं उभरी जो इन आक्रांताओं को देश से पूरी तरह मिटा सके। यह भी कहा जाना चाहिए कि इस दौरान घोरी को रोकने के लिए महान पृथ्वीराज चौहान, अकबर को रोकने के लिए राणा प्रताप सिंह और औरंगज़ेब को रोकने के लिए छत्रपति शिवाजी थे।

इस दौरान दक्षिण भारत में पल्लव साम्राज्य (ई.स. 275 - ई.स. 897), कदंब साम्राज्य (ई.स. 345 - ई.स. 525), राष्ट्रकूट (ई.स. 753 - ई.स. 982), चोल साम्राज्य (ई.स. 848 - ई.स. 1279) और पांड्य साम्राज्य (ई.स. 560 - ई.स. 1400) ने 14वीं शताब्दी तक समृद्धि का आनंद लिया। 1336 में हरिहरराय-बुखाराय का विजयनगर साम्राज्य और उसके बाद 1509-1530 में श्री कृष्णदेवराय का समृद्ध शासनकाल। फिर 1587 से मराठा शासन शुरू हुआ। 1630 से 1680 तक शक्तिशाली छत्रपति शिवाजी का समय था।

फिर 4 मई 1758 को **पेशवा रघुनाथ राव** के नेतृत्व में मराठा सैनिकों ने (हिंदू कुश पर्वत के पार) उन सभी विदेशी मुसलमानों को खदड़ दिया जो आक्रमणकारी के रूप में अटक से कंधार की ओर आए थे। यह हिंदू धर्म का **5वां स्वर्ण युग** है।

इसी अवधि के दौरान, भारत का उत्तर-पूर्वी भाग अहोम साम्राज्य (1228-1826) द्वारा सुरक्षित था।

फिर 1857 से 1947 तक का काल जब अंग्रेजों को खदड़ा गया, **वह छठा स्वर्ण युग** था। औपनिवेशिक युग के अंत को चिह्नित करते हुए, आज भारत में एक भी ब्रिटिश या यूरोपीय नागरिक औपनिवेशिक अधिकारी के रूप में नहीं बचा है। इस हिंदू राष्ट्र पर अतिक्रमण करने आए दुश्मनों का न केवल अस्तित्व, बल्कि उनका नाम भी नहीं रहने दिया गया। आक्रमणकारी यवन, शक, कुषाण और हूणों ने कोई निशान भी नहीं छोड़ा। 1947 और 1965 में, पाकिस्तानी मुसलमानों ने आक्रमण किया। भारत

ने 1965 में कब्जा की गई 15010 वर्ग किमी भूमि वापस कर दी। फिर 1962 में, चीनी कम्युनिस्टों ने हमला किया और 42000 वर्ग किमी जगह पर कब्जा कर लिया। 1925 के बाद हमने एक नई यात्रा शुरू की है। हमें 7 वें स्वर्णिम चरण की ओर ले जाने के लिए, बिना किसी दुश्मन के हमारी मातृभूमि, अखंड भारत का पुनर्निर्माण करने के लिए। यह एक नज़र में हिंदू इतिहास है।

(पी.एम.श्रीनिवासन मेमोरियल, स्नेहराज फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित)

१८-१५) हिंदू धर्म को विश्व दर्शन बनाने की मांग का क्या कारण है?

उत्तर : क्योंकि, केवल हिंदू संस्कृति, जीवन पद्धति और आध्यात्मिक दृष्टि ही दुनिया में समृद्धि और शांति ला सकती है। हिंदू धर्म पश्चिमी लोगों की तरह नहीं है जो रोटी के लिए भगवान से प्रार्थना करते हैं। यह कर्म क्षमता के साथ समृद्धि को बढ़ावा देता है। गरीबी मानव जाति का अभिशाप है। भौतिक गरीबी हमें एक मानव पशु बने रहने देती है। यह केवल भौतिक रूप से सोचता है। केवल भौतिक रूप से जीता है। जब कोई अमीर बनता है, तभी वह अपने भीतर की आत्मा और आध्यात्मिकता के बारे में सोचता है। क्योंकि जब बाहरी रूप से अमीर होते हैं तो उन्हें अपनी आंतरिक गरीबी का पता चलता है। इसीलिए ऋषिमहेश्वर ने पुरुषार्थ, मानव जन्म के लक्ष्यों को हमारी जीवन योजना के लिए आवश्यक बनाया। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष। पहला पुरुषार्थ है धर्म की प्राप्ति करना। या सही-गलत को जानने की शिक्षा प्राप्त करना। उस शिक्षा के माध्यम से धन प्राप्त करना। इस प्रकार अमीर बनकर, उस धन से तीसरे पुरुषार्थ काम या धर्मयुक्तः इच्छाओं को पूरा करना। इस प्रकार, जब इच्छाएं पूरी हो जाती हैं, तो उनका मन आंतरिक गरीबी के बारे में जागरूक हो जाता है और उसके उन्मूलन के लिए प्रयास करता है। इस प्रकार व्यक्ति मानव जीवन के अंतिम लक्ष्य तक पहुंच जाएगा जो मोक्ष है। यही जीवन के विकास और विकास की पूर्णता है। यदि मनुष्य मोक्ष के अंतिम लक्ष्य तक पहुंचना चाहता है, तो उसकी आंतरिक गरीबी और आध्यात्मिक गरीबी प्रकट होनी चाहिए। इसे प्रकट करने के लिए, बाहरी भौतिक गरीबी को भिटाना होगा। बाहरी रूप से समृद्ध होने से, हमें वहां असंतुलन पैदा करना होगा। केवल वही मानव जाति को आध्यात्मिकता, शाश्वत शांति और संतोष की ओर ले जा सकता है। इसलिए हिंदू दर्शन यह भेदभाव नहीं करता कि कोई सुर है या असुर, आस्तिक है या नास्तिक, आम आदमी है या

विद्वान्। इस बात पर जोर देते हुए कि अपनी कर्म क्षमता से पूरी मानवता को समृद्ध करने के लिए समृद्ध देखने के लिए प्रयत्ना करता है, हिंदू दर्शन को एक सार्वभौमिक दर्शन होने की मांग करने का कारण यह है कि यह इस धरती पर एकमात्र अवधारणा है जो यह घोषणा करती है..

"सर्वं भवन्तु सुखिनः"

"लोकः समस्तः सुखिनोभवन्तु"

"ब्रह्मांड एक परिवार है वसुधैव कुटुम्बकम्"।

जब भी और जहाँ भी हिंदू धर्म मजबूत हुआ है, वह स्वर्ण युग रहा है। कोई भिखारी नहीं, कोई चोर नहीं, कोई धोखेबाज़ नहीं, कोई झूठ नहीं। सत्य, धर्म, सद्गुण, बुद्धि, फलदायी, स्वास्थ्य, शांति, समृद्धि, प्रचुरता। वह दिन ऐसे समय थे जब मोती-रत्न-सोना नाज़ियों में मापा जाता था और शाही सङ्कों पर बेचा जाता था। पूँजीपति कर्मचारी और गरीब विद्वान् के बीच कोई अंतर किए बिना ज्ञान की भरमार थी।

(पी.एम.श्रीनिवासन मेमोरियल, स्नेहराज फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित)

प्रश्न-16) मैंने सुना है कि हिंदू समाज होना चाहिए। क्या यहाँ हिंदू समाज नहीं है?

उत्तर : नहीं, यहाँ जो उपलब्ध है वह हिंदू सामूहिक व्यवस्था है। इसमें से हमें समाज व्यवस्था में बदलना होगा। अब देखते हैं कि सामूहिक और समाज में क्या अंतर है। कुछ बकरियाँ पहाड़ पर चर रही हैं। यह बकरियों की सामूहिक व्यवस्था है। अगर यहाँ एक बाघ आ जाए और सभी बकरियाँ भाग जाएँ, अगर एक बाघ एक बकरी का शिकार करके उसे ले जाए, तो बाकी बकरियों को कोई परेशानी नहीं होती। बाकी अपनी जगह चरती रहेंगी। यह सामूहिक व्यवस्था का स्वभाव है। क्या आपने मधुमक्खियों को देखा है? वे अपने लिए कितना सुंदर छत्ता बना रही हैं। भोजन इकट्ठा करती हैं और बांटती हैं, और आपस में काम बांटती हैं। बस एक मधुमक्खी पर हमला या उसे परेशान होते देख तुरंत ही बाकी का एक समूह आकर हमला कर देता है। कैसी एकता, कैसी प्रतिबद्धता, यह समाज व्यवस्था है। इस समाज व्यवस्था में आने के लिए सबसे पहले हमें यह करना होगा...

“हिन्दू धर्म परिचय यजम्”

फिर हिंदू वार्ड समाज, हिंदू ग्राम समाज, हिंदू शहरी समाज, हिंदू तालुका समाज, हिंदू जिला समाज, हिंदू राज्य समाज, हिंदू राष्ट्र समाज, हिंदू भूखंड समाज और हिंदू विश्व समाज की स्थापना के लिए हमें आचरण करने की जरूरत है...

"हिन्दू समाज निर्माण यज्ञ"

अंततः...

"हिन्दू विश्व समाज "

यह सीमाहीन मानव विश्व सामाज्य या सच्चे स्वर्ण युग की विश्व सरकार का कारण और नमूना होना चाहिए।

भाग-1 समाप्त हुआ

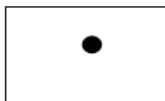
(पी.एम.श्रीनिवासन मेमोरियल, स्नेहराज फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित)

भाग-2

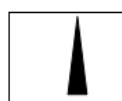
प्रश्न-17) माथे पर धारण करने वाले चन्दन, भस्म , तिलक .. आइए देखें इसके तरीके और अर्थ?

उत्तर: हमने सीखा है कि हिंदुओं के सभी कार्य आत्मा-केंद्रित हैं। आत्म-साक्षात्कार की साधना के तहत माथे पर चन्दन, कुमकुम या बस्मा का तिलक लगाया जाता है। यह उस भाग में होता है जहाँ दोनों आँखों की दृष्टि केंद्रित होती है (भ.गी.5/27 और भ.गी.8/10,12), और तिलक को एक उंगली की नोक पर रखा जाता है और एक छोटे से चक्र में माथे के जहाँ दोनों आँखों की दृष्टि केंद्रित होती है वहां लगाई जाता है। उस भाग में, आज्ञा चक्र (पीनियल ग्रन्थि) स्थित है। यदि हम अपने मन को उस भाग पर केंद्रित करने का लगातार अभ्यास करते हैं या यदि आप इसे एक अभ्यास बनाते हैं, तो हम आज्ञा चक्र को क्रियाशील बना सकते हैं। परिणाम आप आत्म-साक्षात्कार प्राप्त कर भी सकते हैं। इससे योगसिद्धि और त्रिकाल ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। तिलक का लगाने का लक्ष्य यही है की ईश्वर/आत्मा प्राप्ति के लक्ष्य को हमेशा याद रखना। चलिए तिलक लगाने का तरीके और अर्थ समझे...

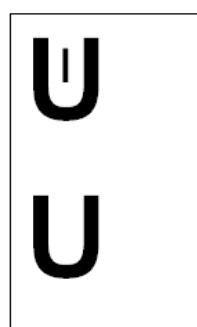
ബുന്നി പിയാഡ്രൂടും , അർക്കമ്പവും ഓന്ന് നോക്കാം...



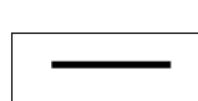
1



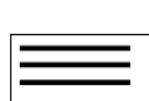
2



3



4



5

...

1 → इसका अर्थ ऊपर बताए गए के समान ही है.

2 → माथे के आधार से माथे की नोक तक फैला हुआ निशान। इससे पता चलता है कि जीवन का उद्देश्य आत्मा को परमात्मा तक, जीवन को ईश्वर तक या योगिक शब्दों में कहें तो मूलाधार चक्र में चेतना को ब्रह्मरंध्र के सहस्र कमल की पंखुड़ियों तक फैलाना है।

3 → इससे पता चलता है कि जीवन में मेरा उद्देश्य यह है कि मैं भगवान से आया हूँ तो मुझे भगवान के पास ही लौटना होगा।

4 → इससे पता चलता है कि मैं पूर्णता से आया हूँ, और इसलिए पूर्ण हूँ, और इस प्रकार पूर्ण आत्मा पूर्णता की ओर लौटती है।

5 → यह भी ऊपर बताए गए ऐसा ही है। तीन पंक्तियाँ यह भी संकेत देती हैं कि मुझे सभी त्रिगुणों को जलाकर त्रिगुणतीथ बनना है।

(पी.एम.श्रीनिवासन मेमोरियल, स्नेहराज फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित)

प्रश्न-18) भक्तगण माथे पर कर्पूर ज्योति क्यों लगाते हैं?

उत्तर: जब भक्तों के सामने कर्पूर ज्योति या छोटा दीपक रखा जाता है, तो भक्त उसे छूकर अपनी प्रतिज्ञा दोहराते हैं। वह प्रतिज्ञा इस प्रकार है। "मैं साक्षी रहूँगा कि ईश्वर भी आत्मस्वरूप है।" फिर उस ज्योति को अपने माथे के नज़िक लाकर वे संकल्प करते हैं कि "हे ईश्वर जो पूर्णता में आप विद्यमान हैं, मेरी चेतना को अज्ञान के बादल से ऊपर उठकार वही ज्ञान के सूर्य प्रकाश की ओर, पूर्णता की ओर बढ़ाये।"

(पी.एम.श्रीनिवासन मेमोरियल, स्नेहराज फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित)

प्रश्न-19) हिंदुओं द्वारा एक-दूसरे का अभिवादन करते समय नमस्कार, नमस्ते और प्रणाम कहने का क्या अर्थ है?

उत्तर:

नमस्कार:- "आप शरीर नहीं बल्कि आत्मा हैं। यह ईश्वर है जो आपके भीतर रहता है और आपका मार्गदर्शन करता है। मैं इस शरीर को धारण करने वाले उस साक्षी को नमन करता हूँ। उसकी शरण लेता हूँ।" यही नमस्कार का अर्थ है। जब मैं जवाब में नमस्कार करता हूँ, तो इसका मतलब है कि मैं भी ऐसा ही करता हूँ।

नमस्ते:- "इस अस्तित्व, सृष्टि के पीछे एक आत्मा है। वही है जो सभी चीजों की रचना-सुरक्षा-विनाश को नियंत्रित और निर्देशित करती है। मैं उस आत्मा, ईश्वर, आत्मा को नमन करता हूँ और उसकी शरण

लेता हूं।" यही नमस्ते का अर्थ है। जब मैं जवाब में नमस्ते कहता हूं, तो इसका मतलब है कि मैं भी ऐसा ही करता हूं।

प्रणाम:- "मैं शपथ लेता हूं कि मैं, आप और सभी आँकार स्वरूप, आत्मस्वरूप हैं।" जब कोई जवाब में दोहराता है, तो इसका मतलब यह भी होता है कि, मैं इसकी पुष्टि करता हूं.

(पी.एम.श्रीनिवासन मेमोरियल, स्नेहराज फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित)

प्रश्न-20) पूजा के दौरान नारियल फोड़े जाते हैं। इसकी अवधारणा क्या है?

उत्तर : यद्यपि इसने आदिम पशु बलि का स्थान ले लिया, फिर भी इसके पीछे एक रहस्य है। इसका फल केवल तने को तोड़कर ही खाया जा सकता है। रहस्य यह है कि यदि फल को त्याग दिया जाए, तो व्यक्ति अमृत पी सकता है और अमरता प्राप्त कर सकता है। यदि आप अहंकार(तने) को नष्ट कर देते हैं, तो आप बिना दर्द के कर्म का फल खा सकते हैं। यदि आप उस नारियल के कर्म फल को त्यागने का इरादा रखते हैं, तो जितना अधिक आप त्याग करेंगे, उतना ही आप नारियल के पानी के अमृत की सेवा कर सकते हैं। इसकी अमरता, दिव्यता का एहसास किया जा सकता है। जब वे नारियल तोड़ते हैं, तो वे प्रार्थना करते हैं, "हे भगवान, मैं अहंकार का नारियल तोड़ता हूं और नारियल का कर्म फल आपको अर्पित करता हूं। इसे स्वीकार करने के, मुझे अमरता या आत्म-साक्षत्कार प्रसन्न करें।"

इसकी अवधारणा को भगवद गीता के श्लोक 2/47 में समझा जा सकता है "आपको अपने निर्धारित कर्तव्यों को करने का अधिकार है, लेकिन आप अपने कार्यों के फलों के हकदार नहीं हैं। कभी भी अपने आप को अपनी गतिविधियों के परिणामों का कारण न समझें, न ही निष्क्रियता से आसक्त हों।"

इसलिए, कर्म करना बंद मत करो क्योंकि तुम इस बात से डरते हो कि कर्म का परिणाम क्या होगा। ईश्वर ही कर्ता है और एकमात्र कर्ता या परम कर्ता है। उस स्थिति में, कर्म का परिणाम ईश्वर का है। मुझमें ईश्वर ही कर्म का परिणाम भोगता है। जब मैं इस दृष्टिकोण से कर्म करता हूं कि मैं केवल एक उपकरण हूं, केवल एक माध्यम हूं, तो यह कर्म योग बन जाता है और दिव्यता और साक्षत्कार प्राप्ति का मार्ग बन जाता है।

(पी.एम.श्रीनिवासन मेमोरियल, स्नेहराज फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित)

प्रश्न-21) हिंदू कमरबंध (कटि-सूत्र) क्यों बांधते हैं?

उत्तर : काली डोरी या चांदी, सोने की डोरी (चैन) कमर में बाँधी जाती है, यह संकेत देने के लिए कि आत्मा इस शरीर से बंधी हुई है और इसे खोलने तथा आत्मा को परम मुक्ति की ओर ले जाने के लिए साधना करनी होगी। योगिक शब्दों में, प्राण, जीवन, कमर के पीछे स्थित मूलाधार चक्र में कुंडलिनी के रूप में बंधा हुआ है। साधना द्वारा, इसे सुषमा नाड़ी के माध्यम से ऊपर उठाना चाहिए और स्वाधिष्ठान चक्र, मणिपुर चक्र, अनाहत चक्र, विशुद्धि चक्र, आज्ञा चक्र से गुजरते हुए मोक्ष (सहस्रदल कमल) का पात्र बनना चाहिए। इसे इंगित करने के लिए, नामकरण संस्कार समारोह के दौरान कमर में चारों ओर कमर बंध (कटि-सूत्र) डोरी बाँधी जाती है। यहाँ सूक्ष्म कल्पना में परम सत्य और ज्ञान का वर्णन किया गया है।

(पी.एम.श्रीनिवासन मेमोरियल, स्नेहराज फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित)

प्रश्न-22) हिंदू अपने नाम में श्री, श्रीमान और श्रीमती क्यों जोड़ते हैं?

उत्तर : ▶ श्री का अर्थ है ईश्वर, श्री-मन का अर्थ है जिसके पास ईश्वर का मन है, इसी प्रकार श्री-मति का अर्थ है ईश्वर की बुद्धि। इसी प्रकार कुमार का अर्थ है ईश्वर का पुत्र और कुमारी का अर्थ है ईश्वर की पुत्री। जैसा कि आप जानते हैं, सनातन के लिए सब कुछ ईश्वर है। ऐसा कुछ भी नहीं है जो ईश्वर न हो। श्री, श्रीमती और श्रीमन को इस तरह जोड़ा जाता है ताकि मानव जन्म का उद्देश्य हमेशा याद रहे। जो कि ऋषियों के शब्दों का एहसास है: ईशावासमिदं सर्वं, अहम् ब्रह्मास्मि, तत्त्वमसि। आइए एक उदाहरण लेते हैं... श्री हर्ष का अर्थ है भगवान हर्ष। इसी प्रकार श्रीमान अशोक का अर्थ है अशोक जिसके पास ईश्वर का मन है। ईश्वर का मन होने के लिए, वे स्वयं ईश्वर ही होने चाहिए। श्रीमती तारा का अर्थ है ईश्वर की बुद्धिवाली तारा। इसका अर्थ "तारा भगवती" ही है। इस प्रकार सभी को ईश्वर कहना एक युक्ति, साधना और तंत्र है जो उनके अंदर के देवत्व को जगाने, उन्हें देवत्व से भरने और उन्हें देवत्व तक ऊपर उठाने का कार्य करता है।।

(पी.एम.श्रीनिवासन मेमोरियल, स्नेहराज फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित)

प्रश्न-23) क्या मूर्तिपूजा परब्रह्म पूजा के समान है?

उत्तर : यह मूर्तिपूजा नहीं है, यह मूर्ति के माध्यम से पूजा करना है। एक आम आदमी को निराकार, अहंकार रहित, शुद्ध परमात्मा की पूजा करने के लिए किसी माध्यम की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए समाधि, शास्त्र किताब, प्रतीक, चिह्न, विशेष भवन, चित्र, पत्र, पाठ, संख्या, फूल, दीपक, सूर्य, नदी, पर्वत, शिक्षक, उपदेशक, पेड़, सांप आदि। यह मूर्ति के माध्यम से पूजा करने जैसा है। यहाँ मूर्ति का उपयोग एक सर्वोच्च आत्मा, ईश्वर की पूजा करने के लिए किया जाता है। पूजा में सभी अनुष्ठानों को पूरा करने के बाद, आँखें बंद करके प्रार्थना की जाती है। कोई अपनी आँखें खोलकर मूर्ति से प्रार्थना नहीं करता है। मैं इसे समझाता हूँ। हम गिलास में दूध पीते हैं। हम गिलास की मदद से दूध पीते हैं। और हम गिलास नहीं पी रहे हैं। इस तरह मूर्ति रखकर परमात्मा की पूजा की जाती है। मूर्ति की मदद से भगवान की पूजा की जाती है। और मूर्ति की पूजा नहीं की जाती है। इसलिए प्रश्न में मूर्तिपूजा को मूर्ति की मदद से पूजा में बदल दिया जाना चाहिए।

अब परब्रह्मराधाना, ऐसा क्या है जो परब्रह्म नहीं है। जो कुछ भी बना है वह परब्रह्म का ही परिवर्तित रूप है। इसलिए, जिसकी भी पूजा की जाती है, वह पूजा अंततः परब्रह्म की ही पूजा है। तो एक बात है, जिस भी रूप, नाम, भाव से पूजा करने वाला पूजा करता है, वह पूजा उचित होनी चाहिए। अगर ऐसा है, तो वह पूजा परब्रह्म पूजा होगी। अब विधि के अनुसार क्या होना चाहिए? अवधारणा की आवश्यकता है। अगर पूजा की अवधारणा परब्रह्म है, तो पूजा किसी भी रूप, नाम, रूप या तरीके से हो, वह पूजा परब्रह्म की पूजा हो जाती है। आइए भगवद्गीता की जाँच करके इसकी पुष्टि करें...

भगवद्गीता 9/23 "हे कुन्तीपुत्र! जो लोग अन्य देवताओं के भक्त हैं और जो उनकी श्रद्धापूर्वक पूजा करते हैं, वे वास्तव में केवल मेरी ही पूजा करते हैं, किन्तु वे ऐसा गलत तरीके से करते हैं।"

भगवद्गीता 7/20 "जिनकी बुद्धि भौतिक इच्छाओं द्वारा चुरा ली गई है, वे देवताओं की शरण लेते हैं और अपनी प्रकृति के अनुसार पूजा के विशेष नियमों का पालन करते हैं।"

भगवद्गीता 7/21 "मैं प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में परमात्मा के रूप में विद्यमान हूँ। जैसे ही कोई व्यक्ति किसी देवता की पूजा करने की इच्छा करता है, मैं उसकी श्रद्धा को स्थिर कर देता हूँ, ताकि वह स्वयं को उस विशेष देवता के प्रति समर्पित कर सके।"

भ.गी. 7/22 "ऐसी श्रद्धा से संपन्न होकर, वह किसी विशेष देवता की पूजा करने का प्रयास करता है और अपनी इच्छाओं को प्राप्त करता है। लेकिन वास्तव में ये लाभ केवल मेरे द्वारा ही प्रदान किए जाते हैं।"

भ.गी. 4/11- "जैसे सभी मेरी शरण में आते हैं, मैं उन्हें उसी के अनुसार पुरस्कार देता हूँ। हे पृथापुत्र, सभी लोग सभी प्रकार से मेरे मार्ग का अनुसरण करते हैं"

ऋग्वेद १८ोक् १.१६४.४६ "एकं सत् विप्रा बहुधा वदंति" यदि यह केवल एक है, तो विद्वान् इसकी बाहरी अभिव्यक्तियों पर ध्यान देते हुए कई रूपों और तरीकों से इसकी पूजा करते हैं।

(पी.एम.श्रीनिवासन मेमोरियल, स्नेहराज फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित)

प्रश्न-24) हिंदुओं की साधना पद्धतियाँ क्या हैं?

उत्तर: हिंदुओं में साधना के 4 प्रकार हैं।

1. **भक्ति योग:** साधना का एक मार्ग जिसमें सभी कर्मों को पूर्ण समर्पण और भक्ति के साथ भगवान् को समर्पित कर दिया जाता है।

भक्ति के तीन भाग हैं..

1) यंत्र - देवी/देवी का भौतिक प्रतीक

2) मंत्र - देवी/देवी का सूक्ष्म प्रतीक

3) तंत्र - पूजा का कार्य या क्रिया भाग , इसके दो भाग हैं (ए) न्यास (बी) मुद्रा

अब पूजा के चार तरीके हैं...

1) तर्पणम्

2) अर्चना

3) होमम्/यगम्

4) दानम्

भक्ति की नौ प्रक्रियाएँ हैं:

श्रवणम् - भगवान् के नाम और महिमा सुनना (सत्संग)

कीर्तन - भगवान् की महिमा का जाप करना

स्मरण - हर समय भगवान को याद रखना

पाद सेवा - भगवान की पाद सेवा

अर्चनम - भगवान की पूजा करना

नमस्कार - भगवान को प्रणाम करना

दास्त्याम - भगवान के सेवक के रूप में सेवा करना

संधि - भगवान के साथ मित्रता विकसित करना

आत्म-समर्पण - भगवान के प्रति स्वयं का पूर्ण समर्पण

2. कर्म योग: यह निष्काम कर्म है। ईश्वर कर्ता है और ईश्वर द्वारा ही सब कुछ होता है। अर्थात् ईश्वर के लिए, ईश्वर ही, ईश्वर द्वारा। उस स्थिति में, कर्म का फल ईश्वर का होता है। मुझमें ईश्वर ही कर्म का फल भोगता है। जब मैं इस भाव से कर्म करता हूँ कि मैं केवल एक साधन हूँ, केवल एक माध्यम हूँ, तो यह कर्म योग की साधना बन जाती है।

3. ज्ञान योग: आध्यात्मिक ज्ञान (स्वाध्याय) सीखना, ज्ञान प्राप्त करना, उस ज्ञान के प्रकाश में मन को सत्य तक पहुँचाना और उसे सभी बंधनों से मुक्त करना।

4. राज योग: यह अपने भीतर सत्य की खोज करने का एक तरीका है, जो सत्य अपने ही भीतर है वो सत्य को महसूस करना। यह साधना पथ है जो प्राण को नियंत्रित करके, इंद्रियों को पार करके, मन को समाप्त करके और व्यावहारिक रूप से सभी सिद्धियों को प्राप्त करके पूर्णता प्राप्त करने का।

(पी.एम.श्रीनिवासन मेमोरियल, स्नेहराज फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित)

प्रश्न-25) हिंदुओं की पूजा का मूल और पूर्ण क्रम क्या है?

उत्तर : अष्टांग योग हिंदू या सनातन आध्यात्मिक अभ्यास (उपासना) का आधार है। हिंदुओं की सभी तरह की पूजा, आध्यात्मिक अभ्यास और साधना इसी के आधार पर बनी हैं। उपासना की चार अवधारणाएँ हैं।

1) ब्रह्म अवधारणा : - निराकार, निर्गुण, निरंजन, निर्विकार, सत्-चित्-आनंद के रूप (स्वरूप) में ईश्वर की उपासना।

2) **ईश्वर अवधारणा**: - भगवान शिव, भगवान विष्णु, देवी आदिपराशक्ति, देवी लक्ष्मी, देवी सरस्वती, आदि के रूप में पूजा/साधना।

3) **देवता अवधारणा**: - रुद्र, आदित्य, अश्विनी, पंचभूत, नवग्रह, नक्षत्र आदि के रूप में पूजा/साधना।

4) **मूर्ति अवधारणा**:- गणपति देव, मुरुगन देव, अयष्टा देव, पितृ देवता, शास्ता देव, भैरव देव, देवी काली, वीर, नाग, यक्ष-यक्षी, गंधर्व, किन्नर, भूत आदि के रूप में पूजा/साधना।

हर कोई अपनी-अपनी कल्पना, अवधारणा और मानसिक आत्मीयता के अनुसार पूजा कर सकता है।

आइये **अष्टांग योग** पर एक नज़र डालते हैं:- योग मन को विचार तरंगों से रोकता है। निरोध काल में मन की स्थिर स्थिति में कर्ता परब्रह्म से जुड़ जाता है। इसे अष्टकों में विभाजित किया गया है। आइये एक-एक करके देखें।

1. **यम**:- ये पाँच नैतिक आचरण हैं। यानि आंतरिक आदतें...

- **अहिंसा** - (बिना कारण किसी को नुकसान न पहुँचाना),
- **सत्य** - सच्चा होना
- **अस्तेयम्** - चोरी न करना
- **ब्रह्मचर्य** - हमेशा ब्रह्म में रहना,
- **अपरिग्रह** - किसी से कुछ भी स्वीकार न करना।

2. **नियम**:- ये पाँच नियम हैं जिनका पालन बाह्य रूप से करना होता है।

अर्थात

शौचम् - (बाहरी सफाई या स्वच्छता रखना),

संतोषम् - (खुशी / संतुष्टि),

तपस - (लक्ष्य प्राप्ति तक प्रयास),

स्वाध्यायम् - अध्ययन, लक्ष्य प्राप्ति तक सीखते रहना

ईश्वर प्रणिधान - आत्मा का ईश्वर के प्रति समर्पण।

3. **आसनम्** : बैठने की मुद्रा

4. **प्राणायाम** :- प्राण शक्तियों को प्रभावित करना।
 5. **प्रत्याहार** :- इन्द्रियों को विषयों से हटाओ।
 6. **धारणा**:- पूजा, तर्पण, अर्चना, नामजप, होम, यज, दानम, तंत्र, मंत्र, योग उपासना, किसी अन्य आध्यात्मिक अभ्यास द्वारा मन को एक विशेष बिंदु पर स्थापित करें।
 7. **ध्यानम्**:- ज्ञान की तरंगों का उस एक बिंदु में प्रवाह होने से विषय का लोप हो जाता है और ज्ञान (अर्थ) प्रकट होता है।
 8. **समाधि**: जब बुद्धि सम हो जाती है, प्रज्ञा स्थिर हो जाती है, सभी रूप त्याग दिए जाते हैं और केवल अर्थ का ही ज्ञान हो जाता है, तब समाधि प्राप्त होती है। इस आठवें स्तर पर साधक आत्म-साक्षात्कार के माध्यम से मोक्ष के लिए पात्र हो जाता है।
(पी.एम.श्रीनिवासन मेमोरियल, स्नेहराज फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित)
- प्रश्न-26)** आप मंदिरों में होने वाले अनुष्ठानों, तीर्थस्थलों पर पूजा, नाम जप और होम को किस तरह देखते हैं?
- उत्तर :** मंदिरों में की जाने वाली प्रतिज्ञाएँ, पूजाएँ, होम इत्यादि, अष्टांग योग के दूसरे चरण, आत्मा का ईश्वर के प्रति समर्पण को आंशिक रूप से ही पूरा करते हैं। इसी तरह, नापजपा योग के केवल छठे चरण, धारणा को ही पूरा करता है। अगर पूजा पूरी करनी है, तो सभी आठ चरणों से गुजरना होगा। यही पूर्ण सनातन पूजा क्रम है। पुजारी इसका अभ्यास करते हैं, हम सभी को इसका अभ्यास करना चाहिए।
(पी.एम.श्रीनिवासन मेमोरियल, स्नेहराज फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित)

प्रश्न-27) क्या आपने सुना है कि पूजा एक गलत प्रथा है?

उत्तर : जब हम अद्वैत दर्शन के अनुसार उपासना करने की बात करते हैं, जब सब कुछ परब्रह्म है, तो हम किसकी उपासना करें? मैं ब्रह्म हूँ, अन्य सभी ब्रह्म हैं, तथा ब्रह्म के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। और किसकी और कैसे उपासना करें? यदि हम अद्वैत अवस्था तक पहुँचना चाहते हैं, जहाँ हम सबकुछ परब्रह्म के रूप में देखते हैं, तो हमें उपासना की इन सभी अवधारणाओं से गुजरना और

समझना होगा। केवल तभी जब कोई जीवन की सर्वोच्च अवस्था में पहुँच जाता है और स्वयं को परब्रह्म के रूप में पा लेता है, तो पूजा की कोई आवश्यकता नहीं रह जाती। तब वहाँ आत्म-पूजा होती है। इससे मोक्ष भी प्राप्त होता है। इस प्रकार यहाँ बाह्य पूजा के माध्यम से आत्म-पूजा प्राप्त करके मोक्ष प्राप्त करने की एक साधना पद्धति है। लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं है जो यह कहे कि उपासना गलत है। वैसे भी, सभी उपासनाएँ पूर्णता प्राप्त करने, बोध प्राप्त करने के लिए ही होते हैं। जब ऐसा होता है, तो उपासना साधना बन जाती है। साधना प्रत्येक जीव का जन्मसिद्ध अधिकार है। जो लोग इसे गलत कहते हैं, हम केवल यही कह सकते हैं कि उन्हें पूर्णता दिखाई नहीं देती।

(पी.एम.श्रीनिवासन मेमोरियल, स्नेहराज फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित)

प्रश्न-28) हिंदू सुबह के एक खास क्षण को ब्रह्म मुहूर्त क्यों कहते हैं?

उत्तर : सुबह के इस क्षण को ब्रह्म मुहूर्त कहा जाता है क्योंकि यह ब्रह्म के सबसे करीब का क्षण होता है, या वह क्षण जिसमें व्यक्ति आमतौर पर ब्रह्म की स्थिति में होता है, या ब्रह्म साधना के लिए सबसे अच्छा क्षण होता है। सूर्योदय से एक घंटा छत्तीस मिनट पहले।

जरा सोचिए। शाम तक जब हम इस समाज की परिस्थितियों से गुजरेंगे तो हम देखेंगे, सुनेंगे, पाखंड, अत्याचार, शोषण, आंसू, हिंसा, हत्या, बलात्कार और ऐसे ही जघन्य अपराध देखेंगे, सुनेंगे। देख-सुन और जान-समझकर हमारा मन दया से रहित होकर विकृत हो जाता है। तब यहां हर व्यक्ति अपने अस्तित्व के लिए एक कृत्रिम मुखौटा पहनकर और अपनी पहचान भूलकर चलता है। हम ईश्वर के रूप में नहीं, बल्कि समाज द्वारा हमें दिए गए एक व्यक्तित्व के रूप में या अपने अस्तित्व के लिए कृत्रिम रूप से बनाए गए व्यक्तित्व के रूप में चलते हैं। हां, जब सुबह हुई तो पिछली रात की अच्छी नींद के बाद हमारा मन इन सभी विकृत सामाजिक बुराइयों से मुक्त हो चुका था। कोई प्रतिस्पर्धा नहीं, कोई दुश्मनी नहीं, कोई वासना नहीं, लाभ-हानि की कोई व्यापारिक बुद्धि नहीं और मन उन कुछ घंटों के लिए इन सभी नकारात्मक पहलुओं से मुक्त था। वह विकृत सामाजिक बंधनों से मुक्त हो चुका था। उस एक लंबे विश्राम के बाद मन अहंकारहीन, निष्कलंक, शुद्ध, प्रेममय, शांत सौंदर्य की स्थिति में पहुँच

चुका था। नींद के बाद का यह क्षण मन को ब्रह्म के करीब लाने और साधना करने के लिए सबसे अच्छा है। इसीलिए सनातन धर्मावलंबी इस क्षण को ब्रह्म क्षण कहते हैं।

(पी.एम.श्रीनिवासन मेमोरियल, स्नेहराज फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित)

प्रश्न-29) कुछ मंदिरों की दीवारों पर कामुकता की छवि क्यों देखी जा सकती है?

उत्तर: मंदिर की दीवारों पर आप ये चित्र देख सकते हैं जो शारीरिक, भावनात्मक और कामुक भोग की पराकाष्ठा को दर्शाते हैं। यदि आप मंदिर के अंदर जाते हैं, तो वहां कुछ भी नहीं है। पूर्ण शून्यता, केवल आत्म-स्वरूप। यह मानव जीवन को संदर्भित करता है। जब कोई मंदिर में आता है और चित्रों से आकर्षित होता है और इसका आनंद लेता है, तो आचार्य, गुरु जो यह देखता है, कहता है, बहुत अच्छा है कि (आध्यात्मिक) मंदिर में प्रवेश करने का समय नहीं है। पहले जीवन में सभी भौतिक सुख और इच्छाओं को पूरा करें। जब सभी प्रकार के भोग और इच्छाओं को पूरा करने से संतुष्ट होकर, वह इन चित्रों के प्रति आकर्षित नहीं होता है। वे चित्र किसी भी तरह से उन्हें प्रभावित नहीं करते हैं, उन्हें यहां तक लगता है कि वे चित्र वहां नहीं हैं, तब मंदिर में आएंगे वे सीधे अंदर जाना चाहेंगे। तब गुरु, आचार्य, जिन्होंने इसे समझा, कहते हैं कि अब मंदिर में प्रवेश करने का समय है, आध्यात्मिकता में प्रवेश करने का।

(पी.एम.श्रीनिवासन मेमोरियल, स्नेहराज फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित)

प्रश्न-30) हिंदू मंदिर की परिक्रमा क्यों करते हैं?

उत्तर : जिस तरह ग्रह सूर्य के चारों ओर घूमते हैं और चंद्रमा पृथ्वी के चारों ओर घूमता है, उसी तरह सनातन और हिंदू भगवान के चारों ओर घूमते हैं। यह ईश्वर-केंद्रित, आत्मा-केंद्रित जीवन शैली का सुझाव देता है। सभी कर्म, विचार, प्रवचन, गतिविधियाँ, सुख और दुःख भगवान को समर्पित हैं। मैंने खुद को भगवान को समर्पित कर दिया है। भगवान मेरा मार्गदर्शन करें, मेरे पास केवल भगवान हैं, यह जीवन भगवान के लिए है, यह जीवन भगवान की कृपा के लिए है। इसलिए, मेरा जीवन भगवान के इर्द-गिर्द घूमता है, यह अवधारणा मंदिर की परिक्रमा से सुझाई जाती है। इसी तरह खुद के चारों ओर परिक्रमा करना एक आत्मा केंद्रित जीवन का सुझाव देता है।

(पी.एम.श्रीनिवासन मेमोरियल, स्नेहराज फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित)

प्रश्न-31) हिंदुओं का सामाजिक केंद्र कौन सा है? इसके क्या कार्य हैं?

उत्तर : मंदिर सनातनियों के लिए सामाजिक इष्टि से शक्ति का केंद्र, ज्ञान का केंद्र तथा संस्कृति का केंद्र हैं। मंदिर ब्रह्मांडीय ऊर्जा का प्रजनन केंद्र है। मंदिर का देवता एक प्रजनन तांत्रिक यंत्र है जो ब्रह्मांडीय ऊर्जा को अवशोषित करता है। इसी प्रकार, जब कोई साधक परिक्रमा करता है, तो साधक को एक चमत्कारी शक्ति का अनुभव होता है, क्योंकि मंदिर वास्तु के नियमों के अनुसार बनाया गया है। सनातनियों की सभी सामाजिक गतिविधियाँ मंदिर के इर्द-गिर्द केंद्रित होती हैं। मंदिर के आसपास, मंदिर के नियंत्रण में गुरुकुलम, स्वास्थ्य देखभाल केंद्र, अनाथालय, महिला सुरक्षा केंद्र, खेल और सांस्कृतिक केंद्र जैसे शिक्षा केंद्र और समाज के कल्याण और कल्याण के उद्देश्य से केंद्र हैं। इनका संचालन समाज समिति (स्थानीय हिंदू परिषद) के आचार्य द्वारा किया जाता है। यदि आज मंदिर इन आवश्यकताओं को पूरा नहीं करते हैं, तो हिंदू समुदाय की जिम्मेदारी है कि उन्हें इस ओर लाया जाए।

(पी.एम.श्रीनिवासन मेमोरियल, स्नेहराज फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित)

प्रश्न-32) मंदिर और शरीर के बीच क्या संबंध है?

उत्तर : दोनों ही शरीर हैं। शरीर प्राण से आच्छादित है (भ.गी. 13/2,3)। मंदिर देवता का शरीर बन जाता है। मंदिर में देवता शरीर में प्राण की तरह है। मंदिर में सभी अनुष्ठान देवता के इर्द-गिर्द केंद्रित होते हैं। इस प्रकार मंदिर एक महान संदेश फैलाते हैं कि कैसे ब्रह्मांड की सभी गतिविधियाँ ईश्वर पर केंद्रित हैं, उसी तरह शरीर की सभी गतिविधियाँ आत्मा पर केंद्रित होनी चाहिए।

(पी.एम.श्रीनिवासन मेमोरियल, स्नेहराज फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित)

प्रश्न-33) आपने क्यों सुना है कि 'ओम' केवल हिंदुओं के लिए ही नहीं बल्कि पूरी मानवता के लिए है?

उत्तर : हिंदू धर्म में सब कुछ पूरी मानवता का है। भले ही कोई हिंदू धर्म का विरोध करता हो, लेकिन की ना कबि हिंदू धर्म के द्वारा तक पहुंचना ही पड़ेगा, ताकि अंततः परम सत्य तक पहुंचा जा सके। क्योंकि हिंदू धर्म शाश्वत सत्य, शाश्वत वैज्ञानिक मूल्यों को संरक्षित और सिखाता है।

अब हम औंकारम की बात करते हैं। पश्चिमी लोगों ने भी औंकार का अस्पष्ट उल्लेख किया है। वे कहते हैं कि शुरुआत में एक ध्वनि थी, कि सृष्टि की शुरुआत में देवदूतों और अप्सराओं ने अपनी तुरही बजाई और ध्वनि उत्पन्न की। इसी तरह, आधुनिक विज्ञान (बिग बैंग थ्योरी) कहता है कि सृष्टि एक विस्फोट से हुई। हम जानते हैं कि यहाँ सृष्टि से जुड़े हर उदाहरण में ध्वनि थी। यह औंकार के अलावा और कुछ नहीं है। हिंदू आदि शब्द, सृष्टि की शुरुआत में तुरही की आवाज़ और आदि विस्फोट की आवाज़ को समझने में सक्षम थे और उन्होंने पाया कि यह औंकार है। अंतर केवल इतना है कि अन्य लोग नहीं समझ पाए।

(पी.एम.श्रीनिवासन मेमोरियल, स्नेहराज फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित)

प्रश्न-34) क्या ब्रह्मांड में औंकार ध्वनि मौजूद है?

उत्तर : ब्रह्मांड अभी भी फैल रहा है। वे विकास कंपन ओम कारम हैं। इस प्रकार विकासशील ब्रह्मांड में अभी भी औंकार की ध्वनि है। यदि कोई इस नाद को सुनने की कोशिश करता है, तो वह इस नादब्रह्म को ध्यान के नंगे कान से या उन्नत ध्वनिक उपकरणों की मदद से सुन सकता है। वह ध्वनि तब तक मौजूद रहेगी जब तक सृष्टि मौजूद है।

(पी.एम.श्रीनिवासन मेमोरियल, स्नेहराज फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित)

प्रश्न-35) औंकार की उत्पत्ति कैसे हुई?

उत्तर : अपने अस्तित्व को अनुभव करने और जानने को परम आत्मा को लगा तो वह अनेक होना चाहता है या अपनी भावनाओं, शक्ति, कर्म और ज्ञान को व्यक्त करना चाहता है, तब उसने अपनी इच्छा शक्ति से कल्पना की। वह पहला विचार ही पहली ध्वनि थी, आदि शब्द, ओम। इसमें सभी विद्यमान और अविद्यमान चीजों का नाम रूप या ध्वनि रूप समाहित है, चाहे वे जीवित हों या निर्जीव।

(पी.एम.श्रीनिवासन मेमोरियल, स्नेहराज फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित)

प्रश्न-36) औंकार को ईश्वर का प्रवेशद्वार कहने का क्या कारण है?

उत्तर: सृष्टि से पहले, वृक्षों से पहले, जीवन के जालों से पहले, धरती से पहले, सौरमंडल से पहले, तारों से पहले, आकाशगंगा से पहले, नेबुला से पहले हर जगह सिर्फ़ ईश्वर ही था। सिर्फ़ ईश्वर। ईश्वर से ही सृष्टि की शुरुआत हुई औंकार से। इस तरह नेबुला, आकाशगंगा, सौरमंडल, धरती-चाँद, वनस्पति, जीव-जंतु सबकी उत्पत्ति हुई। इस तरह परम ईश्वर और बहुआयामी सृष्टि के बीच, या उन्हें अलग करने वाला, “ॐ” है। इसीलिए “ॐ” को ईश्वर का द्वार कहा जाता है।

(पी.एम.श्रीनिवासन मेमोरियल, स्नेहराज फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित)

प्रश्न-37) ॐ को ब्रह्मांड का बीज कहने का क्या कारण है?

उत्तर : जिस प्रकार मिट्टी में पड़ा बीज मिट्टी से पोषक तत्वों को अवशोषित करके वृक्ष बन जाता है, उसी प्रकार औंकारम् ब्रह्म से पोषक तत्वों को ग्रहण करके ब्रह्मांड में विकसित होता है। इसीलिए औंकारम् को विश्व बीजम् कहा जाता है। इस प्रकार औंकारम्/ प्रणवम्/ नाद ब्रह्मम् या शब्द ब्रह्मम् के तीन चरण हैं।

अ, ऊ, म..

- 1) अ - सृष्टि को संदर्भित करता है - ईश्वर की ब्रह्मदेव अवधारणा।
- 2) ऊ - विस्तार - ईश्वर की विष्णु अवधारणा;
- 3) म - पुनर्मिलन - भगवान की शिव अवधारणा।

इस प्रकार सृष्टि ईश्वर से आती है और विस्तार होकर ईश्वर में विलीन हो जाती है। इस प्रकार एक सृष्टि का इतिहास भी एक औंकार का इतिहास है।

(पी.एम.श्रीनिवासन मेमोरियल, स्नेहराज फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित)

प्रश्न-38) मंत्रों में सबसे पहले औंकार का प्रयोग क्यों किया जाता है?

उत्तर : मंत्रों में सबसे पहले औंकार का प्रयोग किया जाता है क्योंकि यह ईश्वर तक पहुँचने का द्वार है। मंत्र में देवता का नाम रूप या अवधारणा जो भी हो, इसका उद्देश्य यह भी इंगित करना है कि मंत्र एक परमात्मा के लिए है। अगर कोई भगवान को कुछ अप्रित करना चाहता है या परमात्मा की स्तुति करना चाहता है तो समर्पण या स्तुति के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले श्लोक की शुरुआत में औंकार का

प्रयोग किया जाता है। जब ऐसा होता है, तो इसका मतलब है कि किसी भी भाषा, नाम, रूप, निराकार, अभिव्यक्ति, पूजा या प्रार्थना में समर्पण और स्तुति उस एक परमात्मा के लिए है। उदाहरण के लिए, ओम गणपति मेरी प्रार्थना स्वीकार करें, ओम दुर्गा मेरी भेंट स्वीकार करें, ओम लक्ष्मी मुझे आठ ऐश्वर्य प्रदान करें, ओम शिव मुझे आशीर्वाद दें, ओम विष्णु मुझे दर्शन प्रदान करें, आदि। यहाँ नाम, रूप, यद्यपि अनेक हैं, ओम के प्रयोग से एक ही परब्रह्म को संबोधित किया गया है। बस इतना ही है कि भक्तों की प्रकृति, आवश्यकता, रुचि और धारणा के अनुसार अलग-अलग नाम और रूप हैं।

(पी.एम.श्रीनिवासन मेमोरियल, स्नेहराज फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित)

प्रश्न-39) ओं या ओ३म् को संस्कृत में “ॐ” लिखा जाता है, जो सही है?

उत्तर : यद्यपि ओम (ओं या ओ३म्) सही है, लेकिन इसे लाक्षणिक और तकनीकी रूप से उम् (ॐ) के रूप में लिखा जाता है ताकि इसके इच्छित श्रोताओं को संदेश दिया जा सके। अब आइए उस अच्छे इरादे की जाँच करें। हम सभी जानते हैं कि “ओम” के तीन चरण हैं।

- 1) अ - सृष्टि को संदर्भित करता है - भगवान ब्रह्मा की अवधारणा
- 2) उ - विस्तार - भगवान विष्णु की अवधारणा;
- 3) म - पुनर्मिलन - भगवान शिव की अवधारणा।

लेकिन “ॐ” में केवल दो चरण हैं।

- 1) उ - विस्तार - भगवान विष्णु अवधारणा;
- 2) म - पुनर्मिलन - भगवान शिव अवधारणा।

ओम (ओं या ओ३म्) की पूजा करते समय, 'अ' कर्म होता है जो ब्रह्म-देव अवधारणा है। इस प्रकार उपासकों को भगवान ब्रह्मा की कर्म रचना के भाग के रूप में पुनर्जन्म का आशीर्वाद मिलेगा। यह इंगित करने के लिए कि पुनर्जन्म मानव जन्म का लक्ष्य नहीं है, बल्कि वास्तविक लक्ष्य मोक्ष है, ऋषियों ने ओम (ओं या ओ३म्) से 'अ', ब्रह्म अवधारणा को हटा दिया और भाषाओं की जननी संस्कृत में "उम्" (ॐ) लिखा। यहाँ उम् (ॐ) का उच्चारण भी ओम (ओं या ओ३म्) ही किया जाना चाहिए क्योंकि हिंदू कहते हैं कि आपको बाहरी प्रकृति, रूप को नहीं देखना चाहिए। कृपया आंतरिक, आंतरिक सत्य को देखने

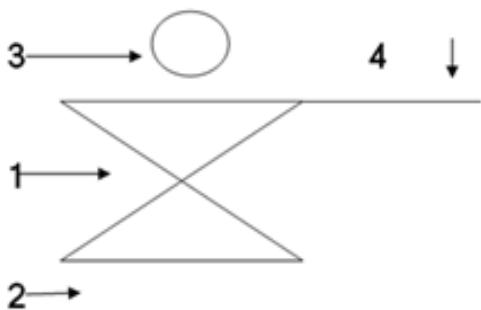
का प्रयास करें, इसके आंतरिक अर्थ को समझकर, इसकी आध्यात्मिक प्रकृति को समझकर।

(पी.एम.श्रीनिवासन मेमोरियल, स्नेहराज फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित)

प्रश्न-40) शिवलिंग संकल्प क्या है? यह कैसे विकसित हुआ?

उत्तर: लिंगम शब्द के दो अर्थ हैं। एक है "लिम" जिसका अर्थ है पूर्णता। दूसरा है "गम" जिसका अर्थ है यात्रा करना। इस प्रकार "लिंगम" शब्द का अर्थ है वह सब कुछ जो पूर्णता की ओर बढ़ता है। अब देखते हैं कि पूर्णता से अलग कौन है। पूर्णता का अर्थ है परमात्मा। सभी चल और अचल, जो उस परमात्मा के रूपान्तरण हैं, जो सृष्टि में है, पूर्णता से अलग हैं। वे पूर्णता से अलग होने के कारण ही पूर्णता की ओर बढ़ रहे हैं। इस प्रकार सभी भौतिक चीजें लिंग या शरीर हैं। यदि पुरुष का शरीर पुरुषलिंग है, यदि स्त्री का शरीर स्त्रीलिंग है, यदि विजय का शरीर विजयलिंग है, यदि बाघ का शरीर बाघलिंग है, यदि सर्वशक्तिमान का शरीर सर्वश्वरलिंग है, यदि अमर का शरीर अमरलिंग है, यदि शक्तिलिंग शक्ति का शरीर है, तो उस परम चेतना को शिव के रूप में सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सर्वज्ञ, निर्गुण, निरहंकार, निर्विकार, निराकार, मंगलरूपण्य, परमेश्वर के रूप में संबोधित करने पर शिव का स्वरूप शिव का शरीर है। तो शिवलिंग का अर्थ है सर्वोच्च ईश्वर का शरीर और रूप।

अब देखते हैं कि इसे वह आकार कैसे मिला जैसा यह अब है। प्रेरणा अर्थवेदीय संहिता के मंत्र की अवधारणा है जो बिना शुरुआत या अंत के एक अग्नि स्तंभ की महिमा करती है। हम लिंग पुराण में भी एहि स्तंभ देखते हैं। यह घटना है। एक बार भगवान ब्रह्मा और भगवान विष्णु के बीच विवाद हुआ कि कौन श्रेष्ठ है। उन्होंने इस मुद्दे को शिव परमेश्वर के सामने उठाया। इस पर हँसते हुए भगवान शिवपरमेश्वर ने एक स्तंभ का रूप धारण कर लिया और कहा कि सबसे महान वह होगा जो मेरी शुरुआत और अंत का पता लगाएगा। इसलिए जो दो लोग उस स्तंभ की शुरुआत और अंत को मापने गए थे, वे लक्ष्य को देखे बिना लौट आए। यहां शिव महादेव द्वारा धारण किए गए स्तंभ रूप ने बाद में शिवलिंग अवधारणा और रूप को जन्म दिया जिसका अर्थ शिव का शरीर, शिवस्वरूपम है। वीरशैव समाज समाया में शिवलिंग ने वैज्ञानिक और बौद्धिक अवधारणा हासिल कर ली। यहाँ शिवलिंग के चार भाग हैं।



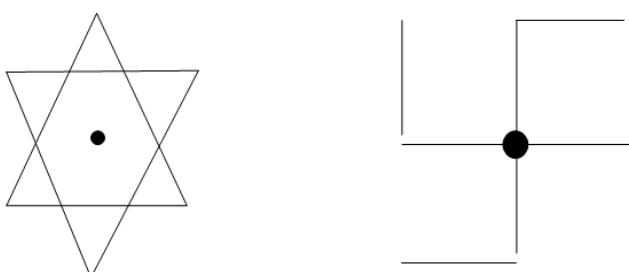
(1&2): दो त्रिभुज पराप्रकृति और अपराप्रकृति को दर्शाते हैं।

त्रिभुजों की छह भुजाओं में से, ऊपर की तीन भुजाएँ सत्, चित् और आनंद को दर्शाती हैं और नीचे की तीन भुजाएँ सत्त्व, रजस और तम को दर्शाती हैं।

3): पूर्णता की अवधारणा के रूप में ऊपर एक गोला

(4): दाईं ओर एक समानांतर रेखा। यह आध्यात्मिक साधक को दर्शाती है

शिवलिंग (भगवान का रूप) के कुछ अन्य उदाहरण भी नीचे दिए गए हैं:-



(पी.एम.श्रीनिवासन मेमोरियल, स्नेहराज फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित)

प्रश्न-41) क्या शिवलिंग का स्वरूप भौतिक रूप से सार्वभौमिक ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करता है?

उत्तर : हां, शिवलिंग न केवल एक आध्यात्मिक साधन है जो सार्वभौमिक ऊर्जा को समाहित करता है, बल्कि एक भौतिक साधन भी है। आइए एक तुलनात्मक अध्ययन करें। परमाणु रिएक्टर जबरदस्त ऊर्जा को रोकता है एक भौतिक उपकरण है। यह एक वैज्ञानिक तथ्य है कि शिवलिंग के आकार का (परमाणु रिएक्टर) भवन परमाणु के संलयन या विखंडन द्वारा परमाणु से बाहर निकलने पर ब्रह्मांडीय ऊर्जा को सुरक्षित रूप से धारण करने की क्षमता रखता है। इसी तरह, सबसे अधिक दबाव को सुरक्षित रूप से

धारण करने वाले उपकरण का आकार दो शिवलिंगों को जोड़ने के आकार जैसा है। यह एक गैस सिलेंडर है। यहाँ फिर से यह एक और वैज्ञानिक तथ्य है कि केवल शिवलिंग के आकार का उपकरण ही जबरदस्त दबाव को सुरक्षित रूप से धारण करने की क्षमता रखता है। इसलिए शिवलिंग भौतिक रूप से विश्वशक्ति का प्रतिनिधित्व करता है।

(पी.एम.श्रीनिवासन मेमोरियल, स्नेहराज फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित)

प्रश्न-42) ऋषिगण शिव मंदिरों में शिवलिंग प्रतिष्ठा को प्रोत्साहित क्यों करते हैं?

उत्तर : शिवलिंग के स्वरूप में एक छिपी हुई राजा है। इसका आकार इस प्रकार बनाया गया है कि यह मन की एकाग्रता स्थापित कर सके। शिवलिंग का शीर्ष भाग परितारिका का प्रतिनिधित्व करता है। शिवलिंग को निरंतर देखते रहने से मन और बुद्धि एकाग्र हो सकती है और ध्यान में प्रवेश कर ध्यानसमाधि की सहायता से ईश्वर-साक्षात्कार प्राप्त किया जा सकता है। इसलिए ऋषि महर्षियों ने साधना को बढ़ावा देने के लिए मंदिरों में शिवलिंग की स्थापना को प्रोत्साहित किया।

(पी.एम.श्रीनिवासन मेमोरियल, स्नेहराज फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित)

प्रश्न-43) त्रिमूर्ति अवधारणा का वैज्ञानिक विश्लेषण:

उत्तर: त्रि मूर्ति की अवधारणा वह अवधारणा है जो तब आई जब विभिन्न ऋषियों ने उस एक सर्वोच्च सत्ता, परब्रह्म की अलग-अलग बाह्य अभिव्यक्तियों को अलग-अलग दृष्टिकोणों से देखा। यहाँ ये तीन अलग-अलग अवधारणाएँ एक ईश्वर के अलग-अलग नाममात्र रूप हैं। यही बात ऋग्वेद 1.164.46 में कहता है, "एकम सत्, विप्र बहुधा वदंति" ने कहा कि ईश्वर एक है, विद्वान् कहते हैं कि उसके अलग-अलग बाह्य रूपों को देखकर कई हैं। आइए अब इन अवधारणाओं को एक-एक करके देखें।

V-1) विष्णु अवधारणा :

विष्णु शब्द का अर्थ है सर्वव्यापी। यह संपूर्ण सृष्टि उसी ईश्वर की अभिव्यक्ति है, इसलिए यह संपूर्ण सृष्टि व्याप्त है। आइए देखें कि इस विस्तार को कैसे दर्शाया गया है।



क्षीर सागर में, क्षीर सागर क्या है? यह कोई और नहीं बल्कि मिल्की वे गैलेक्सी है, जो सूर्य और ग्रहों सहित तारों का एक समूह है। अब यहां अनंत (अनंत सिरों वाला सर्प) है, जो क्षीर सागर में बागवान विष्णु का शर्या है। यह अनंत कौन है? अंतहीन, यह शर्या अंडाकार के आकार में कई वृत्तों से बनी है। यह दर्शाता है कि ये क्षुद्रग्रहों, ग्रहों, तारों और नक्षत्रों की कक्षाएँ और प्रक्षेप पथ हैं। इस प्रकार विष्णु की अवधारणा ऋषियों द्वारा उस सार्वभौमिक प्रेरक शक्ति को सुझाने और सिखाने के लिए खींची गई एक तस्वीर है जो सार्वभौमिक और व्यापक रूप से उनकी संपूर्ण रचना और असंख्य उपग्रहों, ग्रहों, तारों और नक्षत्रों की कक्षाओं में व्याप्त है।

V-2) नारायण अवधारणा (भगवान विष्णु अवधारणाओं में से एक):



नारायण वह है जो जल में निवास करता है। नारायण का स्वरूप क्या है? आपको पानी में लेटे हुए विष्णु की छवि मिलेगी। पहला जीवन जल में ही उत्पन्न हुआ था। इसका मतलब है कि जीवन की रचना करने वाला ईश्वर अवश्य ही जल में होगा, है न? इस प्रकार, नारायण संकल्प ऋषियों द्वारा बनाया गया एक चित्र है, जो आम लोगों को संदेश देने के लिए पानी में परमात्मा को दर्शाता है।

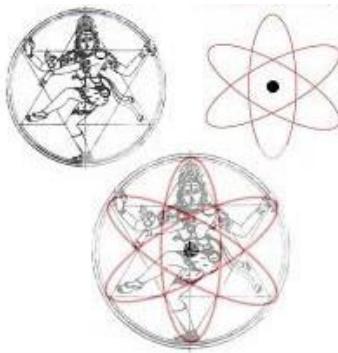
S-1) अर्धनारीश्वर अवधारणा (भगवान शिव की एक अवधारणा) :

हमारे लिए, इस सारी सृष्टि और जीवन के अस्तित्व का कारण सूर्य का प्रकाश है। अगर प्रकाश न हो, तो सृष्टि का विनाश हो जाएगा। प्रकाश के बिना जीवन का अस्तित्व नहीं हो सकता। इसलिए प्रकाश ही इस जीवन और ब्रह्मांड की प्रेरक शक्ति है। ऋषियों ने अर्धनारीश्वर की अवधारणा तब बनाई जब ऋषियों ने उस ईश्वर, परब्रह्म को सार्वभौमिक प्रेरक शक्ति के रूप में आम लोगों के लिए सूर्य प्रकाश के रूप में चित्रित किया। इसके लिए हमें प्रकाश की प्रकृति की वैज्ञानिक समझ जानने की आवश्यकता है।



सृष्टि की सभी चीजें कणों से बनी हैं। फिर प्रकाश के बारे में तो यह गलत था। क्योंकि यदि इसे कण कहा जाए तो इसका स्वभाव तरंग होगा। वहीं यदि हम कहें कि प्रकाश तरंग है तो अगले ही क्षण यह कण हो जाएगा। इस प्रकार जब ऋषि ने क्षण भर में कण और तरंग में परिवर्तित हो जाने वाले सूर्य के प्रकाश को उस परम आत्मा के रूप में देखने की इच्छा की तो अर्धनारीश्वर की अवधारणा बन गई। जब आप कहते हैं कि यह कण है तो यह कण नहीं है। वहीं जब आप कहते हैं कि यह तरंग है तो यह तरंग नहीं है। यदि आप पूछें कि क्या यह कण है? तो निश्चित रूप से यह कण है। यदि आप पूछें कि क्या यह तरंग है? तो निश्चित रूप से यह तरंग है। अरे भ्रमित करने वाली बात, ऋषि को कोई भ्रम नहीं है, ऋषि ने परम आत्मा का प्रतिनिधित्व किया जो दोहरा रूप लेता है।

S-2) नटराज अवधारणा (भगवान शिव की अवधारणाओं में से एक) :



विज्ञान ने कहा है कि इस ब्रह्मांड में सभी चीजों की संरचना कणों से बनी है। अब, जब हम देखते हैं कि कण वस्तु की मूल संरचना में क्या कर रहा है, तो क्वांटम सिद्धांत कहता है कि कण बेचैन है, लगातार हिल रहा है और कंपन कर रहा है यानी नृत्य कर रहा है। इस प्रकार, एक वस्तु अपने नृत्य या कंपन या अपने परमाणु की हलचल के कारण वस्तु के रूप में बनी हुई है। हमारे आचार्यों और ऋषियों ने नटराज की अनूठी अवधारणा का उपयोग परमाणु की चमत्कारिक शक्ति को दिखाने के लिए किया है, जो अपना निरंतर नृत्या से एक वस्तु को एक वस्तु के रूप में रखकर इस ब्रह्मांड को बनाए रखता है।

B-1) The four-faced concept of Brahma :



ब्रह्म सृष्टि से जुड़ी नियामक शक्ति है। सृष्टि किन अवस्थाओं (पदार्थ की अवस्था) में है? चार अवस्थाएँ हैं। ठोस, तरल, गैसीय और प्लाज्मा। ये सृष्टि में पदार्थ की अवस्था से जुड़े परम आत्मा के चार मुख हैं। इस प्रकार जब सृजित वस्तुओं की अवस्था के आधार पर उस दिव्य शक्ति की कल्पना की गई तो ब्रह्म की चतुर्मुखी अवधारणा उत्पन्न हुई। जब हम यह अनुभव करते हैं कि मात्र कला अवधारणाओं में कितने महान वैज्ञानिक सत्य और सूत्र छिपे हुए हैं, वे ऋषि, हमारी विरासत हमें बिना सिखाए ही सब कुछ सिखा रही है, तो हम उस महान सनातन संस्कृति की विरासत के सामने हाथ जोड़कर नतमस्तक होते हैं। (पी.एम.श्रीनिवासन मेमोरियल, स्नेहराज फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित)

प्रश्न-44) षोडस संस्कृतियाँ (संस्कार):

उत्तर : आचार्यों ने हमें अपने जीवन काल में 16 आध्यात्मिक अनुष्ठान करने का आदेश दिया है, क्योंकि एक बच्चा अपनी माँ के गर्भ में जन्म से लेकर मृत्यु तक अपने जीवन के प्रत्येक चरण से गुजरता है, तब इन नए चरणों में भगवान, रिश्तेदारों और समाज के पूर्ण समर्थन की आवश्यकता होती है। ये सोलह (षोडस) अनुष्ठान हैं। इसके अलावा, ये अनुष्ठान खुद को उस देवत्व तक बढ़ाने का एक साधन हैं, जो हमें याद दिलाते हैं कि मनुष्य केवल एक पशु नहीं है, कैसे पशुता से उठकर एक पूर्ण मनुष्य बन सकता है और खुद में देवत्व कैसे समाहित का सकता है। अब आइए इन 16 या षोडस अनुष्ठानों को एक-एक करके देखें।

- 1) **गर्भधान:** यह विवाह के बाद और गर्भधारण से पहले दंपत्ति द्वारा प्रजनन क्षमता के लिए किया जाने वाला अनुष्ठान है।
- 2) **पुंसवन:** गर्भ की पुष्टि।
- 3) **सीमंतोनायन:** माता और अजन्मे बच्चे की सुरक्षा के लिए किया जाने वाला कर्म।
- 4) **जातक कर्म:** शिशु का शुद्धिकरण अनुष्ठान, नवजात शिशु के भविष्य के लिए प्रार्थना करना और जन्म कुंडली तैयार करना।
- 5) **नामकरण:** शिशु की जन्म कुंडली के आधार पर नामकरण।
- 6) **निष्क्रमण:** बच्चे को घर के बाहर, सूर्य के प्रकाश और प्रकृति के संपर्क में लाना।

- 7) **अन्नप्राशन:** बच्चे को पहली बार ठोस आहार देना।
- 8) **चौलम:** पहली बार बाल मुँडवाना।
- 9) **कर्णवेध:** कान छिदवाना।
- 10) **विद्यारम्भम:** साक्षरता की शुरुआत।
- 11) **उपनयनम:** दीक्षा/साधना के लिए गुरु के पास जाना, गुरु को खोजना। दरअसल, यह एक ऐसा संस्कार है जिसके माध्यम से कोई व्यक्ति सामाजिक व्यवस्था में हिंदू या सनातनी बनता है। दैवत प्रणाली का पालन करने वाले पूनुल (जो गर्भनाल को संदर्भित करता है जो उन्हें भगवान से जोड़ता है) का उपयोग करते हैं। लिंगायत लिंगधारण और लिंग दीक्षा का पालन करते हैं। किसी भी मामले में, सनातन के लिए दीक्षा एक बहुत ही आवश्यक प्रक्रिया है। अद्वैत परंपरा के अनुयायी अपनी कमर के चारों ओर सोने, चांदी या धागे से बनी पवित्र कमरबंद, अरंजना पहनते हैं। अरंजना कुंडलिनी शक्ति का प्रतीक है, दिव्य चेतना जो मूलाधार चक्र को घेरती है। यह संस्कार एक अनुस्मारक के रूप में कार्य करता है कि मानव अस्तित्व का अंतिम लक्ष्य समर्पित साधना के माध्यम से आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करना है, कुंडलिनी को जागृत करना और इसे ब्रह्मरंध तक निर्देशित करना, अंततः सहसार पद्म (सहस्र पुरुष) में खिलना। इस पवित्र परंपरा का मार्गदर्शन एक श्रद्धेय आध्यात्मिक गुरु द्वारा किया जाता है।
- 12) **वेदारम्भम:** गुरुकुल, पाठशाला में शिक्षा या सीखने की शुरुआत।
- 13) **केशांत या ऋतुशुद्धि:** यह पहली बार है जब बच्चा अपनी दाढ़ी, मूँछ और शरीर के बाल साफ करता है। कन्या शिशु के मासिक धर्म के अनुष्ठान।
- 14) **समावर्तन:** शिक्षा का समापन।
- 15) **विवाह:** विवाह समारोह।
- 16) **अंतेष्टि:** दाह संस्कार, मृत्यु के बाद के संस्कार।
(पी.एम.श्रीनिवासन मेमोरियल, स्नेहराज फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित)

प्रश्न-45) चार पुरुषार्थ, चार आश्रम, चार वर्णः

उत्तर : ऋषियों ने हमारी विरासत में मनुष्य के जीवन को सुचारू रूप से चलाने के लिए चार आश्रम, चार पुरुषार्थ और चार वर्ण बताए हैं। आइए हम एक-एक करके उन पर नज़र डालें।

प) चार पुरुषार्थ : ये वे लक्ष्य हैं जिन्हें मनुष्य के रूप में जन्म लेने वालों को अपने जीवन में प्राप्त करना चाहिए। आइए एक-एक करके देखें।

प-1) धर्म: धर्म की प्राप्ति। या सही और गलत को पहचानने की शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए। धर्माचार्य जैमिनी मुनि ने पूर्व मीमांसा में इस विषय पर गहराई से चर्चा की है।

प-2) अर्थ: शिक्षा के माध्यम से अर्थ या धन अर्जित किया जाना चाहिए। धर्माचार्य चाणक्य ने अर्थशास्त्र में इस विषय पर गहराई से चर्चा की है।

प-3) काम: धन से तीसरे पुरुषार्थ काम या पुण्य इच्छाओं की पूर्ति करना। धर्माचार्य वात्स्यायन ऋषि ने कामसूत्र में इस विषय पर गहराई से चर्चा की है।

प-4) मोक्ष : इस प्रकार जब सभी इच्छाएँ पूरी हो जाती हैं, तो मन आंतरिक गरीबी से अवगत होता है और इसके उन्मूलन के लिए प्रयास करता है। इस प्रकार व्यक्ति को आध्यात्मिक रूप से विकसित होना चाहिए और मानव जीवन के अंतिम लक्ष्य को प्राप्त करना चाहिए जो मोक्ष है। धर्माचार्य व्यासमहर्षि ने ब्रह्मसूत्र में इस विषय पर बहुत गहराई से चर्चा की है।

आ) चतुर आश्रम : मनुष्य की आयु के आधार पर प्रत्येक काल में क्या करना है, यह योजना है। एक-एक करके देखें।

आ-1) ब्रह्मचर्यश्रम : यह मनुष्य का प्रथम काल है। सभी को शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए। शिक्षा का वह काल ब्रह्मचर्य आश्रम से इंगित होता है।

आ-2) गृहस्थाश्रम : शिक्षा प्राप्ति के पश्चात अर्थ प्राप्त कर विवाह करके गृहस्थाश्रम ग्रहण करें। **आ-3) वानप्रस्थाश्रम :** सुंदर गृहस्थाश्रम के पश्चात मोक्ष प्राप्ति की तैयारी का काल।

आ-4) संन्यास : मोक्ष प्राप्ति को एकमात्र लक्ष्य मानकर संन्यासी की तरह जीवन जीने का काल। संन्यासी बनने के लिए घर-परिवार छोड़ने की कोई आवश्यकता या अनिवार्यता नहीं होती। किसी भी चीज से आसक्ति रहित, समझाव से, स्वार्थ रहित होकर तथा ईश्वर को समर्पित होकर साधना करने का काल।

(व) चतुर वर्ण : जो अपनाया जाता है, वह अपने स्वभाव से उत्पन्न गुण है। ब्राह्मण, क्षात्रि, वैश्य और शूद्र गुणों को अपनाया जा सकता है। जब बच्चा ब्रह्मचर्य लेने जा रहा हो या उसकी शिक्षा प्रारंभ हो, तो यह देखना चाहिए कि उसके लिए कौन सा वर्ण लाभदायक होगा। बच्चे की रुचि किस क्षेत्र में है, यह समझना चाहिए। यह कभी विरासत में नहीं मिलता। बच्चों का गुण या वर्ण पिता या माता का गुण या वर्ण होना जरूरी नहीं है। यह बच्चे का अपना गुण है, जन्मजात गुण है। (भ.गी. 4/13, 18/41) वह गुण चार प्रकार का है: ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। ये प्रत्येक मनुष्य के जन्मजात गुण हैं। यह व्यर्थ है, अगर ब्राह्मण गुण वाला व्यक्ति क्षत्रिय विद्या सीखता है। इसी तरह यह व्यर्थ है, अगर क्षत्रिय गुण वाला बच्चा वैश्य विद्या सीखता है। उस बालक के पूर्ण विकास के लिए उसके जन्मजात गुण को खोजकर या समझकर उसके संबंध में शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए। वर्ण नाम का कारण यह भी है कि प्रत्येक गुण के संबंध में प्रत्येक शरीर की प्रभामण्डल के लिए एक अलग रंग होता है। इस प्रकार, यदि हम शरीर की प्रभामण्डल के रंग को समझ सकते हैं, तो हम उस बालक के गुण को भी समझ सकते हैं। तदनुसार, हम बालक की शिक्षा या अध्ययन योजना की व्यवस्था कर सकते हैं।

आइए अब हम चारों वर्णों को एक-एक करके देखें। (भ.गी. 18/42, 43, 44)

- 1. ब्राह्मण वर्ण (नीला रंग) :** इस वर्ण के गुण हैं - शांति, संयम, तपस्या, स्वच्छता, धैर्य, कुटिलता से रहित होना, आध्यात्मिक ज्ञान, शास्त्रार्थ, ईश्वर में विश्वास और स्वाध्याय।
- 2. क्षत्रिय वर्ण (लाल रंग) :** वीरता, तेज, वीरता, शक्ति, दृढ़ निश्चय, साधन संपन्नता, पराक्रम, युद्ध में पीछे न हटना, उदारता, प्रशासनिक योग्यता, ये स्वाभाविक क्षत्रिय गुण हैं।
- 3. वैश्य वर्ण (पीला वर्ण) :** कृषि, पशुपालन, वाणिज्य - ये जन्मजात वैश्य के लक्षण हैं।
- 4. शूद्र वर्ण (श्वेत वर्ण) :** दूसरों की सेवा करना शूद्र का गुण है।

पिछले 50 वर्षों से मैं शूद्र हूँ... मजदूरी के लिए काम ढूँढ़ने वाला। वर्तमान में, मैं खुद को उपलब्धियों और व्यक्तिगत विकास के लिए व्यापार करना चाहता हूँ, तो वैश्य बन जाऊँगा, फिर धर्म रक्षा के लिए क्षत्रिय और अंत में ब्राह्मण बनने का प्रयास करूँगा। मेरा मानना है कि यह प्रगति संभव है। ☺ (पी.एम.श्रीनिवासन मेमोरियल, स्नेहराज फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित)

प्रश्न-46) क्या हिंदू धर्म या सनातन धर्म में जाति व्यवस्था है? जाति व्यवस्था किसकी देन है?

उत्तर :- हिंदू धर्म या सनातन धर्म के मूल ग्रंथों में कहीं भी जाति व्यवस्था का उल्लेख नहीं है, चाहे वह वेद हो, उपनिषद हो, पुराण हो, दर्शन हो या महाकाव्य हो। यह दर्शाता है कि हिंदू धर्म या सनातन धर्म में कोई जाति व्यवस्था नहीं है। फिर वर्णाश्रम का उल्लेख है। इसका जाति व्यवस्था से कोई लेना-देना नहीं है जैसा कि हमने पिछले प्रश्नोत्तर सत्र में देखा है। इसलिए हिंदू या भारत समाज में जाति व्यवस्था समाज या राष्ट्र के आर्थिक वितरण और संतुलन को बनाए रखने के लिए एक राजनीतिक आंदोलन के रूप में विकसित हुई है। इस प्रकार, जाति व्यवस्था भारतीय राजनीति का एक उत्पाद है और इसका हिंदू या दार्शनिक-सांस्कृतिक प्रवाह से कोई लेना-देना नहीं है। अब हम जाति व्यवस्था के उदय और इसकी वर्तमान जटिलताओं पर एक नज़र डालेंगे। शुरुआती समय में भी, भारत में कामकाज केंद्र और गुरुकुल थे जो सभी के लिए काम और सभी के लिए जीवन के लक्ष्य के साथ काम करना सिखाते थे। ये गुरुकुल राजनीतिक नियंत्रण के तहत नहीं बल्कि स्व-शासित अधिकारों के साथ स्वतंत्र रूप से कार्य करते थे। यहाँ विभिन्न व्यवसायों में कुशल होकर निकले बच्चे विभिन्न व्यवसायों में संलग्न होते हैं और अपनी राय व्यक्त करने और सौदेबाजी करने के लिए वे कामकाज संघ (यूनियन) बनाते हैं। इनमें से प्रत्येक कामकाज समूह (यूनियन) को जाति के रूप में जाना जाता है। जातियाँ बस एक ही कामकाज करने वाले लोगों के संघ (यूनियन) या समूह हैं।

फिर 1200 ई. के बाद से जब भारत पर विदेशी सांस्कृतिक आक्रमण धर्मांतरण की लहर के साथ आए, तो जो लोग इन ट्रेड यूनियनों (जाती व्यवस्था) में थे, उन्होंने अपनी सांस्कृतिक परंपराओं, रीति-रिवाजों और सिद्धांतों की रक्षा के हथियार के रूप में अपने जाति परिवार को मजबूती से पकड़ लिया और इसके भीतर उन्होंने खुद को नियंत्रित किया। इसके परिणामस्वरूप सुख, दुख, शादी, भोजन और पानी के बीच उनके पेशे या जाति परिवार तक ही सीमित हो गए। वे नियम हैं जिनकी आप आज आलोचना कर रहे हैं। तब इसने हिंदू सनातन समाज के अस्तित्व के लिए बहुत मदद की और आज भी मदद कर रही है। इसलिए जबकि इस जाति व्यवस्था का उपयोग विदेशी सांस्कृतिक आक्रमण के खिलाफ सबसे भयंकर संघर्ष के लिए एक हथियार के रूप में किया जा रहा था, इसका बुरा विकास यह है कि यह कुछ

व्यक्तियों के लिए सम्मान और श्रेष्ठता का पैमाना बन गया है। यह असंतुलन आज भी समाज को बहुत बुरी तरह प्रभावित कर रहा है। इस प्रकार यह कामकाज संघ या जाति योजना हिंदू धर्म या आचार्यों या तत्व सिद्धांत का हिस्सा नहीं थी, बल्कि एक उत्पाद या प्रणाली थी जो सामाजिक और राजनीतिक रूप से स्वाभाविक रूप से उत्पन्न हुई थी।

प्रश्न-47) पाँच महायज्ञ कौन-कौन से हैं?

उत्तर : विश्व शांति, विश्व एकता और विश्व रक्षा के लिए पाँच यज्ञ (पंच महायज्ञ) किए जाने चाहिए।

आइए एक-एक करके उन पर नज़र डालें।

- 1) **ब्रह्मा या ऋषि यज्ञ:** हमें अपने पूर्वजों और ऋषियों द्वारा दिए गए ज्ञान के भंडार का अध्ययन करके ज्ञान और बुद्धि प्राप्त करके ब्रह्मा / ऋषि ऋण को पूरा करना है।
- 2) **देवता यज्ञ:** पाँच भूत, देवताएँ और परमात्मा हैं जो मुझे और इस समस्थ विश्व को नियंत्रित और संरक्षित करते हैं, इसलिए इन देवताओं की प्रतिदिन अग्निहोत्र, याग, होम, इष्टदेवता पूजा आदि के तरीके से पूजा करनी चाहिए या उस परमात्मा की प्राप्ति के लिए साधना करनी चाहिए। इस प्रकार देवता का ऋण चुकाना चाहिए।
- 3) **पितृ यज्ञ:** कुल की समृद्धि के लिए बच्चों को जन्म देना, उन्हें परिवार, समाज, राष्ट्र और दुनिया के लिए अच्छे कर्म की शिक्षा देना, उन्हें अच्छे बनने के लिए बड़ा करना, अपने माता-पिता की प्रेम से देखभाल करना और दिवंगत पूर्वजों के लिए पितृ तर्पण क्रिया करना, इस प्रकार पितृ यज्ञ को पूरा करना।
- 4) **मनुष्य यज्ञ:** दया के कार्य करके, साथी मनुष्यों को भोजन और आश्रय प्रदान करके और योग्य लोगों की मदद करके मनुष्य यज्ञ करना चाहिए। इस प्रकार समाज का ऋण चुकाया जाना चाहिए।
- 5) **भूत यज्ञ:** साथी पक्षियों, जानवरों को भोजन दें। पेड़ों का पालन-पोषण करें और प्रकृति का संतुलन बनाए रखें, चंद्रमा, वर्षा, पृथ्वी, जल, वायु और हमारे निवास स्थान जैसे पहाड़, नदी, सागर,

बादल, जंगल आदि की रक्षा करें और हमारे अस्तित्व के लिए उनकी मदद के लिए प्रत्येक प्राकृतिक शक्तियों को धन्यवाद दें। इस प्रकार भूतों का ऋण चुकाया जाना चाहिए।

प्रश्न-48) प्रथम पूजा यानी हर शुरुआत में भगवान गणेश की पूजा क्यों की जाती है?

उत्तर : जैसा कि मलयालम में कहा गया है, अगर दीवार है, तभी उस पर लिखा जा सकता है। इसी तरह अध्यात्म, भगवान, देवी, पूजा, व्रत और उपासना सभी का अस्तित्व तभी है जब भक्त वहां अभ्यास करने के लिए मौजूद हो। जहां शिव चेतना हैं और पार्वती प्रकृति हैं, वहीं गणपति प्रथम रचना, मुमुक्षु, साधक और भक्त हैं। हिंदू दर्शन में सभी रूपों और देवताओं की तरह, भगवान गणेश के रूप की अपनी छवि आजाएं हैं। गणेश को प्रणवम (ॐकारम) का पहला रूप माना जाता है। गणपति का महान दर्शन यह है कि प्रणव सबसे पहले शिव शक्ति के मिलन से आए थे। परंपरा के अनुसार, पहली पूजा भगवान गणपति के लिए आरक्षित है, जो पवित्र प्रणव मंत्र, ओंकार का प्रतीक हैं, और परमेश्वर के (मूलाधार चक्र में निवास करते हुए) प्रवेश द्वारा के रूप में कार्य करते हैं।

सृष्टि में गणेश महत (सार्वभौमिक बुद्धि) का प्रतिनिधित्व करते हैं, और बुद्धि प्रकृति का सर्वोच्च रूप है। वे मानव शरीर में बुद्धि का प्रतीक हैं। हिंदू धर्म में बुद्धि को प्रकृति का पहला और सर्वोच्च रूप (तत्त्व) माना जाता है।

प्राचीन भारतीय ग्रंथों में सृष्टि की प्रक्रिया का बहुत विस्तार से वर्णन किया गया है। बिंग बैंग के बाद से, जैसा कि हम समझते हैं, सृष्टि का वर्णन पश्चिमी विज्ञान के भौतिकी और रसायन विज्ञान से परे पहलुओं का उपयोग करके बहुत विस्तार से किया गया है।

सरल शब्दों में कहें तो सृष्टि एक वास्तविकता से शुरू हुई और अनेक रचनाओं में बदल गई। सृजन की प्रक्रिया शुरू करने वाली पहली वास्तविकताएँ

- 1) शिव/पुरुष/स्व या ईश्वर सिद्धांत,
- 2) विष्णु/पार्वती/प्रकृति ये प्रकृति सिद्धांत हैं।

सृष्टि में मौजूद हर चीज़ इन 2 अनंत वास्तविकताओं और सीमित वास्तविकताओं का संयोजन है।

सीमित वास्तविकताओं में से पहला सार्वभौमिक बुद्धि (महातत्व) है, जो गणेश के रूप में अवतरित हुआ। वह केवल शिव और पार्वती के करीब है। वह प्रकृति (पार्वती) के शरीर से शिव की छवि (पुत्र) के रूप में प्रकट हुआ। इसका मतलब है कि गणेश हमारा प्रतिनिधित्व करते हैं। भगवान्/देवता/आध्यात्मिकता का अर्थ तभी है जब हम (भक्त/साधक/उपासक) मौजूद हों, इसलिए सबसे पहले गणेश की पूजा करें जो मूल छवि हैं।

दूसरा पहलू यह है कि वे विघ्नेश्वर हैं। भगवान् गणेश की पूजा सबसे पहले इसलिए की जाती है ताकि कोई भी भौतिक या आध्यात्मिक बाधा हमें और हमारे कार्यों को छू न सके।

अब इसका दूसरा पहलू देखते हैं। ऋग्वेद की शुरुआत ही अग्नि की स्तुति से होती है। अग्नि-सूर्य का प्रकाश ही इस ब्रह्मांड का आधार है। प्रकाश की उपस्थिति के कारण ही यहाँ द्वैत है। अगर मेरे और तुम्हारे बारे में जात देनेवाला प्रकाश न हो तो क्या होगा? यह मुश्किल होगा।

तो अग्नि की पहली स्तुति... और जब वैदिक काल से पौराणिक काल में आया... प्रकाश या अग्नि को एक मूर्ति रूप (अनुभूत) की आवश्यकता थी... इसलिए गणेश ऋषियों द्वारा पाया गया रूप है। भगवान् गणेश को सर्व भक्षक, धूम वर्ण और धूम द्वजं के नाम से भी जाना जाता है। वे अग्नि के पर्यायवाची हैं। इस प्रकार, जब हम पहली बार गणेश की पूजा करते हैं, तो हम वैदिक परंपरा के अनुसार अग्नि की पूजा करते हैं। वैदिक परंपरा के अनुसार, जब अग्नि की पहली बार स्तुति की जाती है, तो यह गणेश की पहली स्तुति या पूजा होती है, जो अग्नि के पर्यायवाची हैं, जब अग्नि पौराणिक काल में प्रवेश किया तब वो गणेशजी बनगए।

जात रूप: भगवान् गणेश के 32 रूप हैं, जिनमें से प्रत्येक को अलग-अलग नामों से जाना जाता है

बालगणपति: बच्चे जैसा चेहरा। हाथों में फल, आम और गन्ना धरती पर धन का संकेत देते हैं।

तरुण गणपति: युवा दिखने वाले। आठ भुजाओं वाले भगवान् गणेश।

भक्ति गणपति: पूर्णिमा की तरह चमकने वाले, खासकर फसल के मौसम में। हमेशा खुश रहने वाले। हाथ में आम, नारियल और मिष्ठान्न.

वीरगणपति: योद्धा जैसा दिखने वाले। 16 भुजाओं वाले, प्रत्येक हाथ में हथियार लेकर युद्ध के लिए खड़े रहने वाले। उग्रमूर्ति।

शक्ति गणपति: यह गणेश चार भुजाओं वाले बैठे हुए रूप में हैं। कमज़ोरों को बचाने वाले रूप।

द्रविजगणपति: तीन सिर वाले गणेश। हाथों में ओला, कूज और जपमणि।

सिद्धिगणपति: भगवान गणपति जो सब कुछ हासिल करने की आत्म-संतुष्टि के साथ बैठते हैं। ऐसा माना जाता है कि इस भगवान गणेश की पूजा करने से सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं।

उच्छिष्ट गणपति: यह गणेश संस्कृति के संरक्षक हैं। 6 हाथों में अनार, कमल, माला और धान।

विघ्न गणपति: भगवान गणेश जो सभी बाधाओं को दूर करते हैं।

क्षिप्रगणपति: गणेश जो बहुत तेज़ी से काम करते हैं। सूँड में कीमती रत्नों से भरा एक बर्तन है। उग्रमूर्ति।

क्षिप्रप्रसाद गणपति: गणेश जो जल्दी प्रसन्न होते हैं। सूखी घास के सिंहासन पर बैठे।

हेरम्बा गणपति: पाँच मुख वाले, सफेद रंग के गणेश, कमज़ोरों के रक्षक के रूप में जाने जाते हैं। वे एक विशाल शेर पर सवार होते हैं।

लक्ष्मी गणपति: यह गणेश मोती के रंग के होते हैं। देवी लक्ष्मी के साथ बैठे हैं। हाथों में तोता और अनार। भगवान गणेश जो समृद्धि और धन देते हैं।

महा गणपति: ऐसा माना जाता है कि ब्रह्मांड की उत्पत्ति इन भगवान गणेश से हुई है। यह परमात्मा है। यह तीन आँखों वाला गणेश है। हाथों में अनार, नीली लिली और धन है। यह आमतौर पर मंदिरों में पाए जाने वाले गणेश हैं।

विजय गणपति: इस गणेश का मुख हमेशा विजयी रहता है। सभी सफलताओं के लिए सर्वश्रेष्ठ।

नृत्य करने वाले गणेश: यह गणेश कलाओं के स्वामी हैं। यह गणेश नृत्य करते हुए दिखाई देते हैं। इस गणेश की चार भुजाएँ हैं और उनकी उंगलियों में अंगूठियाँ भी दिखाई देती हैं।

उर्ध्व गणपति: 6 हाथों में धान, कमल और गन्ना।

एकाक्षर गणपति: तीन आँखों वाले गणेश। यह कमल के आकार के मूषक के साथ सवार होते हैं।

वरद गणेश: यह भगवान गणेश अपने हाथ में शहद लिए बैठे हैं।

त्रयाक्षर गणपति: इस गणेश का एक टूटा हुआ सींग और सूँड पर मोदक है।

हरिंद्रगणपति: यह गणेश एक आसन पर बैठे हैं।

एकदंत गणपति: यह गणेश नीले रंग के हैं। लड्डू प्रसाद है।

सृष्टि गणपति: यह गणेश लाल रंग के हैं। यह भगवान गणेश हैं जो सब कुछ बनाते हैं।

उद्दंड गणपति: ये दस भुजाओं वाले गणेश हैं जो धर्म के लिए लड़ते हैं।

ऋणमोचन गणपति: ये कर्ज से मुक्ति दिलाने वाले गणेश हैं। गुलाब का फूल इस गणेश का पसंदीदा फल है।

धुंडी गणेश: इस गणेश के हाथ में रुद्राक्ष की माला है।

द्विमुख गणपति: दो मुख वाले गणपति, जो हर तरफ से दिखाई देते हैं।

त्रिमुगा गणपति: सुनहरे कमल पर विराजमान।

सिंह गणपति: ये गणेश वीरता का प्रतीक हैं।

योग गणपति: ये गणपति योग मुद्रा में विराजमान हैं। ये गणेश ध्यानमग्न हैं।

दुर्गा गणपति: ये गणेश युद्ध में विजय का प्रतीक हैं। गणेश शत्रुओं पर विजय दिलाते हैं।

संकट हर गणपति: ये गणेश सभी दुखों को दूर करते हैं।

विनायक प्रार्थनाएँ:

| वक्र तुण्ड महाकाय

सूर्यकोटी समप्रभा:

निर्विघ्नं कुरुमे देवा

सर्व कार्येषु सर्वदा ।

॥ एकदन्त महाकायम्

तप्तकांचना सन्निभम्

लम्बोधरा विशालाक्षम्

वन्देहं गणनायकम् ॥

||| शुक्लाम्बरं विष्णु,

शशिवर्णं चतुर्भुजम्,

प्रसन्नवदनं ध्यायेत्,

सर्वविग्नोप शान्तये ॥॥

(पी.एम.श्रीनिवासन मेमोरियल, स्नेहराज फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित)

प्रश्न-49) प्रस्थान त्रय क्या हैं?

उत्तर : हमारे आचार्यों ने हिंदू धर्म के प्रचार के लिए तीन शास्त्र चुने हैं। वे क्रमशः उपनिषद, भगवद गीता और ब्रह्म सूत्र हैं। इन तीनों को एक साथ प्रस्थानत्रय कहा जाता है। यह सनातन धर्म का दैदीप्यमान स्वर्ण स्तंभ है। अगर हम हिंदू दर्शन की तुलना एक पेड़ से करें, तो उसका फल प्रस्थानत्रय है। 'प्रस्थानत्रय' शब्द का अर्थ है तीन महान और सार्वभौमिक योजनाएँ।

ये अनमोल और महान परियोजनाएँ क्या हैं?

ये परियोजनाएँ हैं **श्रुतिप्रस्थान, न्यायप्रस्थान** और **स्मृतिप्रस्थान**। इन परियोजनाओं के माध्यम से वेदों में वर्णित ब्रह्म तत्व की स्थापना की जाती है। **उपनिषद, ब्रह्म सूत्र** और **भगवद गीता** क्रमशः इन तीन आंदोलनों का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये वेदांत की मूल पुस्तकें हैं और श्रीमद् शंकराचार्य ने सनातन धर्म के स्वर्ण स्तंभ के रूप में इनका निर्माण किया था। एक उद्देश्यपूर्ण और सार्थक अच्छे कार्य के रूप में, यह मानव जगत और हिंदू दर्शन के लिए एक योगदान है।

सनातन धर्म भी तब तक उज्ज्वल रहेगा जब तक तीनों आंदोलन उज्ज्वल हैं। जब आंदोलन फीका पड़ जाता है; जब इसका अध्ययन और प्रचार फीका पड़ जाता है, तो सनातन धर्म की चमक फीकी पड़ जाती है। जो लोग सनातन धर्म के अस्तित्व और हिंदू धर्म के उत्थान की इच्छा रखते हैं, उन्हें केवल तीनों आंदोलनों का अध्ययन, अभ्यास और प्रचार करना होगा।

उपनिषद:- उपनिषद ब्रह्म से संबंधित हैं। उपनिषदों को श्रुति प्रस्थानम के नाम से जाना जाता है क्योंकि वे श्रुति (वेद) का हिस्सा हैं। मुक्तिकोपनिषद में उस समय के एक सौ आठ उपनिषदों का उल्लेख है।

आज हमारे पास लगभग दो सौ पचास उपनिषद् उपलब्ध हैं। ऐसा कहा जाता है कि एक हज़ार से ज्यादा उपनिषद् हैं। इनमें से दस उपनिषदों को श्रीमद् शंकराचार्य ने प्रस्थानत्रय के भाग के रूप में भाष्य की रचना करने के लिए अपनाया है।

'ऐतरेयम्, कथम्, केनम्

छान्दोग्यम्, तैत्तिरीयम् तथा

माण्डुख्यम्, मुण्डकं, प्रश्नम्

और ब्रह्मदारण्य ईशावुम्"

1.ऐतरेयोपनिषत् जो कि ऋग्वेद का एक भाग है।

2.कठोपनिषद्, जो कृष्णयजुर्वेद का एक भाग है,

3.तैथिरी उपनिषद्, 4.ईशावास्यं 5.बृहदारण्यकम् जो शुक्लयजुर्वेद का एक भाग है,

6.केनम् 7.छान्दोग्यम् सामवेद, 8.मुण्डकोपनिषद्, 9.माण्डूक्योपनिषद् और 10.प्रश्नोपनिषद् का एक हिस्सा है जो अर्थवेद का हिस्सा हैं।

भाष्यम् की रचना के लिए शंकराचार्य ने **दस उपनिषदों** को अपनाया था।

उपनिषदों ने सभी वेदों के प्रतिनिधित्व को स्वीकार करते हुए ब्रह्मांड की महिमा का आह्वान किया और उन्हें अपने उपनिषद् भाष्य के माध्यम से हमेशा के लिए स्वर्ण सिंहासन पर बिठा दिया।

ब्रह्मसूत्रम् : ब्रह्मसूत्र वेदांत धर्म की अवधारणाओं को स्पष्ट करके आत्मज्ञान का सही मार्ग दिखाता है।

ब्रह्मसूत्र की रचना बादरायण ने की थी, जिन्होंने उपनिषद् विचारों की गरिमा को श्रद्धापूर्वक नमन किया। ब्रह्मसूत्र को न्यायप्रस्थान के नाम से जाना जाता है क्योंकि यह न्याय प्रणाली का अनुसरण करता है। ब्रह्मसूत्र एक शानदार पुस्तक है जिसमें कुल पाँच सौ पंद्रह सूत्र हैं। ब्रह्मसूत्र में चार अध्याय हैं, प्रत्येक अध्याय में चार पाद हैं और प्रत्येक पाद में कई छंद हैं। अध्यायों को समन्वयम्, अविरोधम्, साधना और फलम् जैसे शीर्षक भी दिए गए हैं। पहले अध्याय में, वह अपनी बात को स्थापित करता है। ब्रह्म वह सब कुछ है जो देखा जाता है, जिसमें वृद्धि और विकास होता है। वाक्यांश इसे व्यक्त करने का तरीका है। दूसरा अध्याय वेदान्तसार के खिलाफ तर्कों का विश्लेषण और खंडन करता है। जब सांख्य,

वैशेषिक, बौद्ध और जैन धर्म के दर्शन वेदांत के खिलाफ आते हैं, तो तीसरा अध्याय तार्किक रूप से इसे खारिज करने पर ध्यान केंद्रित करता है। चौथा अध्याय निर्गुण ब्रह्म और सगुण ब्रह्म की दो अवधारणाओं की व्याख्या करता है। ब्रह्म सूत्र तर्क पर आधारित है। शंकराचार्य ने जो किया वह ब्रह्म सूत्र की व्याख्या के माध्यम से उपनिषदों को पुनर्स्थापित और प्रकाशित करना था, जो सदियों से यज्ञ संस्कार की चांदी की रोशनी और राख में मंद हो गए थे।

भगवद्‌गीता:-

भगवद्‌गीता वेदों का सारांश है। सात सौ श्लोकों वाली भगवद्‌गीता महाभारत के छठे पर्व भीष्मपर्वत के पच्चीसवें अध्याय से अठारह अध्यायों में समाहित है। हम देख सकते हैं कि गीता में ज्ञान, भक्ति और कर्म जैसे सनातनधर्म सिद्धांतों का सामंजस्य है। उक्त पुस्तक का लेखन उसी एक लक्ष्य को ध्यान में रखकर किया गया है।

श्रुति और स्मृति सनातन धर्म के दो भाग हैं। वेद, उपनिषद श्रुति प्रस्थानम के नाम से जाना जाता है और रामायण, महाभारत और पुराण स्मृति (धर्मशास्त्र) के अंतर्गत आते हैं। भगवद्‌गीता को स्मृतिप्रस्थानम के नाम से जाना जाता है क्योंकि यह महाभारत का एक भाग है जिसे कंठस्थ किया जाता है। भगवद्‌गीता वेदान्त सिद्धांतों के व्यावहारिक प्रशिक्षण में सहायता करती है।

जब समाधान के सभी रास्ते बंद हो गए, जब सुलह के सभी रास्ते अंधकारमय हो गए, तो युद्ध के अलावा कोई विकल्प नहीं था। जी हाँ, गीता उस अपरिहार्य युद्ध की दहलीज पर प्रकट होती है। यह आम लोगों का भी ध्यान खींचती है। गीता श्री कृष्ण और अर्जुन के बीच संवाद के रूप में हृदयस्पर्शी वार्तालाप की मधुर भावना को व्यक्त करती है। इन सभी कारणों से, भगवद्‌गीता, जो स्मृति प्रस्थानम का एक हिस्सा है, ने प्रस्थानत्रयम् में सबसे अधिक ध्यान आकर्षित किया है।

निष्कर्ष:-

उपनिषद, ब्रह्मसूत्र और गीता पर मनोहर भाष्य लिखकर अद्वैत धर्म की पुनर्स्थापना करने वाले श्रीमद्‌ शंकराचार्य स्वामी ने सभी युगों के विवेकियूं को चकित कर दिया है। आचार्यों ने इन सबकी व्याख्या की

और सनातन धर्म की पुनः स्थापना उस समय की जब अनिश्चितता की स्थिति थी और सब कुछ धवस्त हो सकता था।

आज अगर किसी को हिंदू दर्शन पर गर्व है, अगर वह कृतज्ञ है तो उसे आदि शंकराचार्य के प्रति कृतज्ञता प्रकट करनी चाहिए। शंकराचार्य के बाद आए सभी आचार्यों ने अपने-अपने सिद्धांतों की स्थापना के लिए प्रस्थानत्रय पर भाष्य की रचना की। इनमें रामानुजाचार्य, मध्वाचार्य आदि स्मरणीय हैं।

प्रश्न-50) इष्टदेवता पूजा अनुष्ठान चरण दर चरण:

उत्तर : (भ.गी. 9/22, 26, 27 और 10/8,11)

- 1) पूजा करने वाले व्यक्ति को पूजा से कम से कम तीन दिन पहले यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा और ध्यान का सख्ती से पालन करना चाहिए।
- 2) सबसे पहले भगवान की संकल्प के लिए इस्तेमाल किए गए सभी माध्यमों (फोटो, मूर्ति, जो भी हो) को साफ करें।
- 3) पूजा स्थल को साफ करें।
- 4) भगवान की अवधारणा को बनाए रखने के लिए कपड़ा, चादर या कागज बिछाएं।
- 5) भगवान की अवधारणा को स्थिर करें।
- 6) धारणा के हिस्से के रूप में प्राणायाम करें और औंकारम का नौ बार सही ढंग से उच्चारण करें।
- 7) एक साफ पानी के बर्तन में पानी लें। अपना दाहिना हाथ उस पात्र के ऊपर रखकर इस मंत्र का जाप करें

" ॥ गंगेचा, यमुनेचैव गोदावरी, सरस्वती, नर्मधे, सिंधु कावेरी जलस्मिन् सन्निधिम् कुरु ॥"

इस प्रकार जल में सात नदियों की उपस्थिति की कल्पना अवश्य की जाएँ।

- 8) अब इस पवित्र जल को पूजा स्थल, भगवान के माध्यमों, खुद पर और अपने आस-पास के लोगों पर छिड़कें।
- 9) ईश्वर माध्यमों के लिए भस्म, चंदन, हल्दी और केसर आदि से तिलक लगाएं।
- 10) पूजा में इस्तेमाल होने वाले फूलों से सजावट करें।

11) दीप और धूप को जलाएं.

दीपक जलाते समय पढ़ा जाने वाला मंत्र

| दीप ज्योति परब्रह्म

दीपं सर्वं तमोपहम्

दीपेन साधेथे सर्वम्

दीप ज्योतिर नमोस्तुते |

॥ शुभम् करोथु कल्याणम्

आयुरारोग्य वर्धनम्

सर्वं शत्रु विनाशाय

दीप ज्योतिर् नमोस्तुते ||

||| शुभम् करोति कल्याणम्

आरोग्यम धनं सम्बद्धाः

ज्ञानबुद्धिं वर्दिताय

दीपा ज्योतिर् नमोस्तुते |||

IV - दीपज्योतिर परब्रह्म

दीपज्योतिर जनार्दन

दीपमे हरतु पापम

दीप ज्योतिर् नमोस्तुते -IV

या

/ ॐ असतो मा सद्गमय,

तमसो मा ज्योतिर्गमय,

मृत्योर्मा अमृतांगमय

ॐ शांति शांति शांतिः ।

12) अब पूजा विधि शुरू होती है. सबसे पहले गणेश जी की स्तुति करें.

मंत्र // "गजाननं भूत गणादि सेवितम्, कपिथ जम्बू फलसार भक्षितम्, उमा सुतम शोक विनाश कारणम्, नमामि विघ्नेश्वर पाद पंकजम"//

13) मंत्र जाप के साथ विघ्नेश्वर को जल, पुष्प, अक्षतम, ताम्बूलम और दक्षिणा चढ़ाएं। दीपक, धूप और कपूर की ज्योति भी दिखाएं।

14) अब गुरु की स्तुति करो,

मंत्र // गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु, गुरु देवो महेश्वर, गुरुरेव परब्रह्म, तस्मै श्री गुरुवे नमः //

15) मंत्र जाप के साथ गुरु को जल, पुष्प, अक्षतम, ताम्बूलम और दक्षिणा अर्पित करें। दीपक, धूप और कपूर की ज्योति भी दिखाएं।

16) अब अपने पसंदीदा देवता की उनके संबंधित स्तुति मंत्रों से स्तुति करें। इष्ट देवता मंत्र का जाप करते हुए इष्ट देवता को जल, फूल, अक्षतम, ताम्बूलम और दक्षिणा अर्पित करें। दीपक, धूप और कपूर की ज्योति भी दिखाएं..

17) इसके बाद अपने और वहां उपस्थित सभी लोगों के हृदय में निवास करने वाले ईश्वर की कल्पना करें। स्तुति के भजनों के साथ स्तुति करें। उदाहरणः ॐ सर्वज्ञाय नमः, ॐ सर्वशक्ताय नमः, ॐ सर्वन्तार्यमये नमः, ॐ परमेश्वराय नमः, ॐ परमात्माय नमः, ॐ निराकाराय नमः, ॐ निर्गुणाय नमः, ॐ निर्मलाय नमः आदि। मंत्र का जाप करते हुए हृदयेश्वर को जल, पुष्प, अक्षत, ताम्बूलम और दक्षिणा अर्पित करें। दीप, धूप और कपूर की ज्योति भी दिखाएं।

18) नैवेद्य अर्पित करें और सभी देवताओं की अवधारणाओं पर भजन गाएं। भजनों पर नृत्य करें।

19) शांतिपूर्वक प्रार्थना करें, ध्यान करें, प्रार्थना करें और परिक्रमा करें।

20) एक नारियल लें और उस पर कपूर जलाएं, सभी देवताओं के संकल्पों के लिए कपूर ज्योति (कपूर ज्योति का जाप करते समय इस्तेमाल किया जाने वाला देवता स्तुति गीत) के साथ मंगलाचरण का जाप करें। भगवान को कपूर की ज्योति अर्पित करें और फिर प्रत्येक भक्त के माथे पर ज्योति दिखाकर इसकी गर्मी महसूस करें। अंत में नारियल फोड़ें और इसे भगवान को अर्पित करें।

21) शांति मंत्र का जाप करें...

| ॐ सहना ववतु

सह नौ भुनक्तु

सह वीर्यं करवावहै

तेजस्वी नावदितमस्तु

माँ विद्विशावहै ।

ॐ शांति, शांति, शांतिः

॥ओम सर्वे भवन्तु सुखिनः । सर्वे सन्तु निरामया ।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु । मा कश्चिद्-दुःखा-भाग-भवेत् ।

ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ॥

22) नैवद्य को भक्तों के बीच प्रसाद के रूप में साझा करें।

इसके साथ ही पूजा संपन्न हो गई। यहां भौतिक वस्तुओं के स्थान पर भाव पूजा की जा सकती है।

(पी.एम.श्रीनिवासन मेमोरियल, स्नेहराज फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित)

प्रश्न-51) ध्यान का अभ्यास कैसे करें...?

उत्तर : जाहिर है 'ज्ञान' , 'ध्यान' या 'तपस्या' से प्राप्त होता है...

ध्यान का अभ्यास:

- 1) यदि आप सुबह उठते हैं (कम से कम पाँच बजे), तो सभी दैनिक क्रियाएँ (सुबह की क्रियाएँ - शरीर की शुद्धि) करने के बाद दीपक जलाएँ और यह सब करने के बाद, घर पर या कहीं बहुत

साफ और शांत जगह पर उपयुक्त स्थान चुनें।



- 2) स्वच्छ वायु संचार आवश्यक है, वयस्क पुआल के बिस्तर का उपयोग कर सकते हैं (यदि संभव हो तो फर्श पर बैठने का प्रयास करें)।
- 3) आसन के लिए उपयुक्त मोटे कपड़े या पतले 'ऊनी' का उपयोग किया जा सकता है (गद्दे को छोड़ा जा सकता है)।
- 4) दर्शन पूर्व दिशा या उत्तर दिशा में किया जा सकता है।

प्रक्रिया:

- 1) यदि संभव हो तो पद्मासन में बैठने का प्रयास करें, यदि संभव न हो तो अर्ध पद्मासन में बैठें। (दायां पैर बाएं पैर के ऊपर)।
- 2) पीठ सीधी और चेहरा सीधा करके बैठें तथा दोनों हाथ 'साधना' क्रम में रखें, आंखें बंद करें (दायां हाथ गोद में बाएं हाथ के ऊपर)... (भगवान शिव का चित्र देखकर समझ सकते हैं)।
- 3) सांस (प्राण वायु) को बहुत हल्के से (स्वाभाविक रूप से) अंदर और बाहर लिया जा सकता है।

एकाग्रता:

- 1) मन को यह सोचने दें कि, 'मैं इस धरती के शीर्ष पर बैठा हूँ' (सबकी 'स्थिति' एक जैसी है)।
- 2) सबसे पहले 'सूर्य भगवान' के बारे में सोचें। ऐसा सोचा जा सकता है कि इससे आने वाली ऊर्जा मेरे दाहिने पैर के अंगूठे से होकर 'मूलाधार' तक पहुँचती है और फिर यह प्रत्येक आधार चक्र से होकर ऊपर जाती है और 'भुमध्य' (भौंहों के मध्य) तक पहुँचती है।

3) ऐसा सोचा जा सकता है कि चंद्रमा से आने वाली ऊर्जा मेरे बाएं पैर के अंगूठे से होकर 'मूलाधार' तक पहुँचती है और फिर यह प्रत्येक आधार चक्र से होकर ऊपर जाती है और 'भुमध्य' (भौंहों के मध्य) तक पहुँचती है।

प्राणायाम :

इसे करते समय, सांस अंदर लेते समय (प्राण) 'स्वा...' और सांस बाहर छोड़ते समय 'हं...' सोचें। इसे बार-बार दोहराया जा सकता है (बस एक स्वाभाविक, अचेतन श्वास पैटर्न, बहुत ज़्यादा ज़ोर नहीं लगाना)। कम से कम दस मिनट तक इस तरह बैठने का अभ्यास करें (जो ज़्यादा देर तक बैठ सकते हैं, वे जितनी देर तक चाहें बैठें)।

ध्याननम :

पूरी तरह शांत हो जाएँ, सभी विचारों को हटा दें, और केवल मन के केंद्र पर ध्यान केंद्रित करें। कल्पना करें कि वहाँ एक अग्नि की लौ है जो सूर्य और चंद्रमा की ऊर्जा से अप्रभावित है। इसे आंतरिक आँखों से देखने की कोशिश करें। इस समय मन पूरी तरह शांत होना चाहिए, सभी विचारों से दूर और अग्नि की लौ में स्थिर होना चाहिए... शांति और स्थिरता से परमशांति का अनुभव करें। यहाँ ध्यान पूरा हो गया है... यदि आप अगला कदम उठाना चाहते हैं तो एक अच्छे गुरु की तलाश करें।

'ध्यान' के बाद बहुत धीरे-धीरे 'वज्ञासन' में बैठ सकते हैं।

गणेश मंत्र:

(गजाननं भूत गणादि सेवितम्...कपित जम्भुफलसार भक्षितम्...उमासुतम शोक विनाशम कारणम्, नमामि विघ्नेश्वर पादपंकजम्)।

गुरु:

- 1) दोनों हाथों को 'हृदय' पर रखें और उन्हें गुरु को अर्पित किए जाने वाले 'फूलों' के रूप में ध्यान करें।
- 2) मन में गुरु के रूप में एक रूप की कल्पना करें (माता, पिता, सूर्य, चंद्रमा, इष्ट देवता, कोई महान गुरु या कोई भी हो सकता है)।

गुरु मंत्र का जाप:

- 1) ओम...अखंड मंडलाकारम्...व्याप्तम् येन चराचरम् तत्पदम् दर्शितम् येन.... तस्मै श्री गुरवे नमः
- 2) अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलाकाया। चक्षुरुन्मिलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः॥
- 3) गुरुब्रह्मा गुरु विष्णु गुरु देवो महेश्वर गुरु साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः...

जप तीन-तीन बार करें।

इसके बाद आप अपनी पसंद के इष्टदेवता मंत्र का जाप कर सकते हैं।

- 1) शिव पंचाक्षरी मंत्र (ओम नमः शिवाय)।
 - 2) भगवती मंत्र (सर्व मंगल मांगल्ये... शिवे सर्वार्थ साधिके... शरण्ये ऋंबिके गौरी... नारायणी नमोस्तुते)।
 - 3) शरवण मंत्र (ओम शरवण भवः)।
 - 4) नारायण मंत्र (ओम नमो नारायणाय)।
 - 5) शरण मंत्र (स्वामी शरणमर्याप्पा) आदि मंत्रों का जाप किया जा सकता है। अन्य ज्ञात मंत्रों और स्तोत्रों का जाप किया जा सकता है।
- शांति मंत्र का जाप करें...

ऐसे अभ्यास दिन में कम से कम दो बार (सुबह और शाम) किये जा सकते हैं।

बच्चों में यह आदत डालना उनकी 'बुद्धिमत्ता, याददाश्त और विवेक' को बढ़ाने में बहुत फायदेमंद है। □

प्रश्न-52) मंत्र दीक्षा क्या है?

उत्तर : संस्कृत शब्द 'दीक्षा' का अर्थ है किसी काम को शुरू करने से पहले व्रत लेना। दीक्षा को अंग्रेजी में 'INITIATION' कहते हैं। इस शब्द का अर्थ किसी काम को शुरू करना या शुरू करने का कारण होना भी होता है। यह याद रखना चाहिए कि मंत्रदीक्षा व्यक्ति के जीवन में एक महत्वपूर्ण घटना है। दीक्षा प्राप्त व्यक्तियों को मंत्रदीक्षा को उपाधि, प्रतीक या पद प्राप्ति का साधन नहीं मानना चाहिए। यह मान लेना चाहिए कि यह केवल भगवान को प्रसन्न करने का एक साधन है। मंत्रदीक्षा के क्षण को अत्यंत दुर्लभ के रूप में याद रखना चाहिए। मंत्रदीक्षा प्राप्त करने वाले व्यक्ति को उस पर अधिक सम्मान रखना चाहिए। तभी यह उपयोगी होगा, अन्यथा यह अप्रभावी होगा।

मंत्र: मंत्र एक गुप्त आध्यात्मिक सूत्र है, जिसके बार-बार उच्चारण से अज्ञान के बंधन अर्थात् जन्म-मरण के बंधन से मुक्ति मिलती है। उक्त मुक्ति ही मंत्र दीक्षा का उद्देश्य है। दीक्षा का अर्थ है गुरु के निर्देशानुसार मंत्र के जाप के लिए स्वयं को समर्पित कर देना। मंत्र का प्रयोग सावधानी से करना चाहिए, उसमें कुछ और न मिलाना चाहिए, ताकि रूप और भाव में कोई परिवर्तन न हो।

गुरु की आवश्यकता: उपनिषदों में स्पष्ट किया गया है कि गुरु से प्राप्त ज्ञान ही प्रभावकारी होता है। गुरु केवल मंत्र नहीं सिखाते; साथ ही शिष्य को अपनी आध्यात्मिक शक्ति का एक अंश प्रदान करने की प्रक्रिया भी इसके माध्यम से संपन्न होती है। याद रखें कि शक्ति का यह हस्तांतरण पुस्तक देखकर मंत्र जपने से नहीं होता।

यद्यपि हम मंत्रदीक्षा के माध्यम से आध्यात्मिक शक्ति के हस्तांतरण को प्रत्यक्ष रूप से नहीं जानते हैं, लेकिन हमें यह याद रखना चाहिए कि एक दीपक दूसरे दीपक को जलाता है। मंत्र का गंभीरता से पालन करना चाहिए। मंत्रों के साथ प्रयोग न करें। मंत्र दिव्यता के प्रतीक हैं। केवल प्रतीकों के माध्यम से ही मानव मन व्यक्त शब्दों के रूप में ईश्वर को समझ सकता है। इसका मतलब है कि निराकार के रूप में कल्पना करना कठिन है।

गुरु महिमा:-

तंत्र शास्त्रों में कहा गया है कि गुरु ही ईश्वर है। ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर गुरु हैं। परब्रह्म भी गुरु हैं। हम गुरु को इस विश्वास के साथ चुनते हैं और उनके पास जाते हैं कि वे हमें सही मार्ग पर ले जाने में सक्षम हैं। आध्यात्मिक पथ पर आगे बढ़ने का एक व्यावहारिक तरीका गुरु को खोजना है। गुरु तभी शिष्य का मार्गदर्शन कर सकता है जब वह ज्ञान से समृद्ध हो। गुरु को वैदिक विज्ञान के प्रति समर्पित और आत्मिक होना चाहिए। उसे निष्कलंक कर्म और शुद्ध चरित्र का होना चाहिए, शिष्य से किसी भी तरह के लाभ की इच्छा से मुक्त होना चाहिए।

प्रश्न-53) हिंदू महाकाव्यों में हम अलौकिक प्राणियों को देखते हैं, क्या ये सभी फैंटम, स्पाइडरमैन, हैरी पॉटर आदि जैसी काल्पनिक कहानियाँ हैं?

उत्तर : सबसे पहले मैं यह बता दूं कि हिंदू काव्य काल्पनिक कहानियां नहीं हैं। उदाहरण के लिए हम श्री हनुमान जी को ले सकते हैं। श्री लक्ष्मण को बचाने के लिए भगवान् हनुमान हिमालय में द्रोणागिरी पर्वत का एक हिस्सा लंका ले आए थे। फिर जब जरूरत खत्म हो गई तो वैद्य सुशेष के वचनों के अनुसार उन्होंने द्रोणागिरी पर्वत को वापस लौटा दिया और हिमालय में रख दिया। इस सवाल का जवाब कि क्या यह अलौकिक कार्य सत्य है ? हां, सत्य है। इसका प्रमाण यह है कि इन श्रीलंकाई स्थानों के कुछ हिस्सों जैसे गैले में रुमासाला, हिरिपिटिया में डोलुकुंडा, मन्नार में रीतिगाला और थलाडी और उत्तर में काचतिकु में इकोसिस्टम द्रोणागिरी या हिमालयी वनस्पतियों के समान है। फिर यह सच हो गया कि पर्वत लंका पहुंच गया था। अब प्रश्न का उत्तर केलिए हमें अपने षड्-दर्शनों के योग दर्शन का अध्ययन करना होगा। यह कहता है कि मनुष्य "5" तरीकों से असाधारण और अलौकिक क्षमताओं को प्राप्त कर सकता है।

1. जन्म से
2. औषधि से
3. मंत्र सिद्धि से
4. योग साधना से
5. सफल सिद्धि के माध्यम से इसे प्राप्त किया जा सकता है।

योग शास्त्र में अणिमादि अष्ट सिद्धियों के बारे में कहा गया है। उपनिषदों और अर्थर्ववेद में योग का उल्लेख है। पतंजलि के अनुसार, शरीर की नसों और 'तांत्रिक केंद्रों यानी 'चक्रों' की उत्तेजना से सुप्त ऊर्जा 'कुंडलिनी' को मुक्त किया जा सकता है। पतंजलि ने दिखाया है कि शरीर इस तरह से अलौकिक शक्तियों को प्राप्त कर सकता है। तब हम समझ सकते हैं कि भगवान् हनुमान योग सिद्धि वाले ऐसे व्यक्ति थे। ये चमत्कारी सिद्धियाँ हिंदुओं के लिए कोई बड़ी बात नहीं हैं, ये उनके लिए स्वाभाविक हैं। इसलिए जिनके पास सिद्धियाँ हैं वे इसका प्रदर्शन नहीं करते क्योंकि पतंजल योग सूत्र-49 कहता है।

// “सत्त्वपुरुषन्यतख्यतिमात्रस्य सर्वभावधिष्ठात्रुत्वं सर्वज्ञत्रात्रुत्वं च //

अर्थः: एक योगी जिसने प्रकृति के पुरुष के ज्ञान को पूरी तरह से प्राप्त कर लिया है वह सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञता प्राप्त करता है।}

अब सूत्र-50वाँ

॥ द्वैराग्यदपि दोषबीजाक्षये कैवल्यम् ॥

(अर्थः यदि उपर्युक्त सिद्धियाँ प्राप्त हो जाएँ, किन्तु उनमें प्रवृत्त हुए बिना वैराग्य पूर्ण हो जाए, तो दोषबीज नष्ट हो जाते हैं और कैवल्य प्राप्ति संभव हो जाती है।)

तब यह समझा जा सकता है कि मोक्ष को महत्व देने वाले हिंदुओं के लिए ये सिद्धियाँ कोई बड़ी बात नहीं हैं और ये ऐसी शक्तियाँ हैं जो साधकों को बहुत ही सामान्य रूप से प्राप्त होती हैं।

इस प्रकार, हम अपने इतिहास और वर्तमान में हजारों सिद्ध पुरुषों को देख सकते हैं, जैसा कि सिद्धियों ने दिखाया है। उदाहरण के लिए भगवान शिव, देवी पार्वती, श्री गणपति, श्री षण्मुखं, सप्तर्षि, भगवान अगस्त्य, अठारह सिद्ध, श्री हनुमान, श्री कृष्ण, श्री अच्युप्प, श्री बाबाजी, श्री शंकराचार्य, श्री प्रभाकर सिद्ध योगी, बिल्वमंगल स्वामीकाल, कुरुरम्मा, रामकृष्ण परमहंस, श्री रमण महर्षि, महाराज नीम करोली बाबा, श्री स्वामी शिवानंद परमहंस, श्री सर्वज, श्री मले महादेश्वर, श्री अल्लम प्रभु, अक्का महादेवी, चेन्न बसवन्ना, श्री बसवेश्वर, श्री ज्ञानेश्वर, रेवना सिद्धैया, श्री राघवेन्द्र स्वामी, संत तुलसीदास, संत तुकारामा, श्री कनक दास, श्री पुरंदर दास, श्री चंद्रशेखर सरस्वती, श्री नारायण गुरु, श्री चट्टांबी स्वामी, श्री नीलकंठ गुरुपादर, श्री अलथुर शिवयोगी स्वामी, स्वामी नित्यानंद (कन्हांगद), श्री अच्या गुरु, स्वामी शिवानंद परमहंस (वडकरा), श्री वैकुंठ स्वामी, योगिनी अम्मा, श्री सत्य साईं बाबा, श्री सत्यानंद सरस्वती, माता अमृतानंदमयी, श्री मृत्यंजय स्वामी, श्री दिरेंद्र कृष्ण शास्त्री आपको और कितने की आवश्यकता है? लाखों की संख्या में अनुभूतियाँ दी जा सकती हैं। इस प्रकार यह समझा जा सकता है कि हिन्दू साहित्य केवल कहानियाँ नहीं है।

(पी.एम.श्रीनिवासन मेमोरियल, स्नेहराज फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित)

प्रश्न-54) यह सृष्टि कैसे बनी?

उत्तर : आइये देखें सृष्टि की शुरुआत कैसे हुई..

सृष्टि से पहले, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी जीवन से पहले, पृथ्वी से पहले, सौरमंडल से पहले, आकाशगंगाओं से पहले, नेबुला के उद्भव से पहले, हर जगह केवल ईश्वर ही थे। केवल ईश्वर। ईश्वर से ऑंकार (बिंग बैंग)

से सृष्टि की शुरुआत हुई। नेबुला, आकाशगंगा, सौरमंडल, पृथ्वी चंद्रमा, महासागर, पौधे, पक्षी, प्रजातियां पैदा हुईं। पहले केवल ईश्वर था, कोई सृष्टि नहीं, केवल पूर्ण आत्मा थी। ईश्वर को अनेक, अनेक चीजें बनने की अनुभूति हुई। अनेक होने के लिए सृष्टि का होना आवश्यक है। रचनात्मक प्रक्रिया को अंजाम देने के लिए एक स्थान की आवश्यकता होती है। सबसे पहले, उस स्थान को आकाश के रूप में निर्धारित किया गया। उसने कल्पना की कि आकाश में भरने के लिए एक सृष्टि हो। इस प्रकार, चेतना या ऊर्जा को पदार्थ में बदलने की प्रक्रिया ब्लैक होल को केंद्र बिंदु मानकर शुरू हुई नेबुला में आकाशगंगाएँ बनीं। आकाशगंगाओं में अग्नि के आकार का सौरमंडल था, और सौरमंडल में ग्रह थे। ...एक ग्रह को चुनकर उसमें जीवन का निर्माण किया। यहाँ तक की संपूर्ण सृष्टि को हम विष्णु की रूप में देखते हैं। विष्णु को ऐसा दिखलाया गया है की क्षीर के सागर में अनंत सिर वाले सांप की शर्या पर सोते हुए, हम पाते हैं।

अब जीव सृष्टि... विष्णु के नारायण संकल्प ने अग्नि रूपी ग्रह को जीव सृष्टि में बदल दिया। गर्भ के कारण गैस की अवस्था में पदार्थ ऊपर की ओर उठता है, वहाँ से आकाश की ओर उठता है, और वहाँ से ग्रह या पृथ्वी पर ठंडी वर्षा के रूप में गिरता है। वह जल पृथ्वी पर फैल गया, और उस जल में पहला एककोशिकीय जीव (ब्रह्मा) उत्पन्न हुआ, और फिर वह विभाजित होकर बहुकोशिकीय जीवों में विकसित हुआ जिन्हें हम आज देखते हैं, जैसे पेड़, पक्षी और मनुष्य।

इस प्रकार, सबसे पहला विकास आकाश से शुरू हुआ, फिर बिंग औंकार, वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल, जल से पृथ्वी, फिर जीवन।

चलिए, इस सृष्टि का अध्ययन पौराणिक तरीके से करें

हर हज़ार चतुर्युग के बाद जल प्रलय आता है और सब कुछ नष्ट हो जाता है। फिर से नई सृष्टि शुरू होती है..

आइए समझते हैं कि चतुर्युग क्या है..

एक मानव वर्ष 365 दिन का होता है

(मनुष्य का एक वर्ष देवताओं का एक दिन होता है)

360 मानव वर्ष देवताओं का एक वर्ष होता है। (इसे देववर्ष और दिव्य वर्ष कहते हैं।)

कृत युग 4800 दिव्य वर्ष होता है।

3600 दिव्य वर्ष - त्रेता युग

2400 दिव्य वर्ष - द्वापर युग

1200 दिव्य वर्ष - कलियुग (4,32,000 मानव वर्ष)

चारों युगों के लिए 12000 दिव्य वर्ष यानी एक चतुर्युग।

(जो $12000 \times 360 = 43,20,000$ मानव वर्ष के बराबर है)

इसे चतुर्युग कहते हैं।

जब 1000 चतुर्युग एक साथ जुड़ते हैं तो ब्रह्मा का एक दिन बनता है!! (अगले 1000 चतुर्युग रातों के लिए..फिर वह सोने के लिए तैयार हो जाएगा..) ब्रह्मा का एक दिन और एक रात एक "कल्प" होता है। प्रलय तब होता है जब भगवान ब्रह्मा शीतनिद्रा में होते हैं..(ब्रह्मा की रात के दौरान) जब ब्रह्मा जागते हैं, तो सृष्टि फिर से शुरू होती है।

(ब्रह्मा के एक दिन में 14 मन्वंतर होते हैं और एक मन्वंतर के 71 चतुर्युग होते हैं।)

हमारा ब्रह्मांड लगभग 155.52 ट्रिलियन मानव वर्ष पुराना है और इसका कुल जीवनकाल 311.04 ट्रिलियन मानव वर्ष है (जो ब्रह्मा के 100 वर्षों के बराबर है)।

इस प्रकार, अंतिम प्रलय के बाद, जब ब्रह्मा नींद से उठते हैं, तो वे यह देखने के लिए चारों ओर देखते हैं कि वे कहाँ हैं (और इस प्रकार उनके चार चेहरे हैं)। ब्रह्मा एक कमल पर सो रहे थे जो भगवान विष्णु की नाभि से उत्पन्न हुआ था जो हजार सिर वाले नाग की शर्या पर लेटे हुए थे। ब्रह्मा कमल के तने के माध्यम से कमल की उत्पत्ति के स्थान की खोज में नीचे उतरते हैं... जब वे जाते हैं, तो वे भगवान विष्णु को अनंत सिरों वाले नाग की शर्या पर लेटे हुए देखते हैं... भगवान विष्णु उन्हें सृजन करने के लिए कहते हैं..और वेदों से सलाह भी देते हैं..ब्रह्मा ने सबसे पहले चौदह लोकों में से तीन मुख्य लोकों अर्थात् स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल का निर्माण किया..फिर दुनिया के लाभ के लिए (भगवान के निर्देशानुसार) सृजन फिर से शुरू हुआ..

इन्हें पूरी तरह से समझने के लिए, कृपया श्रीमद्भागवतम् अध्याय 2.5 और 3.10 देखें...

यहाँ सिद्धांत है:

प्रकृति के तीन मूल भौतिक गुण हैं: अच्छाई का गुण (सत्त्व), जुनून का गुण (रजस), और अज्ञान का गुण (तमस)। (श्रीमद्भागवतम् 2.5.18)

इन तीन गुणों की परस्पर क्रिया के कारण स्वाभाविक रूप से होने वाली एक अवस्था के अलावा सृष्टि में नौ चरण हैं.. (श्रीमद्भागवतम् 3.10.14)

नौ रचनाओं में से पहली रचना महातत्व या भौतिक सामग्री की समग्रता की रचना है, जिसमें सर्वोच्च भगवान की उपस्थिति के कारण गुण परस्पर क्रिया करते हैं।

दूसरे में, मिथ्या अहंकार (माया) की रचना होती है, जिसमें भौतिक सामग्री भौतिक ज्ञान और भौतिक गतिविधियाँ उत्पन्न होती हैं।

3. सृष्टि के तीसरे चरण में इंद्रिय बोध और पाँच तत्वों का निर्माण होता है। विवरण इस प्रकार है:

A. मिथ्या अहंकार (माया) के अंधकार से, पाँच तत्वों में से प्रथम तत्व, आकाश (नभ) का निर्माण होता है। इसका सूक्ष्म रूप ध्वनि का गुण है।

B. अनंत काल के दौरान, आकाश में परिवर्तन (प्रतिक्रियाओं) के कारण, स्पर्श के गुण के साथ वायु उत्पन्न होती है, और वायु निरंतर ध्वनि से भरी रहती है।

C. अनंत काल में, वायु में परिवर्तन के कारण, अग्नि उत्पन्न होती है, जो ध्वनि, स्पर्श और रूप की इंद्रियों से बनती है।

D. समय के साथ, अग्नि में परिवर्तन के कारण, जल उत्पन्न होता है जो ध्वनि, स्पर्श, रूप और स्वाद की इंद्रियों से बनता है।

E. समय के साथ, जल में परिवर्तन के कारण, पृथ्वी (ठोस) ने गंध उत्पन्न की। इस प्रकार, इंद्रिय बोध के गुण (पृथ्वी पर पूरी तरह से प्रदर्शित होते हैं।

इसलिए परिवर्तन निम्नलिखित क्रम में हुआ:

आकाश (ध्वनि) > वायु (स्पर्श) > अग्नि (रूप) > तरल (स्वाद) > ठोस (गंध)।

(श्रीमद भागवतम् 2.5.25-29, 3.10.15, भ.गी. 10.8)

4. **चौथी रचना** ज्ञान और कार्य करने की क्षमता की रचना है। (श्रीमद भागवतम् 3.10.16) इसे प्रकृति के नियमों के रूप में समझा जा सकता है।
5. **पाँचवीं रचना** देवताओं की है जो परस्परता द्वारा सतोगुण को नियंत्रित करते हैं, जिसका योग मन है।
6. **छठी रचना** जीव का अज्ञानमय अंधकार है, जिसके द्वारा स्वामी मूर्ख की तरह कार्य करता है।

(श्रीमद भागवतम् 3.10.17)।

इस प्रकार बुद्धि की रचना के बाद काल प्रकट हुआ। फिर उसमें प्रकृति के 3 गुण (सत्त्व, रजस, तमस) उत्पन्न हुए। फिर मिथ्या अहंकार (माया) की रचना हुई। फिर अज्ञान (माया) के कारण पदार्थ (पाँच मूल तत्व) की रचना हुई।

दूसरे शब्दों में, पदार्थ को विकसित करने वाली शक्तियाँ, भौतिक रचनाओं का ज्ञान और ऐसी भौतिक गतिविधियों को निर्देशित करने वाली बुद्धि की रचना हुई। मन की रचना सतोगुण के आधार पर हुई। इंद्रियाँ वासना से निर्मित होती हैं। जब ये सभी चीजें परमात्मा की शक्ति से एक साथ आईं, तो यह ब्रह्मांड अस्तित्व में आया। उपरोक्त सभी परमात्मा की "माया" की स्वाभाविक रचनाएँ हैं। तब एक ब्रह्म अस्तित्व में आया जिसे ब्रह्मांड का निर्माता कहा जाता है,

7. **सृष्टि का सातवाँ चरण** अचल चीजों का है जैसे लताएँ, फूल वाले और बिना फूल वाले पेड़ आदि। वे छह प्रकार के होते हैं। (श्रीमद भागवतम् 3.10.19) सभी स्थिर पेड़-पौधे ऊपर की ओर पोषण चाहते हैं। वे लगभग अचेतन होते हैं, लेकिन अंदर दर्द महसूस करते हैं। वे विविधता में प्रकट होते हैं। (श्रीमद भागवतम् 3.10.20)

8. **आठवीं रचना** जीवन की निम्न प्रजातियों की है, जो विभिन्न प्रजातियों की हैं, जिनकी संख्या अट्ठाईस है। वे सभी मूर्ख और अज्ञानी हैं। वे अपनी इच्छाओं को गंध से जानते हैं, लेकिन वे अपने दिल में कुछ भी याद नहीं रख सकते हैं। (श्रीमद भागवतम् 3.10.21)

9. मनुष्य की रचना **नौरों** है। मानव जाति में, जुनून की विधि बहुत महत्वपूर्ण है। मनुष्य हमेशा दुखी जीवन में व्यस्त रहते हैं, लेकिन वे सोचते हैं कि वे हर मायने में खुश हैं। (श्रीमद भागवतम् 3.10.26)
10. देवताओं की रचना **दसरों** रचना है जो उपरोक्त तीन विधाओं के परस्पर क्रिया के माध्यम से स्वाभाविक रूप से होती है। वे आठ प्रकार के हैं: (1) देव, (2) पितृ, (3) असुर, (4) गंधर्व और अप्सराएँ, (5) यक्ष और राक्षस, (6) सिद्ध और विद्याधर, (7) भूत, प्रेत और राक्षस, और (8) किन्नर आदि। सब कुछ ब्रह्मा द्वारा बनाया गया है। (श्रीमद भागवतम् 3.10.28-29)

ब्रह्मांड की आयु और आकार को ध्यान में रखे बिना सृष्टि का कोई भी सिद्धांत अधूरा है। हमारा ब्रह्मांड लगभग 155.52 ट्रिलियन मानव वर्ष पुराना है और इसका कुल जीवनकाल 311.04 ट्रिलियन मानव वर्ष है, जो ब्रह्मा के 100 वर्षों के बराबर है।

(पी.एम.श्रीनिवासन मेमोरियल, स्नेहराज फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित)

प्रश्न-55) आइए दशा अवतार के बारे में जानें?

उत्तर : हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार, भगवान विष्णु के दस मुख्य अवतार हैं श्री मत्स्य, श्री कूर्म, श्री वराह, श्री नरसिंहा, श्री वामन, श्री परशुराम, श्री राम, श्री कृष्ण, श्री वेद व्यास महर्षि, श्री कल्पि.

1. श्री मत्स्य:-

हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार, मत्स्य अवतार भगवान विष्णु के दस अवतारों में से पहला अवतार है। भगवान विष्णु ने वर्तमान वैवस्वत मनु के समय में मछली के रूप में अवतार लिया था। जब ब्रह्मा वेदों का पाठ कर रहे थे, तब राक्षस हयग्रीव ने ब्रह्मा की उपस्थिति से वेदों को चुरा लिया था। इस राक्षस का वध करने और वेदों को वापस लेने के लिए भगवान विष्णु ने मछली का रूप धारण किया।

जब वैवस्वत मनु स्नान के लिए कृतमाला नदी में गए, तो एक मछली ने राजा मनु से उसे अपने साथ ले जाने के लिए कहा। परोपकारी राजा ने मछली को मिट्टी के बर्तन में पाला। समय के साथ मछली बड़ी हो गई। फिर इसे तालाब में रखा गया। इसके बाद मछली को गंगा में छोड़ दिया गया। कुछ

दिनों के बाद, गंगा मछली को ले जाने के लिए बहुत छोटी हो गई। फिर उसे समुद्र में स्थानांतरित कर दिया गया। अंत में मछली ने राजा को बताया कि सात दिनों में महान जलप्रलय होगा और दिव्य मछली भगवान मत्स्य ने राजा मनु को सात महान ऋषियों के साथ-साथ पौधों और जानवरों की हर प्रजाति के प्रतिनिधियों को इकट्ठा करने और उन्हें बाढ़ से होने वाले विनाश से बचाने के लिए एक जहाज पर ले जाने की सलाह दी।

सातवें दिन, जब भारी बारिश और तूफान आया, भगवान मत्स्य राजा के सामने प्रकट हुए और उन्हें निर्देश दिया कि वे वासुकी नाग को रस्सी की तरह इस्तेमाल करके अपने सींग पर संदूक को सुरक्षित रखें। भगवान मत्स्य ने प्रलयकारी बाढ़ के दौरान संदूक को विनाश से बचाया। संदूक की रक्षा करते हुए और इसे हिमवत पर्वत की ओर ले जाते हुए, भगवान मत्स्य ने राक्षस हयग्रीव को भी हराया और चुराए गए वेदों को भगवान ब्रह्मा को लौटा दिया।

यात्रा के दौरान, भगवान मत्स्य ने राजा को गहन ज्ञान और महत्वपूर्ण सत्य बताए। हिमवत पर्वत पर पहुँचने पर, भगवान मत्स्य ने राजा मनु को नए नियमों और नैतिक मूल्यों के साथ नई दुनिया का पुनर्निर्माण और शासन करने का निर्देश देने के बाद पृथ्वी से गायब हो गए। महान जलप्रलय के दौरान, वे मछली के सींग से बंधी एक डोंगी के साथ हिमवत पर्वत पर पहुँचे। बाढ़ के बाद, उन्होंने हयग्रीव को मार डाला और ब्रह्मा को वेद लौटा दिए।

भगवान विष्णु के मत्स्य अवतार की कहानी एक प्रतीकात्मक अर्थ रखती है, जिसे एक व्यष्टित के रूप में समझा जा सकता है। एक व्याख्या बताती है कि मछली जलीय जीवन की शुरुआत का प्रतिनिधित्व करती है, जो विकासवादी प्रक्रिया को उजागर करती है। हिंदू पौराणिक कथाओं में, ऐसी कहानियों का इस्तेमाल अक्सर गहरे संदेश देने के लिए किया जाता है। श्री अरबिंदो ने इसे कुंडलिनी जागरण की अवधारणा से तुलना किया है।

छोटी मछली कुंडलिनी ऊर्जा के शुरुआती अवतरण का प्रतीक है, जो धीरे-धीरे बढ़ती है और हर उस जगह को पार कर जाती है जहाँ वह रहती है। मछली द्वारा दर्शाया गया यह जागृत ज्ञान मानवता को बचाने में सहायक होता है।

कहानी में बाढ़ माया का प्रतीक है, सांसारिक इच्छाओं का भ्रम जो हमारी आंतरिक शांति के लिए खतरा पैदा करता है।

नाव हमारी चेतना का प्रतिनिधित्व करती है, जिसे केवल ज्ञान (मछली) के जागरण के माध्यम से माया की विनाशकारी तरंगों से बचाया जा सकता है।

सात महान् ऋषि हमारे शरीर के भीतर ज्ञान के केंद्रों, सात चक्रों का प्रतीक हैं। नाव को हेमवन पर्वत पर ले जाना सांसारिक इच्छाओं से शरण लेने का प्रतीक है, जो हमें उनसे ऊपर उठने और सत्य और शांति प्राप्त करने में सक्षम बनाता है। हिमवान पर्वत हमारे ज्ञान के सर्वोच्च केंद्र का प्रतिनिधित्व करता है, जो हमारे सिर में स्थित है। विष्णु के मछली के रूप में पहले अवतार की कहानी गहरे अर्थों और सबक से भरी है। यह दिखाता है कि समय के साथ जीवन कैसे विकसित हुआ और यह महान् दार्शनिक विचारों को समझाने के लिए एक रूपक के रूप में भी काम करता है। यदि आप कुंडलिनी जागरण के लेंस के माध्यम से मत्स्य अवतार की कहानी को देखते हैं, तो छोटी मछली ऊर्जा की पहली बूँद का प्रतिनिधित्व करती है जो जागृत होने पर ताकत और महत्व में बढ़ती है।

2. कूर्म अवतार:-

हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार, कछुआ भगवान् विष्णु का दूसरा अवतार है। ऋषि दुर्वासा के श्राप के कारण, वृद्धावस्था से पीड़ित देवताओं को पता चला कि यदि वे अमृत पीएंगे तो उनकी वृद्धावस्था बदल जाएगी। उसके अनुसार, देवासुरों ने दूध के सागर का मंथन शुरू किया। क्षीर सागर (पलाझी मथानम) का मंथन मंथरा पर्वत को मथनी की छड़ और वासुकी को रस्सी के रूप में इस्तेमाल करके शुरू किया गया था। चूंकि इस समय कोई नींव नहीं थी, इसलिए मंदार बहुत विशाल था और समुद्र के तल में डूब गया। विष्णु, अपने कूर्म अवतार (कछुए) के रूप में, बचाव के लिए आए और अपने खोल पर पर्वत को सहारा दिया।

इस कहानी का गहरा सन्देश पर हम सोचेंगे तो हर जीवका अंदरूनी संघर्ष को दिखाती है। और उस में से अच्छे भी निकलते हैं और बुरा भी। मगर इस सब खेलका आधार ईश्वर ही है, उस आधार का बिना कुछ भी सम्भव नहीं है।

3. श्री वराह :-

वराह भगवान विष्णु के तीसरे अवतार हैं। विष्णु पुराण, महाभारत, वराह पुराण और अन्य प्राचीन ग्रंथों में वराह का उल्लेख मिलता है।

जय और विजय दो द्वारपाल थे जो भगवान विष्णु के गोपुरद्वार पर खड़े रहते थे। ऋषि सनक और अन्य एक बार भगवान विष्णु के दर्शन के लिए वैकुंठ गए। लेकिन जयविजय ने उनका अनादर किया। ऋषि ने जय-विजय को राक्षस बनने का श्राप दिया। उसके बाद, ऋषियों ने उन्हें आशीर्वाद दिया कि यदि वे तीन जन्मों में तीन बार भगवान विष्णु के हाथों मारे गए, तो उन्हें श्राप से मुक्ति मिल जाएगी। इस प्रकार, हिरण्याक्ष और हिरण्यकशिपु कश्यप महर्षि और दिति के पुत्र थे। असुरों के रूप में जन्मे जयविजय ने दुनिया को परेशान करना शुरू कर दिया। एक बार हिरण्याक्ष समुद्र में गया और अपनी गदा से लहरों को पीट रहा था। भयभीत होकर, भगवान वरुण ने भगवान विष्णु की शरण ली और भगवान विष्णु ने वराह का रूप धारण किया और समुद्र के किनारे पहुंचे। जब हिरण्याक्ष ने भगवान विष्णु को देखा, तो हिरण्याक्ष ने पृथ्वी को समुद्र के तल में खींच लिया तब वराह ने राक्षस का वध किया और अपने दाँतों से पृथ्वी को जल से ऊपर उठाया।

इस पौराणिक कथा की बारीकी से जांच करने पर, हिरण्याक्ष को हमारे सेलुलर कोर के प्रतीक के रूप में देखा जा सकता है। वह उस बाधा का प्रतिनिधित्व करता है जिसने उभयचरों को स्तनधारियों में विकसित होने से रोका। भगवान विष्णु ने वराह के रूप में अवतार लिया और हिरण्याक्ष को रूपांतरित या परास्त करके इस विकासवादी छलांग को सुगम बनाया, जो डीएनए में एक मौलिक बदलाव का संकेत है।

4. श्री नरसिंह :-

हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार नरसिंह भगवान विष्णु के चौथे अवतार हैं। अपने भाई हिरण्याक्ष की हत्या के बाद हिरण्यकश्यप क्रोधित हो गया। उसने ब्रह्मा की तपस्या करके वरदान प्राप्त किया कि उसकी मृत्यु इस प्रकार होगी।

” मनुष्य या जानवर द्वारा मत मरना

हथियारों से मत मरना दिन या रात में मत मरना

धरती, आकाश या पाताल में मत मरना।"

हिरण्यकशिपु के यहां एक पुत्र उत्पन्न हुआ जो भगवान् विष्णु का बहुत बड़ा भक्त था। हिरण्यकशिपु ने अपने पुत्र प्रहलाद को भगवान् विष्णु की भक्ति से विमुख करने का प्रयास किया, परंतु वह असफल रहा। प्रहलाद को मारने के लिए हिरण्यकशिपु ने अनेक उपाय अपनाए। पराजित होकर हिरण्यकशिपु क्रोधित हुआ और उसने प्रहलाद से भगवान् विष्णु को दिखाने को कहा। प्रहलाद ने बताया कि इस खंभे और जंग में भगवान् विष्णु का वास है, तब हिरण्यकशिपु ने गदा से खंभा तोड़ दिया, खंभा दो भागों में विभाजित हो गया और भगवान् विष्णु नरसिंह मूर्ति के रूप में प्रकट हुए। सूर्यास्त के समय, न मानव न पशु, अपनी गोद में रखे हुए पंजों से भगवान् नरसिंह ने हिरण्यकशिपु का वध कर दिया। भयभीत प्रहलाद ने भगवान् नरसिंह की स्तुति की। तब शांत नरसिंहमूर्ति ने प्रहलाद को आशीर्वाद दिया और अंतर्धान हो गए।

इस कहानी का अंतर्निहित संदेश यह है कि यह हमें एक आदिम, सहज पशु अवस्था से पूर्ण मानव बनने की एक परिवर्तनकारी यात्रा पर ले जाती है। इसके अलावा, यह ईश्वर की असीम शक्ति का प्रमाण है, जो दर्शाता है कि विश्वास और दृढ़ संकल्प के साथ, कुछ भी असंभव नहीं है।

5. श्री वामन मूर्ति:-

वामन हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार भगवान् विष्णु का पहला मानव रूप है। वामन एक "छोटा आदमी" था जिसने प्रहलाद के श्राप के कारण महाबली को पाताल लोक भेजने के लिए अवतार लिया था। वामन अवतार भगवान् विष्णु के नौ अवतारों में से मध्य अवतार के रूप में उल्लेखनीय है। वामन का जन्म अदिति और कश्यप के पुत्र के रूप में हुआ था। (इस विषय पर प्रश्न 65 से प्रश्न 70 के उत्तर में विस्तार से चर्चा की गई है।)

6. श्री परशुराम:-

केरल मूल की कहानी में, कृषि को महान ब्राह्मण के रूप में वर्णित किया गया है जिन्होंने केरल के तट को समुद्र से बचाया था। पुराणों में भार्गव राम को परशुराम के रूप में याद करती हैं, जिनका पसंदीदा हथियार परशु था। उन्होंने त्रेता युग में भगवान् राम को, द्वापर युग में श्रीष्म को और बाद में कर्ण को

युद्ध कुशलता में प्रशिक्षित किया। परशुराम पुराणों में एक विवादास्पद व्यक्ति भी बन गए क्योंकि उन्होंने अपने पिता के आदेश पर अपनी मां का गला काटकर अपनी ही मां को मार डाला था। परशुराम का कर्म माँ पृथ्वी को पापी और विनाशकारी राजाओं से छुटकारा दिलाने में मदद करना था, जिन्होंने अपने कर्तव्यों की उपेक्षा की थी। एक बार राजा कार्तवीर्य ने अपने पिता की गाय कामधेनु को बलपूर्वक लेने की कोशिश की। क्रोधित होकर, श्री परशुराम ने राजा कार्तवीर्य और उनकी सेना को मार डाला क्रोधित होकर परशुराम ने पृथ्वी के सभी क्षत्रियों को मार डाला और 21 बार पृथ्वी की परिक्रमा की और उनके खून से पांच झीलें भर दीं। हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार, परशुधारी राम सात चिरंजीवियों में से एक हैं और विष्णु के दस अवतारों में से एक हैं।

7. श्रीराम :-

श्री राम भगवान विष्णु के सातवें अवतार हैं। श्री राम अयोध्या के राजा थे। रामायण उन्हीं के इर्द-गिर्द घूमती है। भगवान राम सबसे महत्वपूर्ण हिंदू देवता हैं। श्री राम अयोध्या के राजा दशरथ पट्टमहिषी की पत्नी कौशल्या के पहले पुत्र हैं। हिंदू धर्म में श्री राम को पुरुषोत्तम माना जाता है। भगवान राम को अच्छाई का देवता भी माना जाता है। उनकी पत्नी सीता देवी हैं, जो देवी लक्ष्मी का अवतार हैं। सीता को एक कुलीन महिला माना जाता है। राम के भाई भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न थे।

राम एक विनम्र व्यक्ति थे। दशरथ द्वारा कैकेयी को दिए गए बहुत पहले के वचन का लाभ उठाते हुए, कैकेयी की मांग थी कि उनके पुत्र भरत को राजा बनना चाहिए और राम को चौदह वर्ष का वनवास जाना चाहिए। पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण राम से अलग नहीं हो सकते थे और चौदह वर्ष के वनवास के लिए राम के साथ चले गए। वनवास के दौरान, राक्षस राजा लंकेश्वर रावण ने सीता का अपहरण कर लिया। लंबी और कठिन खोज के बाद, हनुमान को पता चलता है कि सीता लंका में हैं। श्रीराम युद्ध के अंत में, रावण पराजित हुआ और सीता को बरामद किया गया। राम वनवास के बाद अयोध्या लौटे और उन्हें अयोध्या का राजा बनाया गया। इस प्रकार अंतिम परिणाम विश्व का समाट बनें, और फिर अगले हजारों वर्षों को राम राज्य के रूप में जाना गया, जो सुख, शांति, समृद्धि और न्याय का युग था।

श्री राम राम रामेति रमे रामे मनोरमे । सहस्रनाम तत् तुल्यं रामनाम वरानने ॥

8. श्रीकृष्ण:-

हिंदू मान्यता के अनुसार, श्री कृष्ण भगवान विष्णु के दस अवतारों में से एक हैं। श्री कृष्ण को चक्रधारी माना जाता है। महाभारत में भी श्री कृष्ण एक महत्वपूर्ण पात्र हैं। भगवान विष्णु मानव जगत में जब अच्छाई भष्ट हो जाती है, तब धर्म की रक्षा के लिए अवतार लेते हैं। भूमि देवी के अनुरोध पर, भगवान नश्वर दुनिया को शुद्ध करने और धर्म को पुनर्स्थापित करने के लिए प्रकट हुए।

9. वेद व्यास महर्षि :-

वेदव्यास महर्षि श्रीमद्भागवत में वर्णित भगवान विष्णु के अवतार हैं।

श्रीमद्भागवत 12.6.49

पराशरात्सत्यवत्यामंशकलया विभुः ।

अवतीर्णा महाभाग वेदं चक्रे चतुर्विधम् ॥ ४९ ॥

(हे परम भाग्यशाली शौनक, सर्वशक्तिमान भगवान ने अपने पूर्ण भाग के एक अंश की दिव्य चमक को प्रदर्शित करते हुए, धर्म के सिद्धांतों को बचाने के लिए पराशर के पुत्र के रूप में सत्यवती के गर्भ में प्रकट हुए, उन्होंने एक वेद को चार भागों में विभाजित किया।) S.B.12.06.49।

ऐसा माना जाता है कि द्वापर युग के अंत में वेदों की शक्ति कम होने लगी, क्योंकि मनुष्य की आयु कम, कम शक्तिशाली और कम बुद्धिमान होने लगी। ब्रह्मा, रुद्र और अन्य देवताओं के कहने पर, भगवान विष्णु ने धर्म की रक्षा के लिए कृष्ण पराशर और सत्यवती (कृष्ण द्वैपायन) के पुत्र के रूप में अवतार लिया।

सत्यवती एक मछुआरे की बेटी थी जो एक ऐसे कबीले से था जो लोगों को नदी पार कराता था। वह इस काम में अपने पिता की मदद करती थी। एक दिन, उसने कृष्ण पराशर को यमुना नदी पार कराने में मदद की। उसकी सुंदरता से मोहित होकर, कृष्ण पराशर ने उसके साथ एक वारिस की इच्छा की। उन्होंने पास के एक द्वीप पर गंधर्व संस्कार के माध्यम से विवाह किया। उसने गर्भधारण किया और एक पुत्र को जन्म दिया, जिसका नाम पराशर ने कृष्ण द्वैपायन रखा। कृष्णः उनके काले रंग का संदर्भ (संस्कृत में कृष्ण का अर्थ "काला" होता है)। द्वैपायनः एक द्वीप पर उनके जन्मस्थान को दर्शाता है (द्वैपायन

का अर्थ है "एक द्वीप पर पैदा होना")। द्वैपायन वयस्क हो गए और अपनी माँ से वादा करके चले गए कि जब भी ज़रूरत होगी वे पास आएँगे। महर्षि कृष्णद्वैपायन ने एक वेद को विषयों के आधार पर चार भागों में विभाजित किया ताकि उसे पढ़ाना और सीखना आसान हो सके। इस प्रकार ऋषि ने वेदों को विभाजित करने के कारण वेद व्यास नाम अर्जित किया।

पुराणों के अनुसार, व्यास को उनके गुरु वासुदेव ने दीक्षा दी थी। उन्होंने सनक और सनंदन जैसे ऋषियों से शास्त्रों का अध्ययन किया। उन्होंने मानव जाति की भलाई के लिए वेदों को व्यवस्थित किया और श्रुतियों को जल्दी और आसानी से समझने के लिए ब्रह्म सूत्र लिखे; उन्होंने महाभारत की रचना की ताकि आम आदमी उच्चतम ज्ञान को आसानी से समझ सके। व्यास ने 18 पुराण लिखे और उपाख्यानों या व्याख्यानों के माध्यम से शिक्षण की प्रणाली स्थापित की। इस प्रकार ऋषि व्यास ने कर्म, उपासना (भक्ति) और ज्ञान (ज्ञान) के तीन मार्ग स्थापित किए। श्रीमद्भागवतम् की रचना उन्होंने देवर्षि नारद की प्रेरणा से की थी और यह उनकी अंतिम रचना थी। ऋषि व्यास सप्त चिरंजीवियों में से एक हैं।

10. श्री कल्कि :-

हिंदू मान्यता के अनुसार कल्कि भगवान विष्णु के दसवें और अंतिम अवतार कहे जाते हैं। कलियुग के अंत में सभी लोग नास्तिक और असंस्कारी हो जाएंगे। संसार बुरे कर्मों से भर जाएगा। इस काल में भगवान विष्णु विष्णुयश याजवल्क्यपुरोहित के पुत्र कल्कि के रूप में अवतार लेंगे और दुराचारियों का नाश करेंगे। प्रजा को चतुर्वर्ण, चतुराश्रम और सनातनमार्ग में वापस लाया जाएगा और उचित शिष्टाचार बनाए रखा जाएगा। उसके बाद कल्कि अवतार छोड़कर स्वर्ग चले जाएंगे। तब कलियुग समाप्त हो जाएगा।

प्रश्न-56) प्रार्थना श्लोक जो हर हिंदू को जानना चाहिए:

उत्तर : आइए उन प्रार्थना श्लोकों पर नज़र डालें जिन्हें एक हिंदू को जानना चाहिए।

(याद करने के लिए, शाब्दिक स्पष्टता के लिए प्रामाणिक भजन पुस्तकों पर भरोसा करें)

यहाँ हम उनमें से कुछ को सूचीबद्ध कर रहे हैं ताकि आपको बता सकें कि ऐसे श्लोक हिंदूत्व में मौजूद हैं और अलग-अलग संप्रदाय अलग-अलग श्लोकों का उपयोग करते हैं। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं..

1. प्रातः कालीन भजन :

सुबह उठते ही व्यक्ति को अपने हाथों को जोड़कर अपनी हथेलियों को देखना चाहिए
॥ करागे वसते लक्ष्मी
कर मध्य सरस्वती
करमुले स्थिते गौरी
प्रभाते करदर्शनम् ॥

2. प्रातःकाल धरती माता का भजन:-

खड़े होकर पैरों से जमीन को छूते हुए नीचे दिए गए मंत्र का जाप करें
। समुद्रवसने देवी ।
॥ पर्वत स्थनमंडले ॥
॥॥ विष्णुपत्नी नमस्तुभ्यं ॥॥
।।। पादस्पर्श क्षमास्वमे ।।।

3. सूर्योदय (सूर्योदय) श्लोक:-

॥ ब्रह्मस्वरूपमुदये
मध्यहनेतु महेश्वरम्
सयं काले सदा विष्णु
त्रिमूर्तिंश्च दिवाकरः ॥

4. स्नान श्लोक (स्नान श्लोक) :-

॥ गंगेच्छ यमुने चैव
गोदावरी सरस्वती
नर्मदा सिंधु कावेरी
जलेस्मिन सन्निधिं कुरु ॥

5. भस्म धारण श्लोक:-

| श्रीकरं च पवित्रं च
शोक रोग निवारणम्
लोके वशीकरणं पूमसं
भस्मम् त्रयैलोक्य पावनम्
ॐ अग्निरिति भस्म वायुरिति भस्म
जलमिथि भस्म स्थलमिति भस्म
व्योमेति भस्म सर्वं हवा इदं भस्म
मन एठानि चक्षुमशिम भस्म ||

॥ त्रयम्बकं यजामहे
सुगन्धिम पुष्टि वर्धनम्
उर्वारुकमिव बंधनात्
मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

6. तुलसी की परिक्रमा करते समय :-

(3 बार)

॥ प्रसीद तुलसी देवी
प्रसीद हरिवल्लभे
क्षीरोदा मथनोद भूते
तुलसी त्वं नमाम्यहम् ॥

7. बरगद के पेड़ की परिक्रमा करते समय (7 बार) :-

॥ मूलतो ब्रह्मरूपाय
मध्यतो विष्णुरूपिणे
अग्रतः शिवरूपाय
वृक्षराजाय ते नमः ॥

8. कार्य आरंभ श्लोक:-

॥ वक्रतुङ्ड महाकाय
सूर्यकोडी समप्रभा
निर्विघ्नं कुरु मैं देवा
सर्वकार्येषु सर्वदा ॥

॥ शुक्लां भर धरम विष्णुम्
शशिवर्णं चतुर्भुजम्
प्रसन्न वदनं ध्यायेत
सर्व विघ्नोप शान्तये ॥

9. जब दीपक जलाया जाए :-

| दीप ज्योति परब्रह्म
दीपं सर्व तमोपहम्
दीपेण सादेथे सर्वम्
दीप ज्योतिर नमोस्तुते |

॥ शुभम् करोथु कल्याणम्
आयुरारोग्य वर्धनम्
सर्व शत्रु विनाशाय
दीप ज्योतिर् नमोस्तुते ॥

||| शुभम् करोति कल्याणम्
आरोग्यम् धन सम्बदाः
ज्ञानबुधि वर्धिथाया
दीप ज्योतिर् नमोस्तुते |||

IV- दीपज्योतिर परब्रह्म

दीपज्योतिर जनार्दन

दीपमे हरथु पापम

दीप ज्योतिर नमोस्तुते -IV

10. मंगलारती १लोक :-

॥ नीराजनं दर्शयामि

देवा देवा नमोस्तुते

प्रसन्नो वरदो भुयः

विश्व मंगलकारक ॥

11. परिक्रमा करते समय :

दाँड़ ओर से शुरू करके उसी स्थान की तीन बार दक्षिणावर्त परिक्रमा करें

1. यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च ।

तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे ॥

2. प्रकृष्ट पाप नाशयः

प्रकृष्ट फल सिद्धये

प्रदक्षिणा करोमिथ्यम्

प्रसीद पुरुषोत्तम (या परमेश्वरी)

3. अन्यदा शरणं नास्ति

त्वमेव शरणं मम

तस्मात् कारुण्यं भावेन

रक्षा रक्षा परमेश्वर (या परमेश्वरी या जनार्दन) ॥

12. पढ़ाई से पहले :-

॥ सरस्वती नमस्तुभ्यम्

वरदे ज्ञानरूपिणी

विद्यारंबं करिष्यामि

सिद्धिर्भवतु मे सदा ॥

13. ओजन से पहले :-

जैसे ही खाना परोसा जाता है

॥ अन्नपूर्ण, सदापूर्ण

शंकर प्राणवल्लभे

ज्ञान वैराग्य सिद्ध्यर्थम्

भिक्षाम् देहि च पार्वती

माताचा पार्वती देवी

पिता देवो महेश्वरः

बांधवः शिव भक्तश्च

स्वदेशो भुवनत्रयम् ॥

14. ओजन का समय :-

॥ हरिददाता हरिर्भक्ता

हरिरान्नम् प्रजापतिः

हरिविप्रः शरीरस्तु

भुंगते भोजयते हरिः ॥

15. ओजनोपरांत श्लोक :-

॥ अगस्त्यं वैनतेयं च शर्मी च बडबालनम् ।

आहार परिणामार्थं स्मरामि च वृकोदरम् ॥

16. बिस्तर पर जाने से पहले :-

करचरण कृतं वाक्कायजं कर्मजं वा । श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधं ।

विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व । जय जय करुणाब्द्ये श्रीमहादेव शम्भो

17. सोते समय :-

रामस्कंदम हनुमन्तं वैनतेयं वृकोदरम्,
शयनयः स्मरेन्नित्यं दुःस्वपनम तस्य नाशयति ॥

अच्युताय नमः

अनंताय नमः

वासुकाये नमः

चित्रगुप्ताय नमः

विष्णवे हरये नमः ॥

प्रश्न-57) आगम, निगम और तंत्र का ज्ञानः

उत्तर :- तंत्र

ॐ " तन्यते विस्तार्यते इति तंत्र" (मेदिनी कोशम)

जो कुछ भी अपने आप को विस्तारित करता है, वह तंत्र है। तंत्र व्यक्ति की आंतरिक चेतना की खोज करने का विज्ञान है। तंत्र शब्द तन धातु से बना है, हालाँकि तन शब्द के कई अर्थ हैं, यहाँ टिप्पणीकार का मतलब स्वयं या शरीर है।

एक और बयान

" थानोथु विपुलन

अर्थं तत्व मंत्र समन्वितं

त्राणं च कुरुते यस्मात्

तंत्र अभिसञ्जित ".

"विस्तारशील (चेतना का) विज्ञान, यदि उसमें सिद्धांत, मंत्र और उसका सार समाहित हो, तथा वह विज्ञान साधक सुरक्षित रखता हो, तो उसे तंत्र कहा जा सकता है।

यदि हम अपनी चेतना का विस्तार करना चाहते हैं तो हमें सबसे पहले अपनी इंद्रियों को अपने वश में करना होगा। इसीलिए तंत्र शास्त्र विधि में मंत्र जप के विषय में प्राणायाम योग क्रियाओं को

अनिवार्य बताया गया है। यह ब्रह्मांड पंचभूतों से बना है। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश पंचभूत हैं। इन पंचभूतों का प्रतिनिधित्व पांच ज्ञानेंद्रियां करती हैं जिन्हें ज्ञानेंद्रियां आंख, नाक, जीभ, कान और त्वचा कहा जाता है। ये पांच चीजें हमें ब्रह्मांड से जोड़ती हैं यानी ब्रह्मांड का ज्ञान हमें इन इंद्रियों के जरिए मिलता है इसीलिए इन इंद्रियों को ज्ञानेंद्रियां कहा जाता है। सबसे महत्वपूर्ण दो इंद्रियां आंख और कान हैं क्योंकि आधुनिक विज्ञान कहता है कि इनमें ग्रहण करने की क्षमता सबसे ज्यादा होती है। आँख देखती है और कान सुनता है। देखने को यंत्र कहते हैं और सुनने को मंत्र। यंत्र देवी का दृश्य शरीर है और मंत्र देवी का सूक्ष्म शरीर है यानी शरीर की इन दो इंद्रियों को जगाने के लिए विशेष रूप से आचार्य कहते हैं "यंत्र मंत्र समन्वयन"। तो तंत्र पूजा में यंत्र (श्री चक्र) और मंत्र (श्रीविद्या) शामिल हैं जो इन दो इंद्रियों को जगाने के लिए हैं।

तंत्र की दो सबसे बड़ी और सबसे ज्यादा दिखाई देने वाली शाखाएँ हैं। दक्षिण भारत में सबसे शक्तिशाली **श्रीकुल** (त्रिपुर सुंदरी का परिवार, जो देवी की उनके सुंदर सात्त्विक रूप में पूजा करते हैं) है। यहाँ पूजा श्रीचक्र और श्रीविद्या के ज़रिए होती है। **कालीकुल** (काली का परिवार, देवी के उग्र रूप के उपासक) उत्तरी और पूर्वी भारत में मौजूद हैं। यहाँ पूजा **दशमहाविद्या**, सप्त मातृकम् और नवदुर्गा के ज़रिए होती है। तंत्र शास्त्र में पांच प्रकार के अनुष्ठान बताये गये हैं...

1.दक्षिणाचार 2.वामाचारम् 3.समयाचारम् 4.दिव्याचारम् 5. कौलाचारम्

दक्षिणाचार:-

"दक्षिणा दक्षिणाराध्य दरस्मेरा मुखाम्बुजा" (ललिता सहस्रनाम)।

दक्षिणाचार आम तौर पर एक **सात्त्विक** श्री विद्या मार्ग है। वे दाहिने हाथ से देवी की पूजा करते हैं, दाहिनी ओर के पुरुष तत्व की पूजा करते हैं और पिंगला नामक सूर्य नाड़ी की पूजा करते हैं। इसीलिए शैव मार्गी भी शिव को शक्ति के समान मानकर पूजते हैं। और इसे हादी विद्या भी कहा जाता है क्योंकि श्री विद्या मंत्र "हा" अक्षर से शुरू होता है।

वामाचार:-

वामाचारी शक्ति (देवी) की पूजा पर आधारित हैं जो बाएं हाथ से तर्पण (पूजा) करते हैं, बाएं नाड़ी (स्त्री तंत्रिका), **पंचमकार** पूजा हैं। वामा पूजा की एक प्रणाली है जो पूरी तरह से शक्ति में विश्वास करती

है। वामाचारी मनुष्य की आंतरिक इच्छाओं को स्वयं इच्छाओं के माध्यम से बाहर लाने के सिद्धांत का पालन करते हैं। "कांटा के साथ कांटा" इत्यादि। मन की इच्छाओं के कारण मनुष्य अपने साधना पद को भूल जाता है और इसलिए आचार्य इच्छाओं की पूर्ति के बाद आत्मोपासना में आने की सलाह देते हैं। पंच मकार उसी के प्रतीक हैं। यदि इच्छा समाप्त हो जाती है, तो दीक्षा स्वीकार कर लेनी चाहिए।

समयाचारम्:-

जब साधक बाह्य उपासना से मन को हटाकर आत्म-पूजा या आंतरिक उपासना पर **ध्यान केन्द्रित** करता है, तो वह अवस्था समयाचारम् होती है। जो व्यक्ति आंतरिक उपासना कर सकता है, वह समयाचारी है।

प्राणायाम और यम, नियम के अभ्यास से भौतिकवादी इच्छाओं को नष्ट किया जाता है और फिर मन को ऊपर उठाया जाता है।

दिव्याचारम्:-

जैसा कि पहले बताया गया है, दक्षिणाचारम् से वामाचारम् फिर संयमाचारम्, संयमाचारम् से दिव्याचारम्, ये अभ्यास के चरण हैं। दिव्याचारम् का अर्थ है **शाम्भवी मुद्रा - खेचरी मुद्रा** का योगिक आसन करना, मन को एक विशिष्ट बिंदु पर केन्द्रित करना तथा सहस्रार पदम् से प्रवाहित अमृत को पीना और "शिवो अहम्" का जाप करना। जिससे साधक को स्वयं शिव की अनुभूति होती है, उसे दिव्याचारम् कहते हैं।

कौलाचारम् :-

कौलाचारम् एक बहुत ही रहस्यमय साधना योजना है। गुरु कौल का रहस्य केवल योग्य शिष्य को ही बताते हैं जो देवी कृपा और गुरु कृपा से एक हो। एक अच्छा साधक उस ज्ञान को गैर-अधिकारियों को नहीं बताता। कौल विद्या के बारे में विज्ञान यही कहता है।

"अन्यस्तु सकल विद्या: प्रकादा गणिका इव

इयंतु शाम्भवी विद्या गुप्त कुल वधुरीवा"

"अन्य सभी विद्याएँ नर्तकियों की तरह सबके सामने प्रदर्शित की जाती हैं। लेकिन शाम्भवी विद्या कुल वधू की तरह छिपी हुई है"

इतनी रहस्यमय विद्या होने के कारण, 'कौलम' के बारे में कई गलत धारणाएँ हैं। कई लोग कौलाचारम् का मूल्यांकन 'पंच मकारों' के आधार पर करते हैं। उस विशाल विज्ञान में इसका कितना छोटा स्थान है, और उस विज्ञान में कितने अधिक भावनात्मक और वैज्ञानिक अध्याय हैं।

भवचूड़ामणि में शिव पार्वती को कौलन के चरित्र के बारे में बताते हैं।

"कीचड़, चंदन, पुत्र, शत्रु, श्मशान, घर, सोना, घास, कौलन वह है जो बिना किसी अंतर के हर चीज में देवी को देखता है, और उस आनंदमय भावना में डूब जाता है"

इन पंक्तियों से यह स्पष्ट है कि कौलम कितनी महान अनुष्ठान योजना है।

स्वच्छंद तंत्र में कौलम का वर्णन इस प्रकार किया गया है "कुलम शक्ति है और अकुला शिव है। कौलम इस कुलाकुला या शिव शक्ति का समामेलन है"।

कौलम महान योग तकनीक है जो साधनाओं के साथ मूलाधार में सुप्त कुंडलिनी शक्ति को जागृत करती है, इसे षड्धारों (छह द्वार या चक्र) के माध्यम से ऊपर उठाती है और इसे सिर पर सहस्रार पद्म पर खड़े शिव चैतन्य के साथ जोड़ती है।

दीक्षा तंत्र का एक अभिन्न अंग है: (दीक्षा या Initiation) :

"अथातो दीक्षा व्याख्यस्याम्

दिव्यं ज्ञानं यतो दद्यत् कुर्यात् पापस्य सांक्षयम्

तस्माद् दीक्षेति संप्रोक्ता देसिकै तत्व वेदिभिः"

दीक्षा शब्द का अर्थ है दिव्य ज्ञान प्राप्त करना। दीक्षा वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा गुरु उस शिष्य को मुक्त करता है जिसने पिछले जन्मों के पापों को अपने ऊपर ले लिया है और शिष्य को ज्ञान का मार्ग सिखाता है।

प्रश्न-58) तंत्र में पंच मकारों का रहस्य क्या है?

उत्तर : पंच मकार तंत्र से जुड़ा एक शब्द है, जिसका अर्थ है 'मा से शुरू होने वाली पाँच चीज़ें' और इन पाँच चीज़ों का इस्तेमाल तांत्रिक साधना में किया जाता है।

मुद्रा - उपासना, आध्यात्मिक अभ्यास

मांस - मांस

मत्स्यम् - (मछली)

मैथुनम् - संभोग

मध्य - शराब (नशा)

लेकिन केवल वामाचारी ही उपरोक्त सामान्य अर्थ में पंचमकारों का उपयोग करते हैं।

दक्षिणाचारी इन्हें साधना के अलग-अलग चरणों के रूप में उपयोग करते हैं।

मुद्रा - दीक्षा _

मत्स्य - नाड़ी शुद्धि-प्राणायाम के माध्यम से नाड़ियों पर नियंत्रण

मांस - एकाग्रता - खेचरी _ वाणी में नियंत्रण, धारणा

मैथुन - कुंडलिनी को सुषुम्ना के माध्यम से सहस्रार चक्र तक धकेलना

मध्य - योग से अमृत_आनंद की अनुभूति

प्रश्न-59) ग्रहण के दौरान मंदिर क्यों बंद रहते हैं?

उत्तर : दो बातें हैं

1. मंदिर सामाजिक (हिन्दू) केन्द्र हैं, यदि खोले जाएं तो मंदिर में आने वाले भक्त जाने-अनजाने में यदि सूर्य को निहारते हुए चले जाएं तो उनकी आंखों पर बुरा प्रभाव पड़ता है। प्रकृति में प्रकाश का परिवर्तन, प्राणियों में अशांति, कभी-कभी मानसिक रूप से कमज़ोर लोगों पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है, यह कहना असंभव है। इससे बचने के लिए भी ग्रहण के दौरान मंदिरों को बंद करने का उद्देश्य है।

2. मंदिर तांत्रिक (वैदिक में क्षेत्राभिषेक की अवधारणा नहीं है, बल्कि यज्ञ की अवधारणा है) या आगमिक संकल्प के हैं। तांत्रिक में ग्रहण का क्षण साधक के लिए बहुत दुर्लभ और महान् क्षण होता है। इसे कभी भी बेकार न जाने दें। मंदिरों में तांत्रिक और तंत्री लोग होते हैं, जिन्हें अपना पूरा ध्यान अपनी साधना

(सिद्धि और नवीनीकरण) पर भी लगाना होता है। इसलिए उन्हें ग्रहण के क्षण का उपयोग करने के लिए अस्थायी रूप से अपने दैनिक कार्यों से दूर रहना पड़ता है। इसके लिए भी मंदिर बंद रहेंगे।
(पी.एम.श्रीनिवासन मेमोरियल, स्नेहराज फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित)

प्रश्न-60) पैर छूकर नमस्कार किसे कहा जाता है?

ANSWER : ॐ बड़ों के पैर पकड़ने का क्या मतलब है? सभी प्रकार की अधीनता या दास्यता प्रदर्शित होती है। जो हमारे पाप, पुण्य, हानि, लाभ, लज्जा, मान, सुख-दुख की पूरी जिम्मेदारी लेते हैं, उनके ही पैर पकड़ने चाहिए। ऐसे लोगों में सबसे पहले हमारे माता-पिता आते हैं। फिर सदगुरु आते हैं जो हमारी जिम्मेदारी लेते हैं। फिर हमारे आराध्य देवता या भगवान।
नमस्कार तो सभी को किया जाना चाहिए, विशेष रूप से देवताओं, ब्राह्मणों, बुजुर्गों, आचार्यों और सम्माननीय लोगों को आदरपूर्वक नमस्कार करना चाहिए। हिंदू वैदिक प्रथा के अनुसार उनकी नमस्कार न करना पाप माना जाता है।

देवताओं, आचार्यों, ऋषियों और अन्य आदरणीय व्यक्तियों को साष्टाँग नमस्कार अर्पित किया जाना चाहिए। यदि साष्टाँग अर्पण संभव न हो, तो व्यक्ति को झुककर हाथ से आदरणीय व्यक्ति के पैर छूने चाहिए।

बहुत से आदरणीय लोग दूसरों के पैर छूने से असहज महसूस करते हैं; ऐसे लोगों को हथेलियाँ जोड़कर प्रणाम करना चाहिए।

समान आयु के लोगों को देखते समय भी यही नियम लागू होता है। यह भी माना जाता है कि कभी भी छोटे को प्रणाम नहीं करना चाहिए।

प्रश्न-61) क्या संकट के समय साधक को भगवान्/गुरु से सहायता मिल सकती है?

उत्तर : ॐ मैं तुम्हें एक कहानी सुनाता हूँ.. एक गाय जंगल के पास चर रही थी। उसको एहसास हुआ कि एक शेर उसका पीछा कर रहा है। गाय भागने लगी। शेर उसका पीछा कर रहा था। गाय पास के दलदल में कूद गई। शेर भी कूद गया। दोनों कीचड़ में सन गए। गाय भाग नहीं सकी, शेर गाय के करीब नहीं आ सका। हर बार जब शेर अपने पैर उठाता, यह कहते हुए कि वह गाय को मार देगा, वह और

अधिक कीचड़ में सनती जाती रही। तब गाय ने पूछा : क्या तुम्हारा कोई मालिक है? शेर ने कहा : नहीं, मैं राजा हूँ। मुझे मालिक की जरूरत नहीं है। तब गाय ने कहा : मेरा मालिक मुझे बचाएगा। कुछ देर बाद उसका मालिक गाय को ढूँढ़ता हुआ आया। उसने गाय को कीचड़ से निकाला और घर ले गया। शेर दलदल में उतर गया।

एक ऐसा गुरु होना सौभाग्य की बात है जो मार्गदर्शन करता है, प्रकाश देता है और खो जाने पर वापस लाता है। अनुभवी लोग किसी भी समस्या के प्रति रचनात्मक इष्टिकोण रखते हैं... अहंकारी लोगों के पास उनका मार्गदर्शन करने वाला कोई नहीं होता। और अगर कोई हिम्मत करके कुछ देने की कोशिश भी करे तो वे उसे स्वीकार करने को तैयार नहीं होते। यह स्वाभाविक है कि जब साधक साधना के साथ आगे बढ़ता है तो संकट और चुनौतियाँ आती हैं। जब तक आत्मा साधना के साथ रहती है, तब तक कठिनाइयों को दूर करने और बचाने के लिए परमात्मा की उपस्थिति बनी रहती है। यह कहानी इसे स्पष्ट करती है।

आप भगवान् कृष्ण द्वारा यही आश्वासन अ.गी.9.22 में पा सकते हैं। यह इस प्रकार है..

| अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।

तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥ 9.22॥

"लेकिन जो लोग हमेशा अनन्य भक्ति के साथ मेरी पूजा करते हैं, मेरा ध्यान करते हैं - मैं उनके लिए जो कुछ भी आवश्यक है वह लाता हूँ, और उनकी देखभाल करता हूँ"

प्रश्न-62) हिंदू धर्म अध्ययन की योजना कैसी है?

उत्तर : ॐ हिन्दू धर्म का अध्ययन पांच चरणों में पूरा होता है।

- 1) **हिंदू धर्म का अध्ययन (बुनियादी)** : इस चरण में हिंदू परिभाषा / हिंदू जीवन शैली / हिंदू जीवन के उद्देश्य का अध्ययन रीति-रिवाजों, इतिहास और सामाजिक व्यवस्था के माध्यम से किया जाता है।
- 2) **हिंदू धर्म का अध्ययन (पुरोहित)** : षोडस संस्कृति, पंच महायज्ञ, व्रत आदि जैसे धर्माचारों का अध्ययन, उनके अनुष्ठान विधि/तंत्र के साथ।
- 3) **हिंदू धर्म का अध्ययन (आचार्य)** : वेद से आगम तक संपूर्ण तत्व/साहित्यिक पदानुक्रम को समझना।

4) हिंदू धर्म का अध्ययन (पंडित) : वेद से आगम तक संपूर्ण तत्व/साहित्य श्रेणी में किसी विशेष विषय में प्रवीणता (विशेषज्ञता)।

5) हिंदू धर्म का अध्ययन (कैवल्य) : इस प्रकार प्रत्यक्ष (विशिष्ट) साधना मार्ग को अपनाकर मोक्ष/कैवल्य/तुरीयातिता अवस्था या बोध प्राप्त करें और उस परम चेतना का अनुभव करें। यह हिंदू धर्म अध्ययन का एक योजना है।

प्रश्न-63) ब्रह्मचर्य क्या है?

उत्तर : भोजन करना बी एक अग्निहोत्र है, जो पेट की अग्नि में आत्मा को आहुति देकर किया जाता है। भीतर के ब्रह्म के लिए, अग्नि के लिए पाँच आहुति दी जाती हैं। प्राणाया स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, उदानय स्वाहा और समानाय स्वाहा। हर काम बहुत होशपूर्वक करना चाहिए। इस तरह, जब हम जीवन में हर काम होशपूर्वक करते हैं, जब हम उसे भीतर के ब्रह्म के लिए करते हैं, तो हम उन चर्याओं को क्या कहते हैं? ब्रह्म के लिए की गई चर्या को ब्रह्मचर्य कहते हैं।

लेकिन कुछ लोगों ने ब्रह्मचर्य का अर्थ स्त्री-द्वेष समझा लिया है। एक बार नारद नदी किनारे पहुंचे। नारद के पास दूसरी ओर जाने के लिए कुछ नहीं था। तभी एक ऋषि वहां पहुंचे। उन्होंने नारद से कहा कि यदि वे बता दें कि संसार में सबसे बड़ा ब्रह्मचारी कौन है, तो नदी की धारा मोड़ दी जाएगी। नारद ने सोचा। सबसे बड़ा ब्रह्मचारी कौन है? अरे, यह तो मैं हूं। आज तक उन्होंने एक भी स्त्री की ओर देखा तक नहीं। तो नारद बोले: 'यदि नारद संसार में सबसे बड़े ब्रह्मचारी हैं, तो नदी की धारा मोड़ दी जाए।' नदी का मार्ग नहीं बदला। ऋषि हँसे और बोले। तुम मन से ब्रह्मचारी नहीं हो। अब भगवान् कृष्ण के साथ प्रयोग करो। शायद कोई रास्ता मिल जाए। नारद जोर से हँस पड़े। फिर पूछा। क्या कृष्ण ब्रह्मचारी हैं, जिनकी 16008 पत्नियां हैं? ऋषि ने कहा। खैर, फिर भी कोशिश करके देखो। तो नारद ने कहा: 'अगर कृष्ण दुनिया के सबसे महान ब्रह्मचारी हैं, तो नदी का रुख मोड़ दिया जाए।' चमत्कारिक रूप से नदी का रुख मोड़ दिया गया।

प्रश्न-64) देवी मंदिरों में नींबू के दीपक का रहस्य क्या है?

उत्तर : राजसपूजा के तहत देवी शक्तिस्वरूपिणी को प्रसन्न करने के लिए नींबू का दीपक जलाया जाता है। नींबू का दीपक जलाने से शक्तों को हवन करने का फल मिलता है।

देवी की पूजा तीन रूपों में की जाती है, जैसे सात्त्विकम्, राजसम् और तामसम्। सात्त्विक पूजा देवी के आशीर्वाद के लिए होती है, राजस पूजा राक्षसी शक्तियों पर नियंत्रण के लिए होती है और तामस पूजा जादू टोना के लिए होती है। तामस पूजा पापपूर्ण और निषिद्ध है। सात्त्विक पूजा फूल, फल, दूध, चावल और मिठाई से की जाती है। राजस पूजा बलि, लाल फूल, नींबू, हरी मिर्च, लाल मिर्च और काली मिर्च का उपयोग करके की जाती है। नींबू रजोगुण प्रधान सबसे अम्लीय पदार्थ है जो शुद्ध घी या तेल के छिलके पर डालने पर और अधिक तीव्र हो जाता है। चूंकि देवी प्रतिष्ठा भद्रकाली / दुर्गा के रूप में है, इसलिए इन रजोगुण शुभ वस्तुओं के साथ पूजा करना देवी की दया, कृपा और अभीष्ट सिद्धि के लिए अच्छा है।

दरअसल, नींबू का दीपक राहु दोष को ठीक करने के लिए मंदिरों में चढ़ाया जाने वाला एक प्रसाद है। हालाँकि राहु को नवग्रहों में से एक माना जाता है, लेकिन यह केवल एक तमोग्रह है। जब राहु की दशा के साथ-साथ राहु का अपभ्रंश भी अन्य दशाओं में होता है, तो अप्रिय चीजें घटित होती हैं। प्रतिदिन जब राहु की छाया होती है, तो राहु दशा या अपराह्न के प्रभाव को दूर करने के लिए राहु काल के दौरान नींबू का दीपक जलाकर देवी की पूजा की जाती है।

// दुर्गा पूजनताः प्रसन्न हृदया //

नवग्रह मंगलाष्टक में राहु के बारे में यही कहा गया है।

इसका अर्थ यह है कि राहु दोष निवारण के लिए देवी पूजा सर्वोत्तम है। राशि चक्र में राहु का अपना कोई स्थान नहीं है। राहु शुक्र के घर में स्थित है जो देवी का प्रतिनिधित्व करता है। अर्थात् राहु देवी की अपनी राशि में आश्रित के रूप में स्थित है। इसलिए, राहु दोष परिहार के लिए, जो देवी की अपनी राशि में स्थित है, देवी की पूजा करनी चाहिए। देवी शक्तिस्वरूपिणी को प्रसन्न करने के लिए राजसपूजा के भाग के रूप में नींबू का दीपक जलाया जाता है।

नींबू का दीपक जलाने से भक्तों को हवन का फल मिलता है। ऐसा माना जाता है कि अगर कोई अग्निदेव के दर्शन करे और मंत्रों के साथ देवी की स्तुति करे तो राहु दोष दूर हो जाता है।

पूजा में बुरी आत्माओं को दूर भगाने के लिए नींबू का इस्तेमाल किया जाता है। देवी दुर्गा बुरी आत्माओं को दूर भगाने में सक्षम हैं। जब हम नींबू का दीया जलाते हैं, तो नींबू हमारा प्रतिनिधित्व करता है और इसका मतलब है कि हमारे भीतर का अस्तित्व ईश्वर को दिखाना चाहिए। स्वार्थ, लालच, वासना, अहंकार, ईर्ष्या और क्रोध मन के छह शत्रु हैं जिन्हें ईश्वर के सामने त्याग देना चाहिए। नींबू का सफेद हिस्सा हमारी शुद्ध बुद्धि का प्रतिनिधित्व करता है और काला हिस्सा (हरा हिस्सा) हमारे घमंड का प्रतिनिधित्व करता है। संदेश यह है कि उस हिस्से में आत्म ज्योति को चमकने दें ताकि माया दूर हो सके और शुद्ध ज्ञान आ सके।

विवाह संबंधी बाधाओं से मुक्ति हेतु भगवती के निमित्त नींबू का दीपक जलाने के लिए शुक्रवार और मंगलवार सर्वोत्तम दिन हैं।

प्रश्न-65) क्या आप हमें रक्षा बंधन उत्सव के बारे में बता सकते हैं?

उत्तर : रक्षाबंधन (राखी बंधन) :-

रक्षाबंधन का उल्लेख भारत की कुछ प्रसिद्ध ऐतिहासिक युद्ध कथाओं में मिलता है। राखी बंधन या रक्षा बंधन बहन भाई के बंधन के प्रतीक के रूप में मनाया जाता है। यह त्योहार श्रावण पूर्णिमा और राखी पूर्णिमा के रूप में जाना जाता है क्योंकि यह श्रावण माह की पूर्णिमा के दिन पड़ता है। जिस तरह एक बहन अपने भाई को राखी बांधती है, उसी तरह दूर की बहनें और एक दूसरे से असंबंधित महिलाएं बहुत करीबी दोस्तों को राखी बांधती हैं और उन्हें भाइयों के रूप में मानती हैं। ऐसा माना जाता है कि प्रेम, भक्ति और प्रार्थना के साथ राखी बांधने से बहन और भाई का बंधन मजबूत होता है। और इसके साथ ही अच्छा स्वास्थ्य, सभी प्रकार की समृद्धि और दुर्घटनाओं से सुरक्षा होगी। चाहे खून का रिश्ता हो या नहीं, वे राखी बांधने के बाद जब तक जीवित रहते हैं एक दूसरे को बहन और भाई मानते हैं। भाई किसी भी परिस्थिति में बहन को आवश्यक किसी भी प्रकार की सुरक्षा प्रदान करने के लिए बाध्य है। रक्षा बंधन सदियों से उत्तर भारतीय राज्यों और केरल को छोड़कर दक्षिण भारतीय राज्यों में

मनाया जाता रहा है। लेकिन पिछले कुछ वर्षों में केरल में रक्षाबंधन का उत्सव अधिक लोकप्रिय हो गया है।

पहले के समय में घर पर ही तरह-तरह के चमकीले और रंग-बिरंगे धागों से बनी राखियाँ बनाई जाती थीं। पड़ोसी घर की माताओं को त्यौहारों के लिए राखियाँ बनाने में कई दिन लग जाते थे। लेकिन आज के व्यस्त समाज में घर में खाना बनाने का भी समय नहीं है और इस अवसर का लाभ उठाने के लिए बाजार में होड़ लग गई है। आज बाजारों में कई आकर्षक राखियाँ उपलब्ध हैं। इसलिए कोई भी अपनी खुद की राखियाँ बनाने में चाहत नहीं रखता।

संस्कृत में "रक्षा बंधन" का अर्थ है "सुरक्षा का बंधन"। रक्षा बंधन पूरे भारत में अलग-अलग तरह के उत्सवों के साथ मनाया जाता है। माता-पिता और परिवार के सभी अन्य सदस्य एक साथ मिलते हैं और रक्षा बंधन समारोह शुरू करते हैं। नए कपड़े पहने बहनें और भाई पहले प्रार्थना करते हैं। एक प्लेट में फूल और राखी ली जाती है, एक छोटा धी का दीपक जलाया जाता है (कुछ लोग कपूर भी जलाते हैं), पूजा कक्ष में पसंदीदा देवता की प्रार्थना की जाती है और आरती की जाती है। भगवान की पूजा करने के बाद भाई की थाली से आरती की जाती है। तीन बार आरती करने के बाद दाहिने हाथ पर राखी बांधी जाती है और माथे पर सिंदूर लगाया जाता है। भाई एक दूसरे को उपहार देते हैं, आशीर्वाद देते हैं, हर स्थिति में और हर तरह से सहायता और सुरक्षा प्रदान करने का वचन देते हैं और फिर एक दूसरे को तरह-तरह के मीठे व्यंजन और फल खिलाते हैं। इसके साथ ही रक्षा बंधन की रस्में पूरी हो जाती हैं और अन्य समारोह शुरू हो जाते हैं।

विवाहित लड़कियाँ अपने पति के घर से मिठाई और राखी लेकर अपने घर आती हैं और भाई उन्हें राखी बांधता है। फिर घर पर मिठाई, स्टू और कई अन्य स्वादिष्ट व्यंजन बनाए जाते हैं। परिवार के सभी लोग एक साथ दावत के लिए इकट्ठा होते हैं और शाम को मंदिर में दर्शन, ऐम्यूज़मेंट पार्क, झूला झूलना, गाना-बजाना और समुद्र तट पर सैर करना आदि उत्सव को अविस्मरणीय बनाते हैं।

इस बात के कोई स्पष्ट अभिलेख या जानकारी उपलब्ध नहीं है कि यह उत्सव कितने वर्ष पहले से अस्तित्व में है, लेकिन चूंकि रक्षा बंधन का उल्लेख भविष्य पुराण, भागवत पुराण और विष्णु पुराण

में किया गया है, इसलिए यह माना जा सकता है कि यह उत्सव और अनुष्ठान भारत में कई हजार वर्ष पहले से मौजूद हैं।

वैसे तो रक्षाबंधन से जुड़ी कई कहानियां और जानकारियां हैं, लेकिन सबसे लोकप्रिय श्री कृष्ण और द्रौपदी के बीच बहन-भाई का रिश्ता है। शिशुपालन का सिर काटते समय भगवान् कृष्ण की उंगली पर गहरा घाव हो जाता है। द्रौपदी, जो पास में ही थी, भगवान् को बचाने के लिए आई और अपनी खूबसूरत नई साड़ी फाइकर भगवान् कृष्ण की उंगली पर बांध दी, जिससे खून बहना बंद हो गया। द्रौपदी के इस कृत्य से प्रसन्न होकर भगवान् कृष्ण द्रौपदी को आशीर्वाद देते हैं और उसे अपनी बहन के रूप में स्वीकार करते हैं और हर कीमत पर उसकी रक्षा करने की कसम खाते हैं। जब अवसर आता है, तो वे साड़ी के प्रत्येक धागे के बदले में एक उपहार देने का वचन देते हैं।

कौरव सभा में जब दुर्योधन के आदेश पर दुःशासन द्रौपदी का चीरहरण करने का प्रयास करता है, तब भगवान् कृष्ण प्रकट होते हैं और अपनी बहन द्रौपदी को साड़ी के प्रत्येक धागे के बदले में साड़ियों की अंतहीन श्रृंखला देकर उसके सम्मान की रक्षा करते हैं। द्रौपदी द्वारा भगवान् कृष्ण के हाथ पर बांधी गई साड़ी रक्षा (राखी) बन गई। ऐसा माना जाता है कि द्रौपदी ने महाभारत युद्ध में भाग लेने के अवसर पर राखी बांधी थी और अपने भाई श्री कृष्ण की सुरक्षा सुनिश्चित की थी। ये मान्यताएं और प्रथाएं रक्षा बंधन बन गईं। एक अन्य प्रचलित चरित्र महाबली से संबंधित है। ऐसा कहा जाता है कि महाबली ने वामन से एक वरदान मांगा। वामन को भगवान् विष्णु ने वरदान दे जो यह था कि महाबली को दिन और रात में भगवान् विष्णु के दर्शन करने का अवसर और भगवान् विष्णु के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त होगा। वह भगवान् विष्णु से अनुरोध करता है कि वह उसके राज्य पर शासन करें और उसके साथ रहें ताकि वह हमेशा भगवान् के दर्शन कर सके। अपना वचन निभाने के लिए बाध्य होकर, भगवान् विष्णु महाबली के साथ रहे और उसके लिए महाबली के राज्य पर शासन करने के लिए सहमत हुए। अब विष्णु की पत्नी लक्ष्मी संकट में आ गई, उन्होंने नारद मुनि से कुछ सलाह देने के लिए कहा। नारद मुनि ने महाबली को अपने भाई के रूप में स्वीकार करने, उनके हाथ पर रंगीन धागा बांधने और उन्हें प्रेम के उपहार के रूप में मिठाई देने की सलाह दी। सलाह मानकर, देवी लक्ष्मी ने महाबली के हाथ पर

एक रंगीन धागा बांधा और भाईचारे के बंधन को स्थापित किया। महाबली ने अपनी बहन को उपहार के रूप में कुछ भी मांगने का आदेश दिया। कहानी है कि देवी लक्ष्मी ने अपने पति महाविष्णु को वापस अपने साथ लाने की इच्छा व्यक्त की। अपनी बहन की इच्छा के अनुसार, भगवान् विष्णु को राज्य पर शासन करने की जिम्मेदारी से मुक्त कर दिया गया और देवी लक्ष्मी के साथ भेज दिया गया। वह श्रावण शुक्ल पक्ष पूर्णिमा का दिन था और उसी दिन से रक्षा बंधन अस्तित्व में आया।

300 ईसा पूर्व समाट सिकंदर और उसकी सेना भारत पहुँचती है और समाट पोरस के खिलाफ युद्ध की घोषणा करती है। समाट सिकंदर की पत्नी पोरस के पराक्रम के बारे में सुनकर परेशान हो जाती है। इस संदर्भ में, समाट सिकंदर की पत्नी ने पोरस को राखी और एक अनुरोध पत्र भेजा कि वह युद्ध में अपने पति को खतरे में न डाले। पोरस राखी पहनकर युद्ध के मैदान में आया और उसे सिकंदर का सामना करने का मौका मिला। यह एक ऐतिहासिक कहानी है कि जब उसने वार करने के लिए अपना हाथ उठाया, तो उसने एक पल के लिए अपना ध्यान अपने हाथ में राखी पर लगाया और युद्ध के मैदान से पीछे हट गया, यह महसूस करते हुए कि उसकी बहन विधवा हो जाएगी।
पुराणों के अनुसार, बहनें शाही दिनों में युद्ध पर जाने वाले सैनिकों को रक्षा कवच के रूप में राखी बांधती थीं और उन्हें विजयी होकर लौटने का आशीर्वाद देती थीं। हमारे कई उत्सव और अनुष्ठान मानवता, भाईचारे और शांति के प्रतीक हैं जिन्हें भारत ने हर समय कायम रखा है। रक्षा बंधन ऐसे ही कई उत्सवों में से एक है। रक्षा बंधन जैसे उत्सव हमें भाईचारे और शांति की हमारी संस्कृति की पवित्रता को बनाए रखने और इसे कलंकित किए बिना संरक्षित करने की प्रेरणा देते हैं। भारत के अलावा, रक्षा बंधन मॉरीशस, ऑस्ट्रेलिया, कई यूरोपीय देशों, नेपाल, बांग्लादेश के कुछ हिस्सों, पाकिस्तान के कुछ हिस्सों और भारतीय मूल के सभी अन्य देशों में मनाया जाता है। अन्य राज्यों या विदेशों में भाइयों को और जिन्हें भाई माना जाता है, उन्हें भी राखी डाक से भेजी जाती है। पूजा के बाद, बहन द्वारा राखी बांधने की कल्पना करते हुए अपने हाथ पर राखी बांधी जाती है और बहन को उपहार डाक द्वारा भेजे जाते हैं।

प्रश्न-66) अवनि अविटम (श्रावण पूर्णिमा) क्या है?

उत्तर : अवनि अवित्तम (श्रावण पूर्णिमा) :- ▶ श्रावण शुक्ल पक्ष पूर्णिमा का दिन अवनी माह के अवित्तम दिवस के समान ही होता है। हिंदू परंपरा के अनुसार इसका बहुत महत्व है। अवनी अवित्तम वह पूर्णिमा है जो श्री कृष्ण जयंती से ठीक पहले आती है। महाराष्ट्र में इसे नारियल पूर्णिमा के रूप में मनाया जाता है। अवनी अवित्तम दक्षिण भारत में मनाया जाता है। इसी दिन को व्यापक रूप से रक्षा बंधन त्योहार के रूप में मनाया जाता है। इसके पीछे क्या पौराणिक कथा है?

अतीत में ब्रह्मा को वेदों के रक्षक होने पर गर्व था। उस अहंकार को शांत करने के लिए विष्णु ने दो असुरों को भेजा और उन्होंने वेदों को चुरा लिया। ऐसा माना जाता है कि जब अहंकार में डूबे ब्रह्मा ने विष्णु से मदद मांगी, तो विष्णु ने हयग्रीव के रूप में अवतार लिया और वेदों को पुनः प्राप्त किया। इसलिए अवनि को हयग्रीव के जन्म दिवस के रूप में भी माना जाता है।

उस दिन ब्राह्मण अपने पूनुल (यजोपवीतं) बदलकर नए पूनुल (यजोपवीतं) पहनते हैं और ऋषियों से प्रार्थना करते हैं। इस दिन के अनुष्ठान को 'उप कर्म' कहा जाता है। इस दिन वैदिक और मंत्र पाठ करना बहुत शुभ माना जाता है।

इस दिन ब्राह्मण युवक अपनी वैदिक पढाई शुरू करते हैं और पूनुल (उपनयन) धारण करते हैं। ऐसा माना जाता है कि पूनुल पहनने से उनकी आंतरिक आँख या ज्ञान की आँख खुल जाती है। क्योंकि इससे उन्हें गुरु की प्राप्ति होती है।

चार अनमोल वेद कभी एक थे। व्यास ने इसे चार भागों में विभाजित किया। ब्रह्मा के निर्देशानुसार वेदों को चार भागों में विभाजित किया गया। इसी कारण से ऋषि व्यास को वेद व्यास के नाम से जाना जाता है। बाद में, पैल महामुनि को ऋग्वेद, वैशम्पायन को यजुर्वेद, ऋषि जैमिनी को सामवेद और शुमंतमुनि को अथर्ववेद का संरक्षक नियुक्त किया गया। इन महान ऋषियों की कड़ी मेहनत के कारण, यह पीढ़ी दर पीढ़ी बिना किसी नुकसान के जीवित रहा है।

ऐसा माना जाता है कि उपनयन संस्कार की शुरुआत वैदिक काल से हुई है। वेदों का अध्ययन शुरू करने के लिए उपनयन, संध्यावंदन, गायत्री आदि का अध्ययन और अनुष्ठान करना चाहिए। गुरुकुल में वेदों का शब्दशः पाठ करके अध्ययन किया जाता है। तथा गुरुकुल के विशेष कुल को वेद का विशेष

भाग प्रदान किया जाता था। वेदों की शिक्षा गुरु से लेनी चाहिए। इसके लिए प्रारंभिक काल में गुरुकुल पद्धति से अध्ययन किया जाता था। कुछ स्थानों पर वैदिक विद्यालय भी स्थापित हैं। उपनयन संस्कार सात, नौ और ग्यारह वर्ष की आयु में किया जाता है जब उच्चारण शुद्धता आ जाती है। यद्यपि पूणोल के टूट जाने पर इसे बदल दिया जाता है, परन्तु उपाकर्म के लिए पुराने पूणोल के स्थान पर नए पूणोल लगा दिए जाते हैं। वेदों के आधार पर इसमें कुछ स्थानीय भिन्नता होती है। उपाकर्म आमतौर पर नियमित मंदिरों में या जहां कोई जलाशय हो वहां किया जाता है। मुख्य आचार्य के नेतृत्व में महत्वपूर्ण वैदिक अंशों के उच्चारण के साथ अनुष्ठान शुरू होगा।

यह एक विशेष क्षण होता है जब पुराने पूनुल बदले जाते हैं और नए पूनुल पहने जाते हैं। फिर सभी लोग मिलकर गायत्री का जप करते हैं। उसके बाद, यज्ञोपवीत तर्पण समारोह होता है। गायत्री जपम का अर्थ है सभी लोकों में अच्छाई की सुबह देखना। उपाकर्म के बाद के दिन सूर्योदय से पहले एक हजार आठ गायत्री (सहस्रवर्ती) का जप करना बहुत महत्वपूर्ण है। विश्व में शांति के लिए गायत्री जप का बहुत महत्व है।

सूती धागे से बने पूनोल, ब्रह्मचारियों के लिए तीन धागे वाले पूनोल, तथा विवाहित लोगों के लिए दो सेट के तीन धागे वाले पूनोल। जिनकी उम्र 60 वर्ष से अधिक है, उन्हें तीन सेट के तीन धागे वाले पूनोल पहनने चाहिए।ॐ □

प्रश्न-67) ओणम उत्सव की चरित्र क्या है?

उत्तर : ओणम उस दिन के रूप में मनाया जाता है जब भगवान विष्णु ने वामन अवतार लिया था। और यह वह दिन भी है जब महान समाट महाबली अपनी प्रजा से मिलने आते हैं। अब इसकी पौराणिक कथा पर एक नज़र डालते हैं। महाबली समाट श्री विरोचन के पुत्र और श्री प्रह्लाद के पोते थे। दक्षिण भारत पर मध्य प्रदेश में नर्मदा नदी से लेकर सीमा तक शासन था। (यह याद रखना चाहिए कि उस समय केरल या कोंकण क्षेत्र नहीं था..बाद में श्री परशुराम के अवतार के दौरान, समुद्र के हटने के बाद केरल और कोंकण क्षेत्र अस्तित्व में आए)। उस समय महाबली बहुत बहादुर और अप्रतिम वह अपनी अपार प्रतिभा और नेतृत्व कौशल से दूसरे लोकों पर शासन कर रहा था। जब उसने दूसरे लोकों पर अपनी

संस्कृति, भाषा और विचार थोपे, तो वहाँ की प्रजा ने अपनी स्वतंत्रता के लिए शोर मचाया और बिना किसी हिचकिचाहट के भगवान विष्णु पर निर्भर हो गई। भगवान विष्णु ने अपने भक्त महाबली को, जो केवल भौतिकवादी इच्छाओं में लीन था, आध्यात्मिक तरीके से ऊपर उठाने और दूसरे लोकों को स्वतंत्रता देने का फैसला किया और एक अलौकिक चमत्कार करने का फैसला किया। इसलिए भगवान ने एक बालक का रूप धारण करके महाबली से बलि चढ़ाने के लिए तीन फुट की जगह मांगी। इसे स्वीकार करते हुए महाबली ने श्री वामन मूर्ति से कहा कि वे जहाँ चाहें तीन फुट नाप लें। अवसर यहीं है। मनुष्य के जन्म-लक्ष्य को पशुता से देवत्व की ओर जागृत करने की प्रेरणा महाबली में होनी थी और शेष 14 लोकों से मुक्ति का अनुभव होना था। जिस प्रकार श्री कृष्ण ने अपना मुख खोलकर यशोदामा को अपने मुख से सभी लोकों के दर्शन कराए थे, उसी प्रकार श्री वामन मूर्ति ने भी महाबली को चमत्कार दिखाया। अपने एक पैर से उन्होंने धरती से ऊपर के सभी 6 लोकों को नाप लिया.... और दूसरे पैर से उन्होंने धरती से नीचे के सभी 8 लोकों को नाप लिया। अब महाबली द्वारा जीते गए सभी 14 लोक मुक्त हो गए। वामन मूर्ति का पहला लक्ष्य पूरा हो गया था। उस समय महाबली ने वामन मूर्ति से पूछा, "यह कैसे संभव हुआ?"

वामन मूर्ति ने बताया कि मनुष्य ने पशुता से ऊपर उठकर देवत्व प्राप्त करने के लिए 84 लाख योनियों को पार किया है। यह भी दिखाया गया कि सर्वज्ञता, सर्वशक्तिमानता और सर्वव्यापकता आत्म-साक्षात्कार के साथ आती है। इस प्रकार समाट महाबली ने श्री वामन मूर्ति का शिष्यत्व स्वीकार किया और आत्म-साक्षात्कार के लिए साधना मार्ग अपनाया। इसके अलावा श्री वामन मूर्ति ने महाबली को एक स्थान (सुतल नामक पाताल) दिखाया जहाँ वे शांतिपूर्वक साधना कर सकते थे। इस प्रकार केरल में मनाया जाने वाला "तिरुवोणम" दिवस वह दिन है जब भगवान विष्णु ने श्री वामन मूर्ति के रूप में अवतार लिया था जिन्होंने महाबली को दीक्षा दी थी।

प्रश्न-68) ओणम का रक्षा बंधन से क्या संबंध है ?

उत्तर : श्री वामन मूर्ति ने महाबली को एक स्थान दिखाया, जहाँ वे अपनी प्रजा के साथ जाकर साधना कर सकते थे। तब महाबली ने अपनी भक्ति की सर्वोच्च अवस्था में भगवान से प्रार्थना की कि वे अपने

गुरु और अपने भगवान के दर्शन सदैव करते रहें और चूंकि वे साधना में लीन हैं, उन्होंने श्री वामन मूर्ति से उनके राज्य का शासन चलाने का अनुरोध किया। शक्ति वत्सल श्री वामन मूर्ति इससे सहमत हो गए। यह जानकर माता श्री लक्ष्मी दुखी हो गईं। यह महसूस करते हुए कि अब वे अपने पति को वापस नहीं पा सकतीं, माता ने ऋषि श्री नारद को बुलाया और उपाय पूछा। इस प्रकार, इतिहास में पहली बार ऋषि श्री नारद ने माता श्री लक्ष्मी को "रक्षा बंधन" की विधि बताई और देवी से समाट श्री महाबली को अपना भाई मानकर श्री महाबली को रक्षा बंधन से बांधने के लिए कहा। इस प्रकार इतिहास में पहली बार श्रावण मास की पूर्णिमा के दिन (अवनि अवितम) माता लक्ष्मी ने श्री महाबली को रक्षाबंधन बांधा और उन्हें अपना भाई स्वीकार किया। इससे प्रसन्न होकर समाट श्री महाबली ने अपनी बहन श्री लक्ष्मी माता से जो भी मांगना हो मांगने को कहा। माता लक्ष्मी ने मांग की कि उनके पति को वापस उनके पास भेज दिया जाए। अपनी बहन की खुशी का सम्मान करते हुए समाट महाबली ने श्री वामन रूपी भगवान विष्णु को उनके वचनों के बंधन से खुशी-खुशी मुक्त कर दिया। इस प्रकार माता लक्ष्मी को रक्षाबंधन के माध्यम से अपने स्वामी वापस मिल गए। इस प्रकार तिरुवोणम के दिन महाबली की भक्ति से बंधे श्री विष्णु रक्षाबंधन के द्वारा मुक्त हुए। यही है ओणम और रक्षाबंधन का संबंध।

प्रश्न-69) समाट महाबली का मध्य अमेरिका में मैक्सिको माया सभ्यता से क्या संबंध है ?

उत्तर : वामन मूर्ति ने समाट को साधना करने और शांति से रहने के लिए एक स्थान दिखाया...वह स्थान वह क्षेत्र है जहाँ मध्य अमेरिका में मैक्सिको माया सभ्यता के अवशेष स्थित हैं। शायद अगर वामन मूर्ति ने समाट बलि को सीधे धरती से उतारा होता तो राजा धरती के दूसरी तरफ मैक्सिको और गवाटेमाला के क्षेत्रों में पहुँच जाते। उस क्षेत्र में माया सभ्यता के अवशेष इस बात के गवाह हैं। वहाँ लगभग 60 शहरों के अवशेष, 250 मूर्तियाँ, मंदिर और पक्षियों और जानवरों की छवियाँ इस तरह से मिली हैं कि वे हमारी भारतीय संस्कृति से मेल खाती हैं। माया सभ्यता का नाम राक्षसी वास्तुकार माया द्वारा इन शहरों के निर्माण के नाम पर रखा गया था।

प्रश्न-70) जब समाट महाबली ने राज्य किया था, तब केरल नहीं था, फिर समाट महाबली का आगमन केरल का उत्सव कैसे बन गया?

उत्तर : यह सच है कि जब समाट महाबली का राज्य था, तब केरल का अस्तित्व नहीं था। उसके बाद जब श्री परशुराम को समुद्र के घटने से बनी भूमि मिली, तो उन्होंने यह भूमि उन लोगों को उपहार में दे दी, जो समाट बलि के राज्य में रहते थे। वे यहाँ आकर बस गए। लेकिन चूँकि वे वहाँ ओणम मना रहे थे, इसलिए वे अपने साथ ओणम का त्यौहार भी ले आए। इस तरह यह केरल का त्यौहार बन गया। वे वास्तव में ओणम को श्री वामन मूर्ति के अवतरण दिवस के रूप में मनाते थे। फिर समय के प्रवाह में कुछ स्थानीय परिवर्तनों के कारण, इसे हर साल इस दिन महाबली के अपनी प्रजा से मिलने के उत्सव के रूप में बदल दिया गया।

प्रश्न-71) महान व्यक्तित्व (वी.आई.पी.), क्या उनका प्रभाव समाज को आकार देता है?

उत्तर : हम गुरुओं की परम्परा में रहने वाले लोग हैं... हमें किसी भी चीज के लिए गुरु की जरूरत होती है.... या फिर विशेष व्यक्ति, महान लोग, नेता होंगे.... भगवद गीता में क्या कहा गया है, सुनिए....

भगवद्गीता 3.20-21: "अपने निर्धारित कर्तव्यों का पालन करके, राजा जनक और अन्य लोगों ने सिद्धि प्राप्त की। आपको भी दुनिया के कल्याण के लिए एक उदाहरण स्थापित करने के लिए अपने कर्तव्यों का पालन करना चाहिए। विशेष व्यक्ति (महान) जो भी कार्य करते हैं, सामान्य लोग उसका पालन करते हैं। वे जो भी मानक निर्धारित करते हैं, सारा संसार उसका पालन करता है।"

अब मैं आपको इस विषय को उठाने का कारण बताता हूँ। किसी समाज, संस्कृति को नष्ट करने के लिए आपको उस समाज के नेताओं, उस समाज के विशेष लोगों को खत्म करना होगा। एक बार जब वे निष्क्रिय हो जाते हैं, तो समाज दिशाहीन हो जाता है। यह दो तरह से हो सकता है। 1) उन्हें दुश्मनों द्वारा खत्म किया जा सकता है। (हिंदू नेताओं की हत्याएं जो 2019 तक न केवल केरल में बल्कि पूरे भारत में हुईं) 2) ऐसा तब होता है जब दुश्मन, समाज के मूर्खों का उपयोग करके महान लोगों को नीचा दिखाते हैं या जब मूर्ख समाज में आते हैं और महान लोग अपनी महिमा खो देते हैं।

अब देखते हैं कि महान या वीआईपी व्यक्ति कौन हैं। "अगर कोई व्यक्ति दूसरों पर अपना प्रभाव डाल सकता है, तो वह व्यक्ति महान या वीआईपी व्यक्ति है।" ध्यान देने वाली एक और बात यह है कि ये लोग अपने आप महान नहीं बन गए। जो लोग उन्हें स्वीकार करते हैं, वे उन्हें महान व्यक्ति मानते

हैं। वहीं कुछ ऐसे भी हैं जो पैसे खर्च करके खुद को महान व्यक्ति बताते हैं। यहाँ बात यह नहीं है। कहा जाता है कि वीआईपी या महान व्यक्ति अच्छे समाज का हिस्सा होते हैं। उनके कारण ही एक अच्छी सभ्यता का जन्म होता है और उनके अभाव में ही एक राष्ट्र नष्ट हो जाता है। आज हिंदुओं के साथ भी यही स्थिति है। नेतृत्व के बिना कोई भी व्यक्ति कुछ भी कह सकता है और कुछ भी कर सकता है। क्योंकि हमने अपने महान नेताओं को पहचाना नहीं। उन्हें सुरक्षा नहीं दी गई। इसलिए, कई लोग खुद ही सीमित हो गए और बाकी लोग दूसरे पथों पर निर्भर हो गए।

इसलिए हमें याद रखना चाहिए कि यदि समाज का प्रत्येक सदस्य दुश्मनों के षडयंत्रों और कुछ मूर्खों के क्षुद्र स्वार्थों का समर्थन किए बिना एक अच्छी नेतृत्व शैली बनाने के लिए हमारे समाज के महान व्यक्तियों को प्रोत्साहित करने और उनकी रक्षा करने की जिम्मेदारी नहीं लेता है, तो हमें याद रखना चाहिए कि समाज का मार्ग उसके विनाश की ओर होगा।

जब किसी समाज की व्यवस्था में मूर्ख ज्यादा हो जाएं और तब लगे कि ये व्यवस्था खत्म हो जाएगी, तो कैसे बची, इसका एक उदाहरण है। ये स्टालिन के सोवियत संघ का इतिहास है। अक्टूबर क्रांति के बाद लेनिन सत्ता में आए। बाद में स्टालिन के सत्ता में आने पर ये हुआ। जब स्टालिन का शासन आया तब तक मूर्खों की संख्या काफी बढ़ गई थी और वो खुद को विद्वान समझने लगे, हर चीज की खुद आलोचना करने लगे और जब उन्होंने नए सिद्धांत और व्याख्याएं बनानी शुरू की तो स्टालिन का शासन नहीं चल सका। अपने ही न समझने वाले साथियों को मारने के अलावा कोई विकल्प न होने पर स्टालिन ने मानव इतिहास के सबसे हताश करने वाले मानवीय अपराध की तैयारी की। इसने अपने ही 20 मिलियन साथियों को मारकर एक समाज को विलुप्त होने से बचाया। बाद के इतिहास ने सोवियत संघ को विश्व का सबसे शक्तिशाली राष्ट्र बना दिया।

प्रश्न-72) नेति-नेति सिद्धांत क्या है?

उत्तर: हिंदू प्रणाली में विशेष रूप से उपनिषद संप्रदाय में, गुरु अशिक्षित विषय यानी परमात्मा के ज्ञान को सिखाने के लिए एक योजना का उपयोग करता है। इसे नेति-नेति सिद्धांत कहा जाएगा। जिसमें गुरु सीधे सच नहीं बताएगा, बल्कि संकेत देगा और जिज्ञासु व्यक्ति, शिष्य की जिज्ञासा कुछ खोजती है और

गुरु से पूछती है कि क्या यह सच है। गुरु कहेंगे ठीक है या गुरु कहेंगे नेति-नेति (यह नहीं है) और नए सुराग देंगे। इस प्रकार यह प्रक्रिया तब तक जारी रहती है जब तक शिष्य स्वयं सत्य/उत्तर की खोज नहीं कर लेता। इस सिद्धांत का उद्देश्य भीतर के ज्ञान के स्रोत के बंद दरवाजे को खोलना है। एक बार ज्ञान/बुद्धि के उस स्रोत का द्वार खुल गया तो फिर सवालों के जवाब के लिए बाहर देखने की जरूरत नहीं पड़ती। सभी उत्तर भीतर से आते हैं। यही नेति-नेति सिद्धांत की प्रक्रिया है।

प्रश्न-73) क्या भूमि देवी वायरल बुखार से पीड़ित हैं? क्या इसका कोई इलाज है? डॉक्टर कौन है?

उत्तर : आइए हिंदू धर्म अध्ययन (प्राथमिक) के परिचय के पहले पैराग्राफ को याद करें, "मानवता आज अपने सबसे बुरे दौर से गुज़र रही है। सबसे पहले, मानव जाति का निवास स्थान ही खतरे में है। अगले 10 वर्षों में, धरती माता हमें सहारा देने में सक्षम नहीं लगती। अम्लीय वर्षा, विकिरण, रासायनिक उत्सर्जन, क्लोरीन, फ्लोरीन और कार्बन उत्सर्जन प्रकृति के दुर्लभ संसाधनों को खतरनाक रूप से कम कर रहे हैं और जलवायु में खतरनाक बदलाव ला रहे हैं। सूर्य से निकलने वाली गर्म लहरों और गर्म गैसों के कारण जलवायु नष्ट हो रही है। ग्लोबल वार्मिंग और ग्रीनहाउस गैसों से होने वाले बदलावों के कारण धुवीय बर्फ पिघल रही है, समुद्र का स्तर बढ़ रहा है, तूफान, भूकंप, वायु और जल प्रदूषण, ओज़ोन की कमी और भूमि क्षरण हो रहा है। पारिस्थितिकी तंत्र अस्थिर होता जा रहा है।"

ग्रीनहाउस प्रभाव वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा पृथ्वी की सतह के पास 'ग्रीनहाउस गैसों' के रूप में जाने जाने वाले पदार्थों द्वारा गर्मी को फँसाया जाता है। इन गैसों को एक आरामदायक कंबल के रूप में सोचें जो हमारे ग्रह को धेरता है, इसे ज़रूरत के हिसाब से गर्म रखने में मदद करता है।

पृथ्वी की ग्रीनहाउस गैसें वायुमंडल में गर्मी को फँसाती हैं और ग्रह को गर्म करती हैं। ग्रीनहाउस प्रभाव के लिए ज़िम्मेदार मुख्य गैसों में कार्बन डाइऑक्साइड, मीथेन, नाइट्रस ऑक्साइड और जल वाष्प शामिल हैं। इन प्राकृतिक यौगिकों के अलावा, सिंथेटिक फ्लोरीनेटेड गैसें भी ग्रीनहाउस गैसों के रूप में कार्य करती हैं।

संक्षेप में कहें तो हम पिछले कुछ समय से जलवायु परिवर्तन देख रहे हैं। हर साल धरती की गर्मी बढ़ती जा रही है। यह हमारे अनुभव में है। इसका कारण मानवीय हस्तक्षेप है जो पर्यावरण के अनुकूल नहीं है।

मुख्य रूप से ऊर्जा के स्रोत के रूप में पेट्रोल और डीजल का उपयोग करना। एयर कंडीशनर का उपयोग, रेफ्रिजरेटर का उपयोग, प्लास्टिक का उपयोग और अवैज्ञानिक तरीके से उनका विनाश, पहाड़ों को गिराना, जंगलों को जलाना, ग्रीन हाउस के प्रभाव यह सब ऐसे ही चलता है। अगर हम पृथ्वी को अपनी माँ मानते हैं तो आज पृथ्वी के गर्म होने को "माँ वसुधरा वायरल बुखार से पीड़ित" कहा जा सकता है।

प्रश्न-74) शंकराचार्य ने शास्त्रार्थ में बौद्ध धर्म को कैसे हराया?

उत्तर : श्री आचार्य ने उन्हें भारत छोड़ने के लिए नहीं कहा, लेकिन उन्होंने हिंदू धर्म में उनका विश्वास बहाल किया और उन्हें अपने मूल धर्म यानी हिंदू धर्म में लौटने में मदद की। श्री आदि शंकराचार्य हिंदू धर्म के सबसे महान दार्शनिकों में से एक हैं। श्री शंकराचार्य का जन्म आठवीं शताब्दी में हुआ था और बचपन से ही उन्हें हिंदू शास्त्रों में गहरी रुचि थी। बहुत कम उम्र में उन्होंने वेदों, उपनिषदों, भगवद गीता और ब्रह्म सूत्र के बारे में जानने योग्य हर चीज को पढ़ा और समझा। तब समस्या यह थी कि सनातन धर्म एक कर्मकांड धर्म में सिमट कर रह गया था जहाँ आम लोग और अन्य विद्वान/दार्शनिक हिंदू शास्त्रों की मूल शिक्षाओं को गलत समझते थे या उनकी गलत व्याख्या करते थे। इससे हिंदुओं के बौद्ध और जैन धर्म में शांतिपूर्ण धर्मातरण में व्यापक वृद्धि हुई।

अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद श्री आदि शंकराचार्य गुरु बन गए। उन्होंने भारत में बौद्ध और जैन धर्म के बढ़ते प्रभाव को देखा। शंकराचार्य समझ गए कि समस्या महान हिंदू धर्मग्रंथों को समझने में है। हिंदू धर्मग्रंथों की अपनी अथाह और उत्कृष्ट समझ के साथ श्री आदि शंकराचार्य ने किसी को भी जबरन धर्मातरित नहीं किया, उन्होंने विज्ञान के लिए हर बौद्ध दार्शनिक को चुनौती दी।

शास्त्रार्थ एक दार्शनिक और धार्मिक प्रतियोगिता है, जिसमें प्रतियोगी को अपने मूल शास्त्रों को समझकर ही किसी भी प्रश्न का उत्तर देना होता है।

श्री आदि शंकराचार्य के मामले में उन्हें वेदों, उपनिषदों, भगवद गीता और ब्रह्म सूत्र के अपने ज्ञान के आधार पर उत्तर देना था, जबकि बौद्ध दार्शनिकों को गौतम बुद्ध की मूल शिक्षाओं के आधार पर उत्तर देना था। प्रश्न न्यायाधीश, दर्शक या अन्य प्रतिभागियों की ओर से हो सकते हैं।

श्री आदि शंकराचार्य के सभी शास्त्रार्थों की एकमात्र शर्त यह थी कि जो भी शास्त्रार्थ हार जाए, उसे उनका शिष्य बनना होगा। बाकी इतिहास है और श्री शंकराचार्य ने अब तक जिन भी दार्शनिकों की चर्चा की, उन सभी को पराजित किया।

सुंदरता यह है कि उनके विरोधी उनसे हार से क्रोधित नहीं थे, बल्कि आदि शंकर के रूप में एक महान् गुरु पाकर खुश थे।

श्री आदि शंकराचार्य ने अपने विरोधियों, उनके शिष्यों और श्रोताओं को हिंदू धर्मग्रंथों का महत्व समझाया, क्योंकि इसकी स्पष्ट समझ से सभी प्रश्नों के उत्तर मिल सकते हैं।

श्री आदि शंकर ने पूरे भारत की यात्रा की और जहाँ भी वे गए, हिंदू धर्म के बारे में उनके ज्ञान ने हिंदू धर्म में सभी की आस्था को मजबूत किया। ईश्वर जानते थे कि हमारे हिंदू धर्मग्रंथों में लिखे सत्य को समझने के लिए इन भ्रमित और परेशान समय में उनके जैसे गुरु की आवश्यकता थी।

प्रश्न-75) होली कैसे मनाई जानी चाहिए?

उत्तर: हिंदुओं की जीवन योजना में त्यौहारों और उत्सवों पर जोर दिया जाता है। महाशिवरात्रि जल्द ही आने वाली है। यह साधना का पर्व है। इसलिए, महाशिवरात्रि हिंदू समुदाय के पूजा स्थलों जैसे मंदिर, मठ, पीठ आदि में मनाई जानी चाहिए।

महाशिवरात्रि के बाद समाज होली का त्यौहार मनाता है, जो वसंत ऋतु के आगमन का संकेत है। होली का त्यौहार समाज के उत्सवों में से एक है। इसलिए इसे युवा संगठनों और समाज सेवा संगठनों के नेतृत्व में सामाजिक स्तर पर सार्वजनिक जुलूस के रूप में मनाया जाना चाहिए।

होली का त्यौहार भी भारत की एकता, अखंडता और समानता को बनाए रखने वाला एक बहुत ही मार्मिक त्यौहार है जो राम सेतु से लेकर भारत के हिमालय तक मनाया जाता है।

अगर हम इसके इतिहास पर नज़र डालें तो हमें तीन ऐतिहासिक घटनाएँ याद आएंगी। पहली बात जो दिमाग में आती है वो ये कि भगवान शिव ने कामदेव को जला दिया और फिर अगले दिन कामदेव को देवी रति को लौटा दिया। दूसरी बात, हम भगवान नरसिंह के अवतार से जुड़े हिरण्यकश्यप को होलिका को प्रह्लाद को जलाने का आदेश देते हुए देखते हैं, फिर होलिका को भगवान विष्णु द्वारा भस्म कर

दिया जाता है और श्री विष्णु की कृपा से प्रह्लाद को बचा लिया जाता है। तीसरी घटना श्रीकृष्ण की बाल लीला से जुड़ी है। ये श्रीकृष्ण के बचपन के खेल हैं, वो बालक जिसने अपने दोस्तों पर रंग छिड़क कर उन्हें विभिन्न रंगों में भिगो दिया था, जो उनके काले होने का मज़ाक उड़ाते थे।

होली के त्यौहार के दो भाग हैं

- 1) काम/होलिका दहनम् यह फाल्गुन माह में शुक्ल पक्ष पूर्णिमा को मनाया जाता है और उसके अगले दिन
- 2) रंगबिरंगी होली का उत्सव, जहाँ कामदेव और प्रह्लाद अग्नि से बचकर वसंत ऋतु का स्वागत करते हैं, गीत और संगीत के साथ मनाया जाता है, जहाँ रिश्तेदारों और दोस्तों पर पानी और रंग छिड़के जाते हैं।

अब होली मनाने का कार्यक्रम तय करते हैं...

साझा मैदान या मंदिर परिसर में उत्सव का आयोजन करें

कार्यक्रम

(फाल्गुन पूर्णिमा पर)

शाम 8 बजे से - कला और सांस्कृतिक कार्यक्रम।

रात 10.30 बजे - मृत्युंजय/नरसिंह होमम्

रात 11.30 बजे होमग्नि द्वारा काम/होलिका दहन, भस्म करने वाली अग्नि के चारों ओर हर्षलासपूर्वक नृत्य, समोहा शांति मंत्र...

फिर विशेष होली (होलीगे) प्रसाद और पानक नामक औषधीय पेय का वितरण, आज के कार्यक्रमों का समापन।

(चैत्र कृष्णपक्ष प्रतिपदा)

सुबह 6 बजे से संघ बनाकर एकत्रित होकर गीत गाते, नाचते, वाद्य यंत्र बजाते हुए प्रत्येक रिश्तेदार व मित्र के घर जाकर सभी दोस्तों व रिश्तेदारों को पानी व रंग से रंगना चाहिए।

दोपहर 12 बजे तक शांति मंत्र का जाप कर उत्सव का समापन करना चाहिए।

होली है...

प्रश्न-76) हिंदू दुनिया के लोगों से क्या अपेक्षा करते हैं?

उत्तर: हिंदू जीवन का लक्ष्य मोक्ष या आत्मसाक्षात्कार है। इसके लिए शांति और सुकून की आवश्यकता होती है। यही हम हिंदुओं से सुनते हैं जो अपने सभी कर्मों के बाद शांति मंत्र का जाप करते हैं। हिंदू इस दुनिया से, दुनिया के लोगों से यही अपेक्षा करते हैं। हिंदू इसके लिए सादा जीवन जीने को तैयार हैं। अगर उन्हें शांति मिले तो वे किसी को भी किसी भी हद तक माफ करने को तैयार हैं। इसलिए आज सबसे शांतिप्रिय हिंदुओं की मोक्ष साधना में खलल पड़ गया है। कुछ ऐसा हो रहा है जो उनकी शांति और सुकून को नष्ट कर रहा है। उनके बच्चे आज सुरक्षित नहीं हैं, उनका परिवार, चल-अचल संपत्ति आज सुरक्षित नहीं है, विभिन्न प्रकार के आतंकवाद, धर्मातरण लॉबी और राक्षसी विचारों के प्रचार ने उनकी मानसिक और शारीरिक शांति को भंग कर दिया है। बहुत हो गया। यदि नहीं, तो इतिहास गवाह है कि भारत में उनकी मानसिक शांति को नष्ट करने आए यवन, शक-कुषाण, हूण, अरब, अंग्रेज-यूरोपियन का नामोनिशान भी नहीं हैं। फिर यह ऐतिहासिक तथ्य है कि इनकी धूल भी नहीं मिल सकती। उस तरह से हिंदुओं ने उन्हें स्वदेश से मिटा दिया। वह हिंदू लोग हैं। एक बार उन्होंने ठान लिया, तो वे अंत करके दिखाएंगे। इसलिए लोगों को हिंदुओं की शांति भंग करने से दूर रहना चाहिए, अन्यथा इसमें कोई संदेह नहीं है कि इतिहास खुद को दोहराएगा। यहां दशावतारों को याद करना सुखद होगा।

प्रश्न-77) क्रिया योग क्या है?

उत्तर: क्रिया कुण्डलिनी योग :-

क्रिया कुण्डलिनी योग शृंखला के योगियों के अनुसार, ईश्वर कोई ब्रह्मांडीय नागरिक नहीं है। यह एक आत्मा और चेतना है जो इस ब्रह्मांड में व्याप्त है। इससे अलग कुछ भी नहीं है। यह एक ही समय में गुणरहित है और एक ही समय में सभी गुणों का आधार है। इसी से आत्म-निर्माण होता है और अरबों वर्षों के बाद सभी जीव इसमें विलीन हो जाते हैं। फिर से सृजन शुरू होता है। आत्मा सार्वभौमिक सर्वोच्च आत्मा है। सच में यह न तो पैदा होती है और न ही रूपांतरित होती है। आत्मा हमारे शरीर के अंदर और बाहर भी फैली हुई है। यह सभी वस्तुओं पर समान रूप से फैली हुई है। जिस तरह समुद्र की सतह

पर बुलबुले, भौंवर और लहरें बनती हैं, उसी तरह सभी प्राणी जन्म लेते हैं और फिर सर्वोच्च आत्मा में विलीन हो जाते हैं और फिर से जन्म लेते हैं।

विकासात्मक पुनर्जन्म की प्रक्रिया के माध्यम से, आत्मभाव जड़ से जंगम, पौधों से जानवरों तक लगभग 84 लाख बार पुनर्जन्म लेते हैं और फिर मनुष्य रूप में पहुँचते हैं। प्राकृतिक विकास की प्रक्रिया में, यदि कोई व्यक्ति पृथ्वी पर अगले दस लाख वर्षों तक रहता है, यानी लगभग दस हज़ार जन्म, तो वह संचित कर्मफलों का अनुभव करके प्राकृतिक विकास के माध्यम से आत्म-ज्ञान और मुक्ति तक पहुँच सकता है। लेकिन यदि कोई वैज्ञानिक योग साधना का अभ्यास करता है, तो वह एक ही जन्म में मुक्त हो सकता है।

"अतः क्रिया योग एक ऐसी साधना पद्धति है जिसे कोई भी साधक, कोई भी गृहस्थ, वह किसी भी धर्म, जाति, वर्ण या लिंग का क्यों न हो, बिना किसी धार्मिक अनुष्ठान के स्वीकार कर सकता है। क्रिया योग एक वैज्ञानिक, बहुत सरल किन्तु बहुत ही रहस्यमय योग साधना है। यद्यपि आत्म-साक्षात्कार के अनेक मार्ग हैं, क्रिया योग कर्म, भक्ति, राज, ज्ञान और योग का मिश्रण है। इसमें सरल हठ योग, प्राणायाम, मुद्राएं, बंध सम्मिलित हैं। कर्म फल वे स्मृतियां हैं जो मन में रहती हैं। ये स्मृतियां ही हैं जो हमें वापस दुख की ओर ले जाती हैं। कुण्डलिनी शक्ति एक प्रकार की दिव्य विद्युत ऊर्जा है जो हमारी रीढ़ के आधार पर मूलाधार चक्र नामक ऊर्जा केंद्र में सुप्त अवस्था में रहती है। जब इसे विशेष योग साधना के माध्यम से जागृत और मजबूत किया जाता है, तो मन में संचित लाखों अनावश्यक जन्मों की स्मृतियां भस्म हो जाती हैं और मनुष्य सभी प्रकार की प्रगति और विकास से गुजरता है तथा जन्म-मरण की अंतहीन धारा से मुक्त हो सकता है।

श्री पार्वती देवी ने सबसे पहले श्री परमेश्वरन से यह योग तकनीक प्राप्त की, जिन्होंने क्रिया योग साधना के माध्यम से स्वरूपसिद्धि प्राप्त की और भगवान के समान बन गए। गणपति को यह ज्ञान देवी पार्वती से मिला और फिर नंदिकेशन को गणपति से। इसके बाद यह नाथ संप्रदाय (नव नाथ), सिद्ध संप्रदाय (84 सिद्ध), और नयनार (64 नयनार) संप्रदाय और अन्य के माध्यम से पूरी दुनिया में फैल गया।

प्रश्न-78) हिंदुओं के दुश्मन कौन हैं?

उत्तर :- हिंदू दर्शन के अनुसार, सृष्टि में मौजूद हर चीज़ उस चेतना का ईश्वरीय पहलू या ईश्वर का ही रूपांतरण है। दूसरे शब्दों में, हिंदुओं के लिए, सृष्टि में मौजूद हर चीज़ ईश्वर है। यही हम हिंदुओं के वैदिक मंत्र में देखते हैं।

चलो "अहम् ब्रह्मास्मि"

"तत्त्वमसि"

"अयमात्मा ब्रह्म"

"प्रजानं ब्रह्म"

"ईशावास्यमिदं सर्वम्"

"सर्वं खल्विदं ब्रह्मा", हो

इसमें कीट से लेकर हाथी या व्हेल तक सब कुछ शामिल है, या घास के एक पत्ते से लेकर आकाशगंगा तक के नक्षत्र भी शामिल हैं। जैसे कि स्तंभ और जंग। तो क्या हिंदुओं के दुश्मन होंगे? नहीं, सृष्टि में कोई भी कभी हिंदुओं का दुश्मन नहीं रहा है। इसीलिए हिंदू "सर्वे भवन्तु सुखिनः..." और "लोका समस्ता सुखिनो भवन्तु..." की प्रार्थना करते हैं।

लेकिन हिंदू राष्ट्र नीति या राष्ट्र तंत्र के तहत, शासक वर्ग को समाज में न्याय, नैतिक मूल्यों, मानवता और कानून के शासन की भावना को बनाए रखने के लिए अनैतिक गतिविधियों की ताकतों को दबाने का अधिकार दिया गया है।

यदि वे इसमें असफल होते हैं, तो समाज में क्षत्रिय (सैन्य प्रकृति के लोग) यह जिम्मेदारी उठाएंगे। यहां भी असफल होने पर समाज स्वयं ही इन अनैतिक आंदोलनों/शक्तियों के खिलाफ लड़ने के लिए एक नायक को जन्म देगा। इस प्रकार, उस नायक के निर्देशों का पालन करते हुए, सभी एकजुट होकर खड़े होंगे और उन बुरी शक्तियों को मिटा देंगे जो व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र और दुनिया के लिए बाधा हैं। यहाँ दुश्मनी नहीं है। केवल कर्तव्य है। जो कहा गया है वह यह है कि हिंदुओं का दुनिया में किसी से कोई बैर नहीं है, कोई भी उनका दुश्मन नहीं है।

प्रश्न-79) प्रकृति द्वारा हिंदुओं पर क्या जिम्मेदारी डाली गई है?

उत्तर :- जीवन एककोशिकीय जीव से बहुकोशिकीय जीव और फिर मानव पशु के रूप में उभरा है। इसे पूर्ण मानव या महात्मा बनाने और फिर इसे देवत्व तक बढ़ाने के लिए प्रकृति ने हिंदू को आवश्यक ज्ञान, तंत्र, प्रेरणा और परिस्थितियां प्रदान करने की जिम्मेदारी सौंपी है। इसे पूरा करने के लिए उन्हें इस धरती पर शांति और समृद्धि की आवश्यकता है। माँ प्रकृति, माँ पृथ्वी को संरक्षित और पोषित करने की आवश्यकता है। इसके लिए धर्म को कायम रखने की जरूरत है। यदि हिंदू अंधकार में खो गया, तो जीवन, प्रकृति या सृष्टि का कोई भविष्य नहीं है। इसलिए प्रकृति अपने आंतरिक हाथों में हिंदू धर्म का पोषण करती है। यह महसूस करते हुए, इस आशा के साथ कि हिंदू जिम्मेदारी की उस भावना को जगाएंगे।

प्रश्न-80) आदिपराशक्ति को माता नारायण, देवी नारायण, लक्ष्मी नारायण, भद्रे नारायण क्यों कहा जाता है?

उत्तर :- प्रकृति माँ है। इसलिए हम आदि पराशक्ति में प्रकृति के नौ गुणों को नव दुर्गा के रूप में देखते हैं। अब विष्णु का अर्थ है, नाम ही ब्रह्मांडीय भूमिका को दर्शाता है, पूरे ब्रह्मांड में फैल रहा है, सभी अस्तित्व में व्याप्त है, जीवन के हर पहलू को भर रहा है। यह भी प्रकृति को दर्शाता है। इस सृष्टि में व्याप्त प्रकृति है। इसलिए विष्णु या नारायण भी प्रकृति शक्ति को संदर्भित करते हैं। यह दिखाने के लिए ही नारायणन ने देवी मोहिनी का अवतार लिया और दिखाया कि वे एक माँ भी हैं। इस प्रकार, जब आदिपराशक्ति को माँ नारायण, देवी नारायण, लक्ष्मी नारायण, भद्रे नारायण कहा जाता है, तो ऐसा इसलिए होता है ताकि आम लोग समझें कि नारायण और देवी एक ही शक्ति हैं।

प्रश्न-81) क्या आप हमें वेदों की उत्पत्ति के बारे में बता सकते हैं?

Answer :- आइए वेदों की उत्पत्ति पर एक संक्षिप्त नज़र डालें। विज्ञान या विज्ञान की मूल प्रकृति क्या है? प्रश्न पूछना, है न? यहीं से विज्ञान और ज्ञान की शुरुआत होती है। इसी तरह, सनातन धर्म प्रश्न पूछने से शुरू होता है। हमारे वेदों में सामवेद सूक्त और उपनिषद इसके प्रमाण हैं। दशोपनिषद में ही, प्रश्न से संबंधित दो उपनिषदों का नाम है।

पहला केनोपनिषद् सामवेद से संबंधित है। केनोपनिषद् का अर्थ है क्या, कैसे, कब, क्यों, कहाँ पूछने के लिए उपनिषद। उदाहरण के लिए, आइए केनोपनिषद् के पहले श्लोक को ही देखें। (केनोपनिषद् 1.1) इसे किसने भेजा, मन कहाँ उड़ता है? किसकी मदद से पहली सांस ली गई है? हम जो शब्द बोलते हैं, उन्हें कौन भेजता है? कान और आँखें जोड़ने वाला देव कौन है?

दूसरा है अर्थवेदीय प्रश्नोपनिषत्। क्या नाम ही प्रश्न नहीं है?

क्या विज्ञान केवल प्रश्न पूछने से ही संभव है? नहीं, प्रश्न का उत्तर खोजना, परखना, विश्लेषण करना, आलोचना करना और देखना चाहिए, तथा विभिन्न स्थितियों, पदों, व्यक्तियों, क्षेत्रों में उस दृष्टिकोण का पुनः परीक्षण करना चाहिए। यदि परिणाम पहले जैसा ही है, तो उसे विज्ञान संस्थान के साथ साझा करें। वे कारण-प्रभाव तर्क के आधार पर तर्कों और प्रतिवादों का मूल्यांकन करेंगे। तब इसे संजानात्मक या वैज्ञानिक रूप से व्युत्पन्न सिद्धांत माना जा सकता है। जैसे अभी पीएचडी या शोध कर रहे हैं। इन सब पर विचार करने के लिए एक प्राधिकरण समिति (विज्ञान संस्थान) होनी चाहिए।

'वैदिक मंत्रों' के सिद्धांतों की उत्पत्ति एक समान प्रक्षेपवक्र साझा करती है। इसकी शुरुआत पूछताछ से हुई, जांच-पड़ताल तक आगे बढ़ी और छह प्राचीन उपकरणों द्वारा सुगम किए गए प्रयोग में परिणत हुई। दर्शन के रूप में जाने जाने वाले ये उपकरण सत्य और मौलिक सिद्धांतों को प्रकट करते हैं। इनकी संख्या छह होने के कारण इन्हें सामूहिक रूप से षड दर्शन (छह दर्शन) कहा जाता है। छह दर्शन हैं:

1. सांख्य (गणना)
2. न्याय (तर्क)
3. योग (मिलन)
4. वैशेषिक (विश्लेषण)
5. मीमांसा (व्याख्या)
6. वेदांत (परम ज्ञान)

इस प्रक्रिया में, ऋषि:

1. उत्तर ढूँढ़ेंगे (उपयुक्त दर्शन चुनेंगे)

2. इससे एक सिद्धांत निकालेंगे

3. समीक्षा के लिए इसे आधिकारिक समितियों (समितियों) के समक्ष प्रस्तुत करेंगे

प्रत्येक समिति का नेतृत्व एक निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा किया जाता था, जो प्रतीकात्मक रूप से उस समिति के देवता का प्रतिनिधित्व करता था।

चर्चा में शामिल थे:

- तार्किक बहस (तर्क-प्रतिवाद)
- कार्रवाई, कारण और परिणाम के सिद्धांतों पर विश्लेषण
- प्रश्नों और खंडनों के लिए व्यवस्थित प्रतिक्रियाएँ

जब आम सहमति बन जाती, तो मान्य उत्तर या

- एक ऋक् (वैदिक श्लोक)
- एक मंत्र (पवित्र सूत्र)
- एक सिद्धांत ("मौलिक सत्य)" बन जाता:

इसे समझने के लिए प्रत्येक ऋक् को देखना पर्याप्त है। प्रत्येक ऋक् (वैदिक छंद) में तीन आवश्यक तत्व समाहित होते हैं, जो इसकी प्रामाणिकता और महत्व को प्रकट करते हैं:

1. ऋषि: वह द्रष्टा या ऋषि जिसने ऋक् की कल्पना की और उसे स्थापित किया।
2. छंद: वह अद्वितीय लयबद्ध पैटर्न और माप जिसमें मंत्र प्रस्तुत किया जाता है, जो परिवर्तन या मिलावट के विरुद्ध सुरक्षा प्रदान करता है।
3. देवता: आधिकारिक समिति का देवता या नाममात्र का मुखिया जिसने सिद्धांत को स्वीकृत और पवित्र किया।

"इन्हें सनातन सिद्धांत के नाम से जाना जाता है क्योंकि इन्हें कई संदर्भों, व्यक्तियों, समाजों, स्थितियों और समयों में परखा गया है और ये सफल भी रहे हैं। इन सिद्धांतों के संग्रह को वेदों के नाम से जाना गया। वेदों के माध्यम से प्रस्तुत धर्म सनातन धर्म बन गया।"

यह धर्म का सबसे शुद्ध अवतार है। हम भाग्यशाली हैं कि इसे हमारे लिए संरक्षित किया गया है। कोई भी कृतज्ञता या श्रद्धांजलि उन निस्वार्थ वैदिक आचार्यों को पर्याप्त रूप से सम्मानित नहीं कर सकती, जिन्होंने अपने जीवन और पीढ़ियों को इसके संरक्षण के लिए समर्पित कर दिया। यहाँ हम देखते हैं कि वेदों की उत्पत्ति कैसे हुई। यह भी समझा गया कि यह सबसे वैज्ञानिक और साथ ही विद्वत्तापूर्ण था।

अगर हम इसे पारंपरिक रूप से देखें, तो यह भगवान् विष्णु ही थे जिन्होंने सबसे पहले प्रथम जीव ब्रह्मा (श्रीमद्भागवतम् 1.1.1) के हृदय में वैदिक ज्ञान प्रदान किया था। फिर भगवान् ब्रह्मा ने इसे अपने बच्चों को दिया। आइए इसे वैज्ञानिक रूप से परखें। हिंदू ब्रह्माण्ड विज्ञान के अनुसार, भगवान् विष्णु ने प्रकृति तत्व (मूल प्रकृति) को मूर्त रूप देते हुए, प्रथम जीव ब्रह्मा को ज्ञान प्रदान किया। यह ज्ञान ब्रह्मा की कोशिका संरचना के भीतर गुणसूत्रों, जीनों या चेतना के रूप में प्रकट हुआ। इसके बाद, ब्रह्मा (ब्रह्मदेव) ने इस ज्ञान को अपनी संतानों को दिया। यह समझ बताती है कि दिव्य ज्ञान प्रत्येक व्यक्ति के भीतर सुष्टु अवस्था में है, जो कठोर आध्यात्मिक प्रयास (साधना) के माध्यम से खोज की प्रतीक्षा कर रहा है, जो मानव जीवन का सर्वोपरि उद्देश्य है।

प्रश्न-82) क्या हिंदुओं के लिए मांस खाना वर्जित है? क्या हिंदुओं के लिए विदेशी कपड़े वर्जित हैं?

उत्तर :- किसी चीज को वर्जित करना सनातन का तरीका नहीं है। कहने की जरूरत नहीं कि यहां कोई वर्जित शब्द नहीं है। भोजन के प्रति मनुष्य के प्रेम के बारे में भगवद्गीता में जो कहा गया है, उसे समझने के लिए अध्याय 17 के श्लोक 7, 8 और 9 को देखना होगा। यहां बताया गया है कि सभी प्राणियों में तीन गुण होते हैं। सात्त्विक, रजोगुण और तमगुण। उनकी पसंद और प्राथमिकताएँ इन गुणों पर निर्भर करती हैं। इसी के अनुसार वे भोजन और कपड़े चुनते हैं। इसलिए, जहां तक सनातन या हिंदुओं का सवाल है, कुछ भी नकारा नहीं जाता, केवल इतना है कि उस देश की कानूनी व्यवस्था का पालन किया जाना चाहिए।

प्रश्न-83) हिंदू धर्मशास्त्र के अनुसार सात माताएँ कौन हैं?

उत्तर :- हिंदू धर्म शास्त्र के अनुसार, 'माता' (माँ) की अवधारणा जैविक संबंधों से परे है। सात लोगों को माँ के रूप में पूजा जाता है:

1. जैविक माँ (जननी)
2. धरती माता (भूमि देवी)
3. नदी (जल माता)
4. वेद (ज्ञान माता)
5. गाय (गौ माता)
6. दूसरे की पत्नी (परस्त्री)
7. देखभाल करने वाली/नर्स (धात्री)

प्राचीन हिंदू शास्त्रों में इन सात माताओं को मान्यता दी गई है, जो मातृ बंधन और जिम्मेदारियों के पवित्र महत्व पर जोर देती हैं।

प्रश्न-84) भगवान कृष्ण का विराट रूप (विराट रूप) क्या दर्शाता है?

उत्तर :- भगवान कृष्ण द्वारा अर्जुन को विराट रूप का दर्शन (भ.गी.अ.11) सनातन धर्म/हिंदू धर्म में ईश्वर की व्यापक अवधारणा को मूर्त रूप देता है। ऋग्वेद मंडल 10, सूक्त 90 इस रहस्य पर विस्तार से प्रकाश डालता है। सहस्र (हजार) सिर, आंख और पैर का चित्रण ईश्वर की सर्वव्यापी प्रकृति को दर्शाता है, जिसमें शामिल हैं:

- भूत, वर्तमान और भविष्य
- सभी चराचर (चल और अचल सृष्टि)
- सभी जीवित प्राणी, एकल-कोशिका वाले जीवों से लेकर मनुष्य, ऋषि, देवता और आकाशीय प्राणी (यक्ष, यक्षी, गंधर्व, किन्नर, भूत, प्रेत, पितृ, सुर, असुर और राक्षस)

हिंदू धर्म में, ईश्वर परम वास्तविकता है जो सृष्टि में विकसित हुई है। ईश्वर की संपूर्ण अवधारणा को समझने के लिए, सभी अस्तित्व की परस्पर संबद्धता को समझना चाहिए। विराट रूप इस एकता का प्रतिनिधित्व करता है, जो सृष्टि के हर पहलू को अपने में समाहित करता है।

प्रश्न-85) 'समाधि में बैठना' और 'समाधि में रखा जाना' किसे कहते हैं?

उत्तर :- सिद्धियाँ प्राप्त कर चुके योगी और सिद्धों सहित उन्नत आध्यात्मिक साधकों में अपनी इच्छा से अपने भौतिक शरीर से परे जाने की असाधारण क्षमता होती है। जब वे जानबूझकर किसी विशिष्ट समय और स्थान पर अपने शरीर से विदा लेने का निर्णय लेते हैं, तो इस जानबूझकर किए गए कार्य को 'समाधि में बैठना' कहा जाता है। इसके बाद, जब उनके शिष्य या अधिकृत प्रतिनिधि निर्धारित तरीके से भौतिक शरीर का अंतिम संस्कार करते हैं, तो इस अनुष्ठान को 'समाधि में रखा जाना' कहा जाता है। भौतिक शरीर, जो पाँच तत्वों - पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश (आकाश) से बना है - अंततः इन तत्वों में वापस विलीन हो जाता है। इसी प्रकार, समाधि के अलग-अलग रूप हैं, जहाँ शरीर को जानबूझकर प्रत्येक तत्व में विलीन कर दिया जाता है, इस प्रकार पृथ्वी समाधि, जल समाधि, अग्नि समाधि और वायु (आकाश) समाधि नाम दिए गए हैं।

पृथ्वी समाधि में, शिष्यों या प्रभारी लोगों को अंतिम संस्कार करने की आवश्यकता होती है, यही बात जल, अग्नि और वायु समाधि पर लागू नहीं होती है। जल समाधि में, पानी में डूबा हुआ साधक फिर कभी दिखाई नहीं देता, और शरीर भीतर ही भीतर गायब हो जाता है। अग्नि समाधि में, साधक अपने भीतर की योगिक अग्नि का उपयोग करके शरीर को भस्म कर देता है, और केवल राख ही छोड़ता है। वायु (आकाश) समाधि में, शरीर का कोई अवशेष नहीं रहता, क्योंकि आत्मा अपनी योग शक्ति के माध्यम से इसे हवा या आकाश में विलीन कर देती है।

पृथ्वी समाधि का एक उल्लेखनीय उदाहरण श्री कावुविलकम श्री कैलासनाथ महादेव मंदिर में आचार्य गुरु ब्रह्मश्री गोपन स्वामीजी (नेत्यतिनकारा गोप् स्वामी थिरुवदिकल) की समाधि है। स्वामीजी ने 9 जनवरी, 2025 को स्वर्ग द्वार एकादशी के दिन समाधि ली। 16 जनवरी, 2025 को केरल सरकार द्वारा पोस्टमार्टम परीक्षा और पुलिस जांच के बाद, 17 जनवरी, 2025 को पुनर महा समाधि अनुष्ठान किया गया।

जल समाधि का उल्लेखनीय उदाहरण भगवान श्रीराम का है, भगवान से पहले और बाद में कई महान आत्माएँ जल समाधि में रही हैं।

तिरुवन्नामलाई की गुफा अग्नि समाधि का एक उदाहरण है, गुहर्इ शिवया सिद्धर और उनके प्रमुख

शिष्य नमः शिवया सिद्धर की गुफाएँ

महान आध्यात्मिक कवि पूनथानम, गुरुवायुर मंजुला और भक्त मीरा वायु या आकाश समाधि के

उदाहरण हैं।

जीवेलसमाधि जैसी कोई चीज़ नहीं होती; किसी को भी जीवित रहते हुए 'समाधि में नहीं रखा जाता'।

'समाधि में रखा जाना' तब होता है जब आत्मा भौतिक शरीर से निकल जाती है। हिंदू होने के नाते, हमें मृत्यु, आत्महत्या और समाधि में बैठने के बीच अंतर करने में सक्षम होना चाहिए।

प्रश्न-86) आने वाला युग परिवर्तन, युग धर्म, स्वर्ण युग क्या है?

जवाब :- युग परिवर्तन पूरी धरती का बिना किसी सीमा के एक देश में बदलना है, जो महाउपनिषद

(6.71) के "वसुधैव कुटुम्बकम्" के सपने को पूरा करता है।

एक इंसान तब सही मायने में इंसान बनता है जब वह अपने अंदर की आत्मा को पहचानता है। युग धर्म हमें सिखाता है कि दुनिया की सभी हलचलों को उस आत्मा-केंद्रित नज़रिए से देखें। हम पहले ही जान चुके हैं कि कोई इंसान तभी इंसान बनता है जब उसे एहसास होता है कि उसके अंदर एक आत्मा है।

अब, युग धर्म हमें सिखाता है कि इस दुनिया की सभी हलचलों को उस आत्मा के नज़रिए से देखें, जो उस आत्मा पर केंद्रित हो।

हम पहले ही इंसान, जानवर, और इंसान भगवान को देख चुके हैं। सोचिए एक ऐसा समय जब सिर्फ़ इंसान और महात्मा (महान इंसान भगवान) ही होते थे—वह स्वर्ण युग होगा। हम ऐसे समय को स्वर्ण युग कह सकते हैं।

प्रश्न-87) जारी रहेगा.....

(यह प्रकाशन (पुस्तक-1, संस्करण 1.85.6) निरंतर संशोधनों और अद्यतनों के अधीन है। कृपया सदस्य लॉगिन के माध्यम से हमारी वेबसाइट के माध्यम से नवीनतम संस्करण तक पहुंचें)

ॐ सह नाववतु ।
सह नौ भुनक्तु ।
सह वीर्यं करवावहै ।
तेजस्वि नावधीतमस्तु ।
मा विद्विषावहै ।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

ॐ ब्रह्मार्पणमस्तुॐ तत् सत्